सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौविजयेते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀

पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

सीताराम * सीताराम * सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौविजयते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

* द्वादश वाटिका विहार *

पाद टिप्पणी संयोजक-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम * सीताराम * सीताराम

❀ श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

प्रस्तुत ग्रन्थ श्री द्वादश वाटिका विहार पर विशिष्ट महापुरुषों को सम्मतियाँ

श्री गुरुधौली (कानपुर) रसिक पीठाधिपति ब्रह्मर्षि कल्प रससिद्ध रसिकाचार्य्य अनन्त श्रीस्वामी सियाराम शरणजी महाराज 'मधुर मंजरी' का

—: सम्मति :—

प्रस्तुत ग्रन्थरत्न श्रीद्वादश वाटिका विहार भावना-सिद्ध सन्त, रसिक प्रवर, श्रीकोठे वाले (स्वामी श्रीरामकिशोर शरणजी) महाराज की भावनासिद्ध वाणी है। इस अनुपम ग्रन्थरत्न में श्री महाराज ने द्वादश बनों की रचना और उनमें श्रीप्रियाप्रियतम जू के बिहार का जैसा चित्रण किया है, वैसे दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है।

यह ग्रन्थ भाव देश के लिये अघट पाथेय है। भावुक साधकों के लिये मानसी भावना वृद्धि की इसमें प्रचुर सहाय्य सामग्री भरी गई है। इस ग्रन्थरत्न का पठन, पाठन और मनन भावुकों के लिये अनुपम लाभप्रद सिद्ध होगा।

प्रकाशक ने इस गुप्त रत्न का प्रकाशन कर भावुक समाज का बड़ा ही उपकार किया है। श्रीरसमोद कुंज के युगल नाम जप एवं अष्टयामीय भावना परायण सन्त श्रीशत्रुहन शरणजी महाराज कृत विलक्षण टिप्पणी से ग्रन्थ पाठ में सौष्ठव और स्वारस्य की वृद्धि हुई है। प्रकाशक और विशेष कर टिप्पणी कार तथा संकलन कर्ता श्री विरौली महाराज का भावुक-समाज अनुगृहीत रहेगा। शृङ्गार भावना सिद्ध सन्त की वाणी सदा गोपनीय और संरक्षणीय है।

गुरुधौली
चैत्र सं० २०२६

परमरसिकाचार्य वर्य स्वामी श्रीयुगला-
नन्यशरण वंशोद्भवस्वामी श्रीसीता-
कान्त शरण चरणानुजीवी
श्रीसियारामशरण 'मधुरी'

❀ ❀ ❀

श्री युगल माधुरी कुंज, नजरबाग, श्री अयोध्या जी के रसिकपीठाधिपति श्रीस्वामी मैथिली शरणजी महाराज भक्तमाली की सम्मति:—

सहर्ष इस रसमोद लताजी के द्वादश वन विहार को अवलोकन कर हृदय में नई नई तरङ्गे उठने लगीं। मन अपने स्वरूपानुरूप रंग में निमग्न हो गया।

श्रीरसमोदलता जीने अनेक जीवों का कल्याण करके अपनी कृपा से उनको प्रिया प्रीतम जू के सामीप्य तक पहुँचा

दिया। अब ये उनके रासायनिक संकलन महानिधि को श्री-नृपनन्दनशरणजी (अनुराग लता), जो आपही के अनन्य आश्रित और प्रिय शरणागत हैं, आज भी श्रीमहाराजजी का गद्दी और श्रीसरकार स्वामिनी जी की सेवा संरक्षण कर रहे हैं, इसके प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

इस ग्रन्थ को अधिकारी हो भोग कर सकते हैं। श्रीअनन्य कृपापात्र शृङ्गार रस रूप श्रीशत्रुहनशरणजी इसके सम्पादक प्रधान हैं। इनने विलक्षण टिप्पणी लिखकर ग्रन्थ को अलंकृत किया है।

शुभेच्छुक—

श्री मैथिलीशरण, भक्तमाली (सौन्दर्य)

* * *

समस्त तुलसी साहित्य के सुप्रसिद्ध टीकाकार एवं श्री-मंजुरसाष्टयाम तथा मंजुरस पदावली के प्रणेता रसतत्व मर्मज्ञ पं० श्रीकान्त शरणजी महाराज की सम्मतिः—

यह ग्रन्थ रत्न श्री 'द्वादश वाटिका विहार' शृङ्गार रस के भावनासिद्ध महान सन्त श्रीरामकिशोरशरणजी (कोठेवाले) महाराज का प्रणीत प्रकाशित हुआ है। यह परम सिद्ध महात्मा की वाणी है। आपने परम त्याग बृत्ति से आजन्म भावनात्मक साधना की है। अतः आप की वाणी में भारी प्रभाव है। मैंने आपकी निष्ठा देखी है। सत्संग से लाभ उठाये हैं।

आपकी निष्ठा आजन्म एकरस निबही है। अतः आपके शब्दों का सग्रह कर और उनको रसिकाचार्यों के उदाहरणों से सुशोभित कर प्रकाशन कराने में उनके परम कृपापात्र शिष्य श्रीशत्रुहनशरण ने भी बहुत अच्छे प्रयास किये हैं। अतः पाठक उनके अनुगृहीत रहेंगे।

यह श्रृङ्गार रस की रहस्यात्म वाणी सदा गोपनीय एव संरक्षणीय है।

दि २०-३-७२ ई०

विनीतः—
श्रीकान्तशरण, सद्गुरुकुटी
गोलाघाट, श्रीअयोध्याजी।

❀ ❀ ❀

श्रीजानकी चरितामृत के रचयिता, श्रीमिथिलाधाम निष्ठ, ऐकान्तिक रहस्य चिन्तक, स्वनामधन्य, श्रीरामसनेही दासजी महाराज की लिखित सम्मतिः—

जयतु जयतु शश्वन्मैथिली प्रेममूर्ति,
निरुपम गुण रूपा न्यस्तकान्तांसहस्ता।
अगति गतिरुदारा सच्चिदानन्द दात्री,
परम सरल चित्ता सुस्मिता नः शरण्या॥

विहाराख्येहि ग्रन्थेऽस्मिन् वाटिका द्वादशस्य च।
भावचित्रणमालोक्य चकितं मे भृशं मनः॥ १॥
शृङ्गार भावना सिद्धिरीदृशी यस्य दृश्यते।
नमामि शतशः पाद पङ्कजे तन्महात्मनः॥ २॥

महायोगी तपोमूर्ति हंस वृत्तिरतन्द्रितः ।
युग्म ध्यान विलीनात्मा भजतां स भवेद्गतिः ॥ ३ ॥
नाम सङ्कीर्त्तने जिह्वा ध्यानेसक्तं हि यन्मनः ।
अलोल नियमो योऽसौ भावसिद्धि ददातु नः ॥ ४ ॥
श्रीमद्रामकिशोरादेः शरणान्तस्य सद्गुरोः ।
ग्रन्थोऽयं पठतां नित्यं भूयाद्भाव प्रसिद्धये ॥ ५ ॥
अप्रतिमं धनं सेव्यं रसराजावलम्बिभिः ।
ग्रन्थ रूपेण सम्प्राप्तं श्र किशोर्य्याः प्रसादतः ॥ ६ ॥
ग्रन्थ कर्त्तुरिदं हार्द भावनासक्त चेतसः ।
मानसी भावना सिद्धौ सुमाहात्म्य प्रदं महत् ॥ ७ ॥
भाव स्वारस्य दायिन्या टिप्पण्या चानुरूपया ।
सह सम्पादितो ग्रन्थो येनायं तं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥
शुचि द्रव्येण यस्यायमगाद् ग्रन्थः प्रकाशताम् ।
धन्यवादाह एवासौ रसिकानां प्रसादभाक् ॥ ९ ॥

अर्थात् इस प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमहाराज जी द्वारा किये हुये द्वादश वाटिकाओं के विहार चित्रण को अवलोकन कर मेरा मन अत्यन्त चकित हो रहा है ।

जिन कोठे वाले महात्मा श्री महाराजजी के शृङ्गारभाव की सिद्धि, इस प्रकार आश्चर्य रूपा दिखाई दे रही है, उनके श्रीचरण कमलों में मैं शतशः दण्डवत् करता हूँ ।

जिनका हृदय श्रीयुगल सरकार से सदैव योग को ही प्राप्त रहा, कभी पृथक् हुआ ही नहीं, जो तपस्या की मूर्ति, हंस

के समान सारग्रहण शील, आलस्य रहित श्रीयुगल सरकार के ध्यान में सदा निमग्न रहे, वे गुरुदेव भक्तों को अपना आश्रय प्रदान करने की कृपा करें।

जिनकी जिह्वा सदा श्रीयुगल सरकार के नाम जप में और जिनका मन सदैव युगल स्वरूप के ध्यान में आसक्त बना रहा तथा जो अपने नियम में सदैव अडिग रहे, वे श्रीगुरुदेव भगवान् हम उपासक भक्तों को अष्टयाम सेवा की सिद्धि प्रदान करें। श्रीसम्पन्न सद्गुरु श्रीरामकिशोर शरणजी महाराज का यह द्वादश वाटिका विहार ग्रन्थ-रत्न नित्य पाठ करने वालों को भावना की पूर्ण सिद्धि प्रदान करें।

श्रीकिशोरीजी की कृपा से श्रृङ्गार भावावलम्बियों के लिये ग्रन्थ रूप में प्राप्त यह धन सदा सेवनीय है, क्योंकि यह ग्रन्थकर्त्ता श्रीमहाराजजी के हृदय का अनुपम धन, मानसी भावना सिद्धि के लिये महान सहायक होगा।

श्रीकोठेवाले महाराज अनन्त श्रीरसिक चूड़ामणि श्री-रामकिशोर शरणजी महाराज की समाधिभाषा में सुन्दर रस प्रदान करने वाली अनुरूप टिप्पणी के सहित, जिन्होंने इस ग्रन्थको संपादित कियाहै, श्रीमिथिलाधामीय विरौली महाराज श्रीशत्रुहन शरणजी महाराज को दण्डवत् करता हूँ।

जिनके पवित्र धन द्वारा यह ग्रन्थ रत्न प्रकाशित हुआ है, वे बड़भागी सज्जन, रसिक वैष्णव सन्तों तथा उपासकों के प्रसन्नताभाजन तथा धन्यवाद के योग्य हैं। विशेष क्या कहूँ?

सभी सन्त तथा उपासकों का कृपाभिलाषी:-

चैत्र शु० तृतीया,
सं० २०२९ वि० | (श्री) रामसनेहीदास "लता"
१६, छावनी, साकेत।

सम्पादकीय-वक्तव्य

श्रीयुगल बिहार भावना रसास्वादी सज्जनों के वन्द्य करकंजों मे अपने श्रीसद्गुरुदेव जू के दिव्य मानस से विनिर्गत सुधाप्रवाह रूप यह श्रीद्वादश वाटिका विहार नामक प्रबंध समर्पित करते हुये हमें बड़ा ही हर्ष हो रहा है।

ग्रन्थ की पाद टिप्पणी में इस तुच्छ लेखनी द्वारा श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, श्रीवृहत्कौशल खंड, श्रीशिव संहिता, श्रीहनुमत्संहिता, श्रीवशिष्ट संहिता, श्रीसत्योपाख्यान रामायण श्रीअमर रामायण, श्रीमाधुर्य केलि कादम्बिनी, श्रीश्रृङ्गाररहस्य रत्न मंजरी, श्रीरुद्रयामल, श्रीमदग्रस्वामीजी कृत संस्कृत अष्टपाय, वात्स्यायन सूत्र, श्रीयुगल विनोद विलास श्रीसिया सनेह सुधानिधि, श्रीयुगल विहारिणीजीकृत दोहावली, श्री-आन्दोल रहस्य दीपिका, श्रीअवध सागर, श्रीयुचल विभूत प्रकाशिका, श्रीअशोक वाटिका विलास, श्रीअवध सागर, श्रीरसमालिका, नित्यरास, श्रीकृपानिवास स्वामी कृत वर्षोत्सव तथा श्रीभावनामृत कादम्बिनी आदि ग्रन्थों के उद्धरण जुटा कर बन विहार सामग्री को एकत्र पुंजीभूत किया गया है।

ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग में पाँच अध्याय रसिक रत्न श्रीविदेहजी शरणजी महाराज प्रणीत श्रीअशोक वाटिका विलास से उद्धृत किये गये हैं। उपयुक्त आर्ष एवं अर्वाचीन स्तुत्य ग्रन्थों के मूल रचयिता के पादपद्मों में नतमस्तक होकर हम कृतज्ञता एवं आभार ज्ञापन कर रहे हैं।

श्रीरसमोदकुञ्ज, श्रीअयोध्याजी
श्रीरामनवमी
सं०२०२६ वि०

श्रीमती रसमोदलता पादपद्माश्रित—
शत्रुहन शरण

❀ श्रीप्रमोदारण्य बिहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

❀ सर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

❀ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः ❀

भूमिका

यस्यां भाति प्रमोद काननवरं रामस्य लीलास्पदं,
यत्र श्री सरिताम्बरा च सरयू रत्नाचलः शोभते ।
ध्येया ब्रह्म महेशविष्णु मुनिभि र्ह्यानन्ददा सर्वदा,
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ।१।

प्रमुदवनविशाले चम्पकाशोक ताले
तरुण तरु तमाले पारिजाते रसाले ।
सरयुसरि सुकूले शोभिते सानुकूले
विहर सुरस पुञ्जे रासकुञ्जे मनो मे ।२।

श्लोकार्थः—नन्दन चित्ररथादि देव बनों को अपनी शोभा सम्पति से विनिन्दित करने वाले विपिन शिरोमणि श्री-प्रमोद बन जो श्री जानकी रमण के मधुर लीला स्थल हैं, वह श्री अयोध्या जी को विभूषित कर रहे हैं। सभी नदियों की अधीश्वरी श्री सरयू एवं श्री मणि पर्वत यहाँ की शोभा को विवर्द्धित करने वाले हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तथा मुनिवर श्री अवध का निरन्तर ध्यान करते रहते हैं। शरीर से या मन से जो यहाँ बास करता है, उसे आनन्द सिन्धु में डुबोये रहती हैं। ऐसी ब्रह्म रूपा परात्पर धाम श्री अयोध्या विजय को प्राप्त हों ॥ १ ॥

हे मेरे रसग्राही मन, तुम्हें मैं दिव्य रस पान करने को स्थली बनाता हूँ। वहाँ रस पान लालसा से विहरते रहो। कभी तो तुम सुविशाल प्रमोद वन में रमना, कभी चम्पक और अशोक वनोंके हृदय में स्थित सरोवरों में श्रीलड़ैतीलाल जू की दिव्य क्रीड़ाएँ अवलोकन करना। कभी तरुण वृक्षों से सम्पन्न तमाल वनमें, कभी पारिजात वनमें, कभी रसाल वन में रमना। कभी श्रीसरयू पुलिन पर स्थित श्रीयुगल मनभावन जू के मनोनुकूल साज समाज से शोभायमान माधुर्यानन्द विवर्द्धक रस समूह से परिपूर्ण रासकुंज में विहरना ॥ २ ॥

❀ रागिनी सिंधुरा ❀

जय जय श्री वन प्रमोद रसिकन सुखदाई।
सरजु तीर दिव्य भूमि, बेलि लता रही झूमि,
फूलन प्रति भँवरा अति, गुञ्जत मन भाई।
कुञ्ज कुञ्ज प्रति अनूप, बिलसत तहँ जुगल रूप,
जनकलली रघुनन्दन, मधुर मधुरताई ॥
चन्द्रकला बिमलादिक, नागरी नवीनी अति,
मधुर जंत्र लीने कोइ, सप्त स्वर जमाई।
गावहिं सब दिव्यतान, सुनहिंलाल अतिसुजान
राग सरस भींजि मंद, मन्द मुसुकाई ॥

'अग्रअली' विपिनराज, यह सुख तहँ नित समाज
जानत कोइ रसिक भेद, जिन यह रस पाई ॥

❀ राग गौरी ❀

हमरे वन प्रमोद रस दानी ।
बिविध कुञ्ज द्रुम लता सुहावन, निरखत छवि मन मानी॥
जोग ग्यान अरु नेम दान ब्रत, इन सब की न प्रधानी ।
प्रेम लच्छना भक्ति सिरोमनि, चहूँ ओर सरसानी ॥
सरजू सोमविटप रतनागिरि, छवि नहिं जात बखानी ॥
'जुगल प्रिया' यह रस विलास पथ, संत कृपा ते जानी ॥

श्रीअयोध्या प्रमोदारण्य विहारी जानकी जीवन जू स्वयं निज दिव्य विहार स्थली अयोध्या का रूप धारण किये हुये हैं। धामी तथा धाम में अभेद है। श्रीवेद व्यास जी के प्रश्न पर जगद्गुरु भगवान् शंकर जी ने पुराण संहिता अध्याय ३३ श्लोक २८, २६, ३० में यही बात बताई है।

"आनन्दः परमं ब्रह्म स एव हि रसः स्मृतः ।
... .

नैकाकी रमते यस्माल्लीलाधिष्ठान सिद्धये ।
अनादिसिद्ध एवायं धाम रूपेण वै रसः ॥
नद्य् दन्वन्वनोद्यान रूपेणैव विजृम्भितः ।
वापी सरः सरिन्नाथ सरित्पल्वल दीर्घिकाः ॥"

अर्थात् आनन्दकन्द परमब्रह्म को ही रस कहा गया है। उस रस रूप पर ब्रह्म केलिये बिना विहार लीला की अधारभूता स्थली के रमण क्रिया नहीं बनती थी। अतः वही रसमय परम ब्रह्म अनादि सिद्ध धाम बन गया, जिस धामकी नदी, वन, उपवन, वापी, सर, सिन्धु, पल्वल, दीर्धिका आदि सभी साहित्य उसी रसमय ब्रह्म के ही रूपान्तर हैं।

उपर्युक्त संहिता प्रमाण के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रतिपाद्य द्वादश उपवन भी उन्हीं रस रूप परात्परतम् ब्रह्म श्री-जानकी विहारी जू के प्रतिरूप हैं। ऐसा जानकर इन बनों के स्वरूप वर्णन के सिलसिले में रहस्य ग्रन्थों में, इनके जो कुछ अलौकिक दिव्य वैभव कहे गये हैं, उन्हें थोड़ा ही समझना चाहिये। सच तो यह है कि इन ब्रह्म रूप बनों के स्वरूप अनिर्वचनीय हैं, भावनागम्य हैं। कहने सुनने में जो कुछ आता है, वह आभास मात्र है।

प्रतिपाद्य द्वादश बनों का सामूहिक नाम श्रीप्रमोद वन है। श्री अपराजिता विहारिणी विहारी जू के दिव्य विहार में द्रुम-लता शैल सरोवर, खग मृग आदि वन वैभव केवल उद्दीपन विभाव मात्र ही नहीं हैं, प्रत्युत् युगल रसिक चूड़ामणि जू के बिनोद बिलास के निमित्त सर्वाधिक उपयुक्त क्रीड़ा स्थली भी यही हैं। श्रीप्रमोदारण्य अपने नामार्थ को चरितार्थ करते हुये रसिकजन जीवनधन युगल ललन जू को परममोद सुधा में परिप्लावित किये रहते हैं।

श्री वशिष्ट संहिता के नित्यधाम निरूपण विभाग में श्रीप्रमोद वन का बड़ा ही हृदय ग्राही वर्णन किया गया है। सेठ छोटेलाल पुस्तक विक्रेता, श्रृङ्गारहाट श्रीअयोध्याजी की दूकान में प्राप्य उपासना त्रय सिद्धान्त नामक ग्रन्थ के पृ० १५४ से पृ० १६० तक लगभग ७२ श्लोकों में यह वर्णन अवश्य पठनीय है। यह प्रसंग और भी कई जगह छपेहैं। इस छोटी सी भूमिका में उस विस्तृत प्रसंग की गुंजाइश नहीं है। श्रीवशिष्ठ संहिता के मत से द्वादश उपवन संवलित श्री प्रमोद वन की स्थिति श्री-अयोध्या नगर के बाहर श्री सरयू जी के उस पार बताई गई है। परन्तु हमारे पूज्यपाद प्रस्तुत पुस्तक प्रणेता, इनकी स्थिति श्री जानकीरमण जू के अन्तःपुर श्रीअवधपुरी के हृदयदेश में निर्देश करते हैं। दोनों मतों का समन्वय श्रीप्रमोद वन को द्विविध स्थिति मानने से हो जाती है। बात भी यही है।

रघुकुल गुरु श्रीवशिष्ठजी महाराज पंचायती बाहरी प्रमोद वन का वर्णन करते हैं और उतने ही बन, उसी नमूने के परन्तु उनसे भी परम मधुर मनोहर श्रीजानकी बिहारी जू के प्रमदावन के अन्तर्गत भी हैं। हमारे ग्रन्थकार जू का प्रतिपाद्य विषय महली प्रमोदारण्य हैं।

प्रस्तुत प्रवन्ध में जो श्रीप्रमोद वन के द्वादश उपवनों का वर्णन किया गया है, वह श्रीवशिष्ट संहिता के मत पर आधारित है। श्रीवशिष्ट संहिता में इन्हीं बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि श्रीनारदपंच रात्रान्तर्गत

हमारी श्रीसीताराम उपासना का यह परम प्रामाणिक आधार ग्रन्थ आज अप्राप्य सा हो रहा है। इस सुविशाल ग्रन्थ के जहाँ तहाँ प्रकाशित खंडांश पर ही हमें सन्तोष करना पड़ता है। यदि कोई अन्वेषी कहीं से पता लगा कर इन्हें श्रीसीतारामोपासना के केन्द्र स्थल श्री अवध के रसिक समाज के बीच प्रगट करें, तो उनका सम्पूर्ण समाज आभार मानेगा।

हाँ, तो श्रीवशिष्ट संहिता इन बनों के नाम इस प्रकार गिनती है—

"श्री शृङ्गार बनं भान्तं विहार वन मद्भुतम् ।
तमालं च रसालं च चम्पकं चन्दनं तथा ॥
पारिजात वनं दिव्य मशोकवन मुत्तमम् ।
विचित्राख्यं वनं कान्तं कदम्बवनमेव च ॥
तथाऽनंग वनं रम्यं वनं श्रीनागकेशरम् ।
द्वादशैतानि नामानि वनानां कथितानि वै ॥

अर्थ स्पष्ट है। इसीसे लेख का कलेवर अनावश्यक नहीं बढ़ाया गया।

श्रीसत्योपाख्यान रामायण अध्याय २० में भी बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं। यथा—

पश्यध्वं देवताः सर्वे वनं चाशोक संज्ञितम् ।
संतानकवनं चात्र मंदारवन मेव च ॥
वनं च पारिजातानां चन्दनानां तथैव च ।
चम्पकानां वनं दिव्यं यत्र यान्ति न षटपदाः ॥

वनं रमणकं देवा रमणं यत्र वै हरेः ।
वनं प्रमोदकं चापि प्रमोदं यत्र भूरि च ॥
आम्राणां च वनं दिव्यं तथैव पनसैः कृतम् ।
कदम्बानां वनं दीर्घं केसरैरूपशोभितम् ॥
तमालानां वनं दिव्यं वल्लीभिः परिवेष्टितम् ।
वनान्येतानि रम्याणि संख्या तानि च द्वादश॥

इनमें चार पाँच नाम बदले हुये हैं। आम्र वन तो रसाल वन का नामान्तर है। तथा कदम्ब वनमें जो 'केसरैरुपशोभितम्' बता रहे हैं, सो नागकेसर वन तो पृथक् है। परन्तु दोनों के अति समीप होने से उच्च विमानारूढ़ विधाता को एक ही दीख पड़ता है। इसमें रमणक बन जो गिना रहे हैं, वह अनंग वन का ही दूसरा नाम है। पनस बन तो रसाल बन का ही उपभाग है। संतानक एवं मंदार बन भी पारिजात वन के उप-भाग हैं। श्रीवशिष्ट जी सूर्यवंश के पुरोहित श्रीअवध धाम के मर्मज्ञ हैं। इन्हीं के बचन प्रामाणिक मान्य हैं।

श्रीरुद्रयामलोक्त श्रीअयोध्या माहात्म्य अध्याय ३० के श्लोक ४८, ४६, ५० में जो बारह बनों के नाम गिनाये गये हैं, वे प्रायः सभी श्रीवशिष्ट संहिता से मिलते हैं। प्रेस की असाव-धानो से विचित्राख्य के बदले प्रमोदाख्य तथा अनंग के बदले अनंत छप गया है।

श्रीसिद्धान्त तत्व दीपिका के एकादश प्रकाश में बारह बनों

के नाम जो गिनाये हैं, सो श्री वशिष्ट संहिता का ही छायानुवाद है। श्री अवध सागर में वनों के और उपवनों के नाम इस प्रकार गिनाये हैं :-

*** छप्पय ***

वन अशोक संतानिक रमणक वन प्रमोदवन।
पारिजात मंदार हरित चन्दन केतकि वन ॥
आम्र कदम्ब तमाल वकुल ये द्वादश वन।
वृन्दा जूही लवँग मालती कुन्द कदलि वन ॥
वासन्ती मल्ली वर लता चम्पा केसरि सेवती।
एला ये उपवन कहे बिहरत जहँ नित दम्पती ॥

उपर्युक्त उपवन श्रीअशोक वन के प्रथमावरण में चारो ओर से स्थित हैं। यह मत श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी का है। श्रीअवध के सख्य रसावेशी दिव्य अनुभव सम्पन्न सिद्ध संत रत्न श्रीशील मणिजी महाराज अपने अष्टयाम मानसी सेवा नामक ग्रन्थ में कतिपय अभिनव वनों के नाम गिना रहे हैं। यथा—विनोद वन, रंगीन वन, उमंग वन, लवंग वन, मनोहर वन, सनेह वन, रसगेह वन, सुखाकर वन, सघन वन, अनुराग वन, विश्वास वन, पीयूष वन, मयूष वन, मयूर वन, मयंक वन, सुखमा वन, रसोल्लासी वन और मोह वन।

सच पूछिये तो श्रीअवधके विहारदेश में अनन्तवन उपवन हैं। जिन भावुक महानुभावों की दिव्य दृष्टि जहाँ पहुँची, वहीं लुभाकर रह गई और उसी स्थलका आपने वर्णन किया। अतः सभी नाम सही हैं। प्रारंभक साधकों को श्रीवशिष्ट संहितोक्त प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित द्वादश वनों का ही ध्यान कर्त्तव्य है।

श्रीबृहत्कौशल खंड, वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, नारद पंचरात्र की विविध संहिताओं में महर्षियों के आप्त-बचनों एवं आधुनिक रसिकाचार्यों की महाबाणियों से श्री-अयोध्या विहारी के माधुर्यलीला प्रतिपादक रस साहित्य पर्याप्त समृद्धमान् हैं। ऐसे रस साहित्य में यहाँ के विविध बिहार बनों के मनोरम वर्णन भी कम नहीं हैं। परन्तु है जहाँ तहाँ बिखरे! उन सबों का सारांश प्रस्तुत ग्रन्थ में एकत्रित किया गया है। इसके द्वारा रहस्य जिज्ञासुओं के लिये यहाँ के दिव्य वन वैभव विषयक अनुसंधान केलिये एक परिष्कृत पथ प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत गन्थ के मूल बचन हमारे प्रातःस्मरणीय श्रीगुरुदेव चरण का कृपा प्रसादहै। यद्यपि कुशल कवियों की भाँति काव्य सौष्टव का इस रचना में प्राचुर्य नहीं हैं, पर है समाधि भाषा में लिखित दिव्यदेश का सच्चा सन्देश। इसे पढ़ कर सहृदय रसज्ञ भावुकों का हृदय ही नहीं, प्रत्युत् रोम रोम प्रफुल्लित हो उठेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। रसिक समाज के लिये यह अनुत्तम वन विषयक भाव सामग्री देकर आपने समाज का महान उपकार किया है।

मूल बचनों के नीचे पाद टिप्पणी जोड़ी हुई है, इन पंक्तियों के तुच्छ लेखक के द्वारा। पाद टिप्पणी में जो बनों के आवरणों का बिबरण बढ़ाया गया है, उसकी प्रेरणा मूलग्रन्थ कर्त्ता जू की सूत्रात्मिका मौलिक महावाणी से ही मिली है।

श्रीग्रन्थकर्त्ता जू ने श्रीअशोक बन के विविध आवरणों का तो विस्तृत वर्णन किया है, पर और बनों में आबरणों की संख्या मात्र गिनाते गये हैं। प्रत्येक बन में द्रुम कुंज, लताकुंज पुष्प कुंज आदि वताकर, इनमें भी श्रीअशोक बन की आवरण पद्धति से ही आबरण क्रम सजा लेने का निर्देश कर रहे हैं। अतः हमने उसी संकेत को चरितार्थ किया है।

जैसे श्रीअशोक वन में बृहत्सरोवर के मध्य पंचावरण विशिष्ट निज निवास महल पूज्य श्रीग्रन्थकर्त्ता जू ने वर्णन किया है, उसी भाँति प्रत्येक वन के मध्य भी सरोवर अन्तर्गत कुछ न कुछ विशिष्ट रचना होनी चाहिये। उस रचना का निर्देश रसिक मणि श्रीविदेहजा शरणजी महाराज ने स्वरचित श्री युगल विभूति प्रकाशिका के पृ० ७२ से पृ० ७५ तक बड़े विस्तार से किया है। पाठक उस प्रसंग को अवश्य पढ़ें। यहाँ स्थानाभाव के कारण उस प्रसंग की कुछेक ही पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं।

'द्वादश उपवन छवि अतिभारी। कहँ कछुक समुझव विस्तारी
... ...

प्रति उपवन यक एक सरोवर। मध्य भाग में सोहत सुन्दर॥
मनि सोपान घाट चहुँ ओरी। वरनि न जाहि लेत चितचोरी
जल परिपूरन सुधा लजावन। सीतल मधुर स्वच्छ मनभावन
चहुँ घाटन पर वृक्ष मनोहर। लता लपटि जल परसत सुन्दर
कमल कुमुद फूले रँगचारी। जल खग भँवर सुधुनि सुखकारी
जलचर जाति अनेकन रंगा। प्रीति परस्पर विचरत संगा॥
चंदन के नौका बहुतेरे। नव रंग मनि के सुभग चितेरे॥
लम्बे चौड़े गोल सुहाये। खंभ वितान फरस छवि छाये॥
अलिन सहित चढ़ि प्रीतम प्यारी। खेलहिं तहाँ सुनाव नवारी
तिन्हसर मध्यसुभूमि विशाला। तामधि यकरगिरि सुरसाला
तापर आवन जान के हेतू। सर मधि चहुँदिसि बाँधे सेतू॥
... ...

गिरि पर चढ़न हेतु सोपाना। चहुँदिसि बने सोह रंग नाना

सिला शृङ्ग बहु कंदर खोहै। विविध जाति मृग पच्छी सोहै
अति सुन्दरबहु झरनाझरहीं।नालिन्ह होइ जलसर बिचभरहीं
लता गुल्म तरु जाति अनेका। चित्र विचित्र एक ते एका ॥
प्रतिगिरिपर सोभित समधरनी।बरनि न जाय सुभग मनहरनी
चित्र विचित्र पत्र फल फूला। साखा डारि प्रकांड समूला॥

तिन्ह वृच्छन के मूल में, वेदी सुभग रसाल।
अरु यक मंडप तासुपर, रचना विसद विसाल॥
ध्वजा पताका कलस बहु, वंदन फरस वितान।
द्वार हजारन्ह खंभ बहु, कुञ्ज बने छबिमान ॥

कुञ्ज २ प्रति पलँग बिछाये। मध्य भाग सुख सौज सजाये ॥
मंडपमधि यक२सिंहासन। सहज कमलदल चहुँदिसिआसन
मध्य करनिका सोह मनोहर। तापर सेज बिछी बहु सुन्दर ॥
ता पर तकिया गेंद सुहावन। नील पीत कोमल मन भावन
अलिन सहित सियपिय तहँ रमहीं।
कोटिन रति मनमथ छवि हरहीं ॥
यहि विधि द्वादस उपवन गाये।··· ···· ···॥

हमने पाद टिप्पणी में जो प्रत्येक वन के मध्य में सरोवर तथा उनके मध्य में क्रीड़ा शैल आदि का वर्णन किया है, वह उपर्युक्त उद्धरण का ही सारांश है।

पाद टिप्पणी में आर्ष बचन एवं रसिकाचार्यों की महावाणियों का जहां तहाँ उद्धरण दिये गये हैं, वे मूल ग्रन्थ के भावों को सुबोध बनाने में सहायक होंगे। साथ-साथ मूल ग्रन्थ के निर्दिष्ट भावों के आप्त प्रमाण भी सिद्ध होंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठक जो कुछ उत्तमत्ता समझें, उसका श्रेय मूल ग्रन्थ के लेखक एवं उद्धृत महावाणियों के रचयिता महानुभावों को दें तथा जहाँ जहाँ दोष त्रुटियाँ परिलक्षित हों, उनका उत्तरदायी इस अल्पज्ञ अबोध अनधिकार चेष्टा की ढिठाई करने वाली तुच्छ लेखनी को जानें।

अन्त में हम परम गुरु निष्ठ श्रीनृपनन्दन शरणजी को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जिनके अथक परिश्रम के फल स्वरूप यह ग्रन्थ प्रकाश में आ रहा है।

जिनके गुप्त द्रव्यदान से प्रस्तुत ग्रन्थ रत्न का प्रकाशन कार्य सुसम्पादित हुआ है, उनको हम धन्यवाद क्या दें? उनका तो—

"गुरुवर कीरति विमल पताका।
दंड समान भयउ जस जाका॥"

इस ग्रन्थ को अनधिकारी के हाथ में न जानें दें। आप पाठकों के लिये हमारी मंगल कामना है—

"पढ़हिं सुनहिं अनुमोदन करहीं।
भववारिधि गोपद इव तरहीं॥"

श्री रसमोद कुञ्ज,
श्रीअयोध्याजी,
श्रीराम नवमी
सं० २०२९ वि०

श्रीमती रसमोदलता चरणानुजीवी
विनीतः—
शत्रुहन शरण

श्री जानकी रमण जू का आह्निक विलास

(अष्टयाम मानसिक भावना)

❀ दोहा ❀

श्री सतगुरु सिंगार रस, राचन मोदागार ।
चरन कमल रज सीसधरि, वरनौं दिवस विहार ॥ १ ॥
'चन्द्रकला' अलि अवलिकी, गान वाद्य धुनिपाय।
जागे अनुरागे जुगल, सिय पिय मोद समाय ॥ २ ॥
नयन उनींदे लपपटे, वयन वदन पिय प्यारि ।
महल मध्य परजंक पर, बैठे गर भुज धारि ॥ ३ ॥
मंगल कुञ्ज अधीश्वरी, सखि 'मंगला' सुजानि ।
मंगलथार सँवारि करि, आरति करि हितदानि ॥ ४ ॥
कुञ्ज दंतधावनहि में, चौकी पर पधराय ।
सखी 'शान्तिशीला' दई, दतुअन ललन कराय ॥ ५ ॥
बल्लभ भोग पवाय कै, मंजन कुञ्जहि ल्याय ।
'मोद मंजनी' जू उबटि, मज्जन सविधि कराय ॥ ६ ॥
न्हाय ललन आये सहित, सखियन फागुन कुञ्ज ।
'रंग मालिनी' जू रची, फाग केलि रस पुञ्ज ॥ ७ ॥
पुनि शृङ्गार सुकुञ्ज में, 'रंभा' जू सनमानि ।
वृहत सिंगार सँवारेऊ, लालन को रुचि सानि ॥ ८ ॥
बहुरि कलेवा कुञ्ज में, 'ललित रोचना' आलि ।
बालभोग करवायऊ, हस्त वदन परछालि ॥ ९ ॥

सभा कुञ्ज कुंजेश्वरी, अली 'भावली' नाम।
नाच गान कौतुकन सुख, लालन दीन्ह ललाम ॥१०॥
अली 'सुधाहस्ता' बहुरि, भोजन कुञ्ज लिवाइ।
सखिन सहित दोउ लालको, भोजन तृप्ति कराइ।११।
दिन के शयन सुकुञ्ज में, आये रसिक सुजान।
'मदन मंजरी' तहँ रची, शयन मयन सुखदान ॥१२॥
'केलि कोविदा' केलि के, साज सकल सजवाय।
जहँ सन्ध्या लौं रमि रहे, ललन विविध सुखपाय।१३॥
बहुरि हिंडोल सुकुञ्ज की, 'विद्युल्लता' सयानि।
सावन सम झूलन सुरस, ललन दियो सनमानि॥१४॥
'रास वर्द्धिनी' रास की, सामा सकल सँवारि।
रास विलास रमायऊ, बहु विधि प्रीतम प्यारि ॥१५॥
ब्यारू की 'रुचि वर्द्धिनी' ब्यारू सुरुचि कराय।
शयन कुञ्ज सुख पुञ्ज में, ललन दई पहुँचाय ॥१६॥
यहिविधि युगल विहारजो, ध्यावै सुरुचि सजाय।
महल माधुरी में पगे, लहि 'रसमोद' अघाय ॥१७॥

सूची-पत्र

क्रमाङ्क	विषय—	पृष्ठाङ्क
१	मंगलाचरण एवं बाग विहार का उपक्रम	१
२	श्रीरसाल वन विहार	३
३	श्रीतमाल वन विहार	१५
४	श्रीचम्पक वन विहार	२३
५	श्रीचन्दन वन विहार	२८
६	श्रीपारिजात वन विहार	३५
७	श्रीविहार वन बिहार	४१
८	श्रीकदम्ब वन बिहार	४८
९	श्रीनाग केसर वन विहार	५६
१०	अनङ्ग वन विहार	५९
११	श्रीशृङ्गार वन विहार	६८
१२	श्रीविचित्र वन विहार	७८
१३	श्रीअशोक वाटिका विहार (स्वरूप वर्णन)	८६
१४	श्रीअशोक वाटिक प्रथमावरण	९४
१५	श्रीअशोक वाटिक द्वितीय कक्ष (षट ऋतु कुंज)	१०५
१६	ग्रीष्म अनुकूला कुंज	१०९
१७	ग्रीष्म स्वरूपा कुंज	१११
१८	पावस कुंजान्तर्गत श्रावण हिंडोल	११५
१९	शरद् कुंज विहार	११८
२०	हिम ऋतु कुंज विहार	१२३
२१	शिशिर कुंज विहार	१२५
२२	बसन्त कुंज विहार	१२७
२३	तृतीय कक्ष (द्रुम कुंजावरण)	१२९
२४	चतुर्थ कक्ष (लता कुंजावरण)	१३५

क्रमाङ्क विषय—	पृष्ठाङ्क
२५-पंचम कक्ष (फूल कुंजावरण)	१३८
२६-षष्टम कक्ष (कृत्रिम बृक्ष कुंजावरण)	१४४
२७-सप्तम कक्ष (चतुश्चौक आवरण)	१४७
२८-केलि कुंज स्वरूप वर्णन	१५०
२६-केलि कुंजान्तर्गत कौतुकागार विनोद	१५१
३०- „ „ चंग चौक	१५४
३१- „ „ गेन्द चौक	१५५
३२- „ „ योगिनी लीला	१५७
३३- „ „ प्रहेलिका बुझौअल	१६०
३४- „ „ कामशाल सुरति विहार	१६१
३५-रास चौक	१६५
३६-हिंडोल चौक	१७०
३७-फाग चौक	१७२
३८-जल विहार	१७५
३६-श्रीमहल में शयन सुख	१७७
४०-परिशिष्ट भाग-अष्टमकक्ष यूथेश्वरी आवरण	१७८
४१-नवमकक्ष, द्वादश उपवन आवरण	१८१
४२-दशवाँ कक्ष, द्वादश सेवा कुंज आवरण	१८४
४३-ग्यारहवाँ कक्ष षोडश महायूथेश्वरी आवरण	१८५
४४-बारहवाँ कक्ष शयनकुंज रासचत्वर	१८७

❀ श्रीआचार्य्यायै नमः ❀

❀ श्री प्रमोद वन विहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

❀ अथ द्वादश बाटिका विहार ❀

❀ दोहा मंगलाचरण ❀

श्री गुरु चरन सरोज रज, सिर धरि वारहि वार।
वरनों बाग विहार कछु, जथा बुद्धि अनुसार ॥१॥

बाग विहार का उपक्रम

❀ चौपाई ❀

एक समय सिय सह रघुनन्दन। बैठे कनकभवन मनि मंडन
चहुँदिसि मंडल सखिन विराजे। निजनिज सौज लियेसब राजे
छत्र चमरकर व्यजन सुधारी। सेवहिं सखिन सरस पिय प्यारी
कोउ कर पान दान पिक-दानी। अतरदान कोइ लिये सयानी
वीन सितार तार कर लोई। लिय मृदंग मुहचंग सुकोई ॥
इहिविधि सौज लिये सबठाढ़ी। लखि २ पिय प्यारी रति बाढ़ी

❀ दोहा ❀

पिय प्यारी मुख हेरि के, लोचन ताप सिराय।
अङ्ग अङ्ग उमगाय के, बोले मृदु मुसुकाय ॥२॥

सुनहु प्रिया मिथिलेशदुलारी। बाग विहार करन चलु प्यारी

तव अँग निरखि २ सुकुमारी । रंग उमंग बढ़्यो अति भारी
करहु सफल अभिलाष हमारी। तव अँग सिन्धु मीनमन चारी
सुनि पिय वचन उमगि सिय प्यारी। अंकमाल दै गलभुजडारी
चन्द्रकला सखि चतुर सयानी। जान लई सिय मनकी मानी
बोली चन्द्रकला मृदु वानी । सुनहु सखिन मम परम सयानी
निज निज यूथन करहु तयारी । बाग बिहार सुसौज सुधारी

चन्द्रकला के वचन सुनि, निज निज यूथ सम्हारि ।
बाग विहार सुसाज सजि, सजग भई सब नारि ॥३॥

तामदान रतनन सुठि सोहै । निरखत चन्द्र भानु दुति कोहै॥
सजि बैठे तापै पिय प्यारी । कोटिन रति मनमथ मद हारी
मनिन जड़ित सिविका बहुतेरी । तापै सोहै सखिन घनेरी॥
पहुँचे जाइ सुखद दोउ प्यारे । बाग रसाल कोट के द्वारे ॥
घहरि उठी दुन्दुभी सुहाई । पिय प्यारी आगमन जनाई ॥

पूजन सामा साजि के, *बागेश्वरी सुजान ।
सखिन संग स्वागत कियो, युगल ललन सुखदान॥४॥

---

* श्रीमान् रसालवन की बागेश्वरी जू का शुभ नाम श्रीमती रसिकमंजरी जू है ।

(श्रीरसमोद माधुरी पृ० १६, दोहा १४)

❀ अथ रसाल वन विहार ❀

❀ दोहा ❀

विधि विधान से पूजिकै, सखिन सहित सियनाथ।
लै आई निज कुंज में, सब विधि होय सनाथ ॥१॥
अर्घ्य पाद्य पुनि देइ कै, सिंहासन बैठाइ।
पुष्पमाल पहिराइ कै, भोजन विविध कराइ ॥२॥
पान मसालेदार पुनि, जुगल ललन मुखदेइ।
अतर सुघ्रान कराइ कै, करि आरति सुख लेइ ॥३॥
निज अनुचरियन साथ लै, नृत्य कियो गुन गाइ।
जुगल चन्दमुख निरखि कै, बहु विधि लेत बलाइ ॥४॥

❀ वार्त्ता ❀

अब श्रीरसालवन का स्वरूप वार्तिक में वर्णन करते हैं। श्री कनकभवन के दक्षिण दिशा वाले प्रधान फाटक से, जो सदर सड़क दक्षिण दिशा को गई है; उससे दाईं ओर को श्रीरसालवन है। चारो तरफ प्रथम कोट की दीवल नील-मणिमयी है। उस के ऊपर अनेक रंगों की मणियों से बेल बूटे चित्राम, जाल झरोखे इत्यादि बने हैं। उसमें चारों तरफ चार फाटक हैं।

इसके मध्य का अवकाश ❋ पंच कक्ष (आवरण) करके युक्त है। प्रथम कक्ष से लेकर अन्त के कक्ष तक, नाना आकार प्रकार के कुंज निकुंज, त्रिविध रंगों की मणियों से खचित बने हैं। किसी स्थान पर लता कुंज, किसी स्थान पर द्रुम कुंज, किसी स्थान पर फूल कुंज बने हैं। इस तरह से अनेकों कुंज निकुंज बने हैं। कुंजों के अभ्यन्तर किसी के मध्य में तड़ाग, किसी में बंगला, किसी में वेदिका है; जो त्रिकोण, षटकोण आदिक भेदों करके अनेकों तरह की बनी हैं।

❋ प्रथम आवरण वाले अन्तराल के मध्य में श्रीसरयू धारा (नहर) लहरा रही है। इनके उभय कूल विविध मणि विचित्रित सीढ़ियों से मढ़े हैं। धारा में रंग विरंग के कमल खिले हैं। हंसादि जल पक्षी तैर रहे हैं। कमलों पर भ्रमर मड़रा रहे हैं। फाटकों के सामने मणिमय पुल बन्धे हैं। जल विहार के उपयुक्त विविध आकार की चन्दन अथवा मणिमयी नौकाएँ धारा में थिरक रही हैं।

श्रीसरयू धारा के दोनों पार इसी आवरण में विविध जातियों के आम्र वृक्षों के अनेक द्रुम कुंज बने हैं। इन आम्र वृक्षों पर—

"कोकिलै भृङ्गराजैश्च नाना वर्णैश्च पक्षिभिः।
शोभितां शतशश्चित्रां चूतवृक्षावतंसकैः॥"

(श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण ७।४२।८)

अर्थात् आम्र डालियों के अग्र भाग पर कोकिल, भृङ्गराज आदि नाना रंग के पक्षी चित्र विचित्र रूप से सुशोभित रहते हैं।

किसी बंगले के मध्य में पर्यंक बिछे हैं। चारों तरफ से अनेकों तरह को कुर्सियाँ लगी हैं। पर्यंकों पर कहीं रेशमी जाजिमें बिछी हैं, कहीं फूलों को रचना की गई है। उसके ऊपर तकिया गलतकिया, मसनद, धरे है। ऊपर चन्दोवे लगे हैं। उनके प्रान्त भागों में किंकणी लगी है। रेशम के गुच्छे लगे हैं। बगलों की खंभावलियों में नाना प्रकार को रचनाओं से पुतलियाँ बनी हैं जो सूत्रों के सहारे अनेक कलाएँ दिखाती हैं।

श्रीरसाल बन के द्वितीय आवरण में लताकुंज बने हैं। बासंती, सेवती, मालती, माधवी, यूथिका, मल्लिका आदि विविध जातियां की लताओं में प्रत्येक जाति के लताकुंज पृथक-पृथक बने हैं। कहीं लताओं के बंगले हैं, कहीं लता मंडप हैं। बीच-बीच में बावली, सरोवर आदि जलाशय नाना रंगों के कमलों से सुशोभित हो रहे हैं।

तृतीय आवरण पुष्प कुंजों का है। विविध जातियों के पुष्पों की पृथक-पृथक क्यारियाँ बनी हैं। क्यारियों के बीच में कहीं फूल बंगले, कहीं फूल मंडप, कहीं फूल चौक आदि बने हैं। विविध रंगों के सुगन्धित जल और इत्रों के फुहारे जलयंत्रों से ठौर-ठौर पर छूट रहे हैं।

चतुर्थ आवरण मणिमय कुंजों का है। इसमें द्वादश सेवा कुंज स्थित हैं।

पंचम आवरण के मध्य में इक्षु (ऊंख) रससे परिपूर्ण एक विशाल सरोवर है। सरोवर के मध्य में इन्द्रनील मणि का पर्वत है। पर्वत शिखर पर विशाल रसाल वृक्ष है। उसके नीचे रासवेदिका बनी है। सरोवर के चारों तटों पर नाना प्रकारके द्रुम हैं, जिनको पुष्प फल के भार से झुकी हुई डालियाँ सरोवर जलको स्पर्श कर रही हैं। उन वृक्षों पर शुक सारिकादि पक्षीगण श्रीयुगल ललन जू के रस यश का गान कर रहे हैं।

नीचे की भूमि में नाना प्रकार की मणियों से रचना की गई है। उसके ऊपर रेशमी गिलम, गलीचे, कालीन और जाजिमें बिछी हैं।

खंभों और दीवारों के समीप चारों तरफ युगल-युगल पंक्तियों से मणिमय गमले सजाये हैं। उनमें कहीं कृत्रिम, कहीं स्वयं मधुर-मधुर गुल्म लगे हैं। उन पर छोटे छोटे पक्षी बैठे हैं। परस्पर कल्लोल कर रहे हैं। ऊपर टँगे मणिमय पिंजड़ों में अनेक जातियों के पक्षी पढ़ रहे हैं।

इसी प्रकार कुंजों के दालानों में भी विविध रचनाएँ बनी हैं। किसी भी बंगले या दालान में प्रवेश करते ही श्रीप्रिया प्रियतम जू के मन में प्रबल प्रेमावेश उद्दीप्त हो उठता है। रुक नहीं सकता।

इसी प्रकार से अनेक कुंजों में अनेक भेदों से विविध रचनाएँ श्रीप्रिया प्रियतम जू के सुख के निमित्त बनी हैं।

श्रीवशिष्ठ संहिता में श्रीप्रमोदवन के उपवनों में कहीं-कहीं बसन्त ऋतु की नित्य स्थिति बताई गई है। यथा—

"वसन्तो हि क्वचित्तत्र नित्यमेव विराजते ।।"

यही बात श्रीरसाल बन के लिये लागू है। अर्थात् यहाँ बारह मास बसंत बने रहते हैं। अतः देशी, देवगिरि, वैराडी, टोडिका, ललिता और हिंडोली नाम की अपनी छवों पत्नियों के सहित बसन्त राग यहाँ सखीरूप से नित्य निवास करते हुये श्रीयुगल किशोर जू की समयानुकूल परिचर्य्या करते हैं।

❀ बाग विहार ❀

बोली बैन सिया सुकुमारी । बाग विनोद करावहु प्यारी ॥
जहँ जहँ रचना बनी विचित्रा । कुंज निकुंज मनोहर चित्रा ॥
तहँ तहँ सैर करावहु स्यानी । प्रीतम सँग मेरे मन मानी ॥
सुनि सिय बैन मनोहर मीठे । अँगअँग पुलक भरे अति तूठे
करि प्रनाम बोली अलि बैना। चलिये जुगल ललन मम नैना
उठे पिया प्यारी सह सखियन । दै गलबाँह चले प्रमुदित मन
प्रथम गये पुष्पन के कुञ्जन । रचना देखि भये मन रंजन ॥
कुञ्जेशा सह अनुगत बालन । सहित लाड़ पूजे दोउ लालन
फूलन के शृङ्गार बनाये । पिय प्यारी अंगन पहिराये ॥
ता पाछे सखियन के अंगन । फूल सिंगार सजे नव रंजन ॥
फूलन के बंगले अति सोहन । ता मधि फूल सेज मनमोहन ॥

बहु बिधि फूलन सेज पर, करि विहार दोउ लाल।
जाल झरोखन ते निरखि, सखियन होत निहाल ॥

करि विहार निकसे पिय प्यारी। रस मद मत्त फिरै फुलवारी
विविध रंग फूलन की क्यारी। बिच बिच रौसें सुघर सम्हारी
फूल तोड़ि पिय गुच्छ बनावत। प्यारी जू को घ्रान करावत ॥
यहिविधि फूलन कुंजविहारी ※द्रु मनकुञ्ज गय सहित पियारी
वेदी परम अनूप सुहाई। तापै बैठे सिय रघुराई ॥

मनोज्ञं डोलनं कुंजं ययौ राम सह प्रिया।
बसंत रंगिनी यत्र वसन्ति परम हर्षिता ॥
वसन्त कुसुमैर्यन्तु वेष्टितं परमाद्भुतम्।
कोकिलादि गणैर्युष्टं काम संदीपकारकम् ॥

(श्रीहनुमत्संहिता पंचाध्यायी ५। ४६, ४७)

अर्थात् श्री युगलकिशोर जू मनोहर डोल कुंज में पधारे। यहां की कुंजेश्वरी श्रीबसन्त रंगिनी जू बड़े सुख पूर्वक रहती थीं। यह कुंज वासन्ती पुष्पों से सुसज्जित था, तथा यहां कोकिलादि पक्षीगण कामोद्दीपक कलरव कर रहे थे।

अतः श्रीरसाल बन के पुष्प कुंजों में फूल डोल उत्सव की भी भावना की जा सकती है।

※ प्रथमावरण में स्थित श्रीसरयू धारा के दोनों पार रसाल वृक्षों के विविध भांति के द्रुम कुंज बने हैं। यह पहले ही कह

आये हैं। प्रस्तुत द्रुम कुंज विहार यहीं का समझना चाहिये, बाग विहार में कोई क्रम की पावन्दी नहीं है कि एक ओर से ही विहार होता चले। अतः पहले तृतीयावरण वाले पुष्प कुंज से विहर कर, अब यहाँ पधारे हैं।

वसन्त समयोचित दोलोत्सव इन रसाल द्रुम कुंजों में भी होता है। यथा—

आम्रे निवद्धा विधिना विधाना—
दोलां महारत्न चयाभिवद्धाम् ।
विज्ञात सीता हृदयः सखीनां—
नेत्राम्वुजैः सोथ सहारुरोह ॥
सौदामिनीवांवुद रम्य रूपे—
रामेभिरामे जनकात्मजा सा ।
विद्योततै स्म स्फुरदङ्गभूषा—
चित्राम्वरा चित्र बचोङ्ग नेत्रा ॥

(श्रीबृहत्कौशल खंड उत्तरार्द्ध १०।२६,३०)

अर्थात् आम्र की शाखा में महारत्न समूह का दोला विधि विधान से बंधा है। श्रीमैथिली जू के हृदय भाव को समझ तथा सखियों के नयन संकेत पाकर श्रीप्रियतम जू प्रिया जू सहित उस पर विराज गये।

ज्योतिर्मयभूषण एवं चित्र विचित्र वसन से अलंकृत, चमत्कृत बचन, अंग एवं नयन वाली श्रीजनकात्मजा जू श्री-प्रियतम जू के साथ कैसी फब रही हैं, जैसी परम रमणीक श्यामघन में सौदामिनी विलस रही हो।

बाजन लगै बहुत बिधि बाजैं। तान सुरीली लेत अवाजैं॥
कोइ सखि नृत्यत तानमिलाई। पिय प्यारी दिसि भाव बताई॥

हिंडोल रागेण मनोरमेण गन्धर्व कन्याश्चजगुः प्रियं तम्।
ता राजकन्याः कलयांवभूवु र्दोलां शनै र्विस्तृत रत्नदीप्तिम्॥
कन्या वरांग्यो वरकिन्नराणां पत्युः पुरस्तान्ननृतुर्यथोक्ति।
बिद्याधराणां तनयाश्च वाद्यान्प्रवादयन्नीति पथे प्रविष्टाः॥
(श्रीवृहत्कौशल खंड १०। ३१, ३२)

अर्थात् श्रीजानकीकान्त जू को दोला पर विराजमान देखकर, गन्धर्व कन्याएँ मनोरम हिंडोल राग से गान करने लगीं। रत्नों से अति दीप्तिमान् हिंडोल को राजकन्याएँ धीरे धीरे झुलाने लगीं।

मनोहर अंगों वाली किन्नर कुमारियाँ श्रीप्राणप्रियतम जू के आगे संगीत रीति से नृत्य करने लगीं तथा संगीत रीति में प्रवीण विद्याधर वालाएँ वाद्ययंत्र बजाने लगीं।

प्रत्याम्र वद्धा मणिराजवद्धा दोला विलोलायत लोचनास्ताः।
परस्पराज्ञात परानुभावाः साकं प्रियेणारुरुहुश्च रामाः॥
अत्रापि गन्धर्व कला प्रभावाद्रामस्य रूपप्रतिविंवितानि।
तथ्योपपन्नानि सुखावहानि स्वेच्छानुरूपाणि च निर्ममाणि
(श्रीवृहत्कौशल खंड १०। ३७, ३८)

*** दोहा ***

नृत्य गान बहु भेद से, करि बिहार द्रुम कुंज।
लता कुंज आये सखी, पिय प्यारी सुख पुंज॥

अर्थात् प्रत्येक आम्र वृक्ष में मणीन्द्रों का देला पड़ा है। मनोरमाएँ एक एक पर श्रीप्रियतम जू के संग में बैठकर झूल रही हैं। प्रत्येक ललना यही जानती हैं कि प्रिय मेरे ही साथ झूल रहे हैं, अन्य के साथ झूलना इसे जान नहीं पड़ता है। यहाँ गन्धर्व कला प्रभाव से श्रीकौशलेन्द्रकुमार जू अमित रूप बनाये हैं। आपका प्रत्येक रूप यथार्थ है। कोई भ्रम की बात नहीं है। अपनी इच्छा से सबको सुख दे रहे हैं।

बसन्त कालीन दोलोत्सव का प्रमुख स्थल श्रीरसालबन ही है, यह आर्ष ग्रन्थ श्रीवृहत्कौशल खंड के उपर्युक्त उद्धरणों से भली भांति स्पष्ट हो गया। अन्यान्य रसिकों ने भी रसाल-बन के दोलोत्सव का वर्णन किया है। यथा—

झमकि झुकि झूलत अवध किशोर।
आम की डार में पर्‌यो हिंडोरा, रेशम लागी डोर।
सुन्दर बन प्रमोद सरयू तट, बोलत दादुर मोर॥
अवध छबीले पेंग बढ़ावैं, बसन उड़त झकझोर।
'मोहनि अली' चमर कर लीन्हें, निरखत छवि तृण तोर॥

❋ चौपाई ❋

कुंजनिकुंज निरखि दोउ जोरी। दसरथनन्दन सुत जनककिसोरी
गलबाहीं दीन्हें सिय प्यारे। मनिन कुंज आये छवि न्यारे
नाना रंग अनूप सुहाई। बिबिध भाँति करि जतन बनाई॥
कोइ पचखंड सप्त खंड कोई। कोइ नव खंड बने छवि जोई
मनिमय बँगले मधि अति सोहै। जगमगाय दुति फैलि रहोहै
ता मधि रतन सिंहासन राजै। देखत भानु किर्ण अति लाजै
ता पर बैठे राजदुलारे। सिय प्यारी अंसन भुज धारे॥
चहुँदिसि सखी बिराजत रूरी। छवि छकि २ छन २ तृन तूरी
पिय बहुविधि मुद्रा दिखलावहिं। कोककारिका कहि समुझावहिं

रसालबन के वसन्तोत्सव के लिये श्रीवृहत्कौशल खंड चौदहवें अध्याय के श्लोक ११४, ११५, ११६ भी देखिये। स्थानाभाव से यहाँ सब उद्धृत नहीं हो सके।

महर्षि वात्स्यायन के सूत्र १।४।२८ में जिस सहकार भंजिका क्रीड़ा का उल्लेख हुआ है, उस क्रीड़ा के उपयुक्त भी यही श्रीरसाल बन है।

श्री रसाल बन की भावना करने वाले साधकों के लिये निम्नोद्धृत छंद भी अनुशीलनीय है—

*** दोहा ***

बहु बिधि केलि विनोद करि, बन रसाल सिय नाथ।
बन तमाल की सुरति करि, चले सखिन के साथ ॥

*** कुण्डलिया ***

सालत बिरहिनि हिय चटक, बन रसाल छवि पुञ्ज।
मान छुड़ावन हित जहाँ, भँवरि दूतिका गुञ्ज ॥
भँवरि दूतिका गुञ्ज पुञ्ज सखि कलकल रव है।
पिय प्यारी की रहस सेवि रितुराज सु छव हैं ॥
छुटत मोहिनी मान सु 'प्रेमप्रभा' जहँ पालत।
जो निज सहज सुभाव, आइ विरहिनि हिय सालत ॥

रसिकेश श्रीपुरुषोत्तमशरण बिरचित श्रीसिया सनेह सुधानिधि से।

*** दोहा ***

आलय रहस रसाल बन, रस रसराज सुसाज।
स्वादी आजादी सुजन, लेत सुस्वाद समाज ॥

(श्रीयुगलविहारिणीजी कृत दोहावली से)

ऊपर जिन वासन्ती क्रीड़ाओं के वर्णन हुये हैं, उनके अतिरिक्त श्री रसाल बन में फाग विनोद भी होता है। यथा—

वसन्त गीतै र्ललितानुवन्धैः प्रहृष्यमाणौ मधुरै र्मनोज्ञैः।
नवं नवं चक्रतुरीड्यमानौ विराजमानौ निपुणं विनीतौ ॥

(पाद टिप्पणी का शेषांश)

वासन्तिकीं चाकुरुतांसुलीलां ताभिः सखीभिःसह कामिनौ।
नाना विधै र्गन्ध सुगन्ध चूर्णै रासेचतै हैंम मणीन्द्र जातैः।

(श्रीवृहत्कौशल खंड १०।३५।३६)

अर्थात् श्रीप्रिया प्रियतम जू मनोरमाओं से अभिवन्दित होते हुये श्रीरसाल बन में विराजमान हैं। ललनाएँ मधुर मनोज्ञ बसंत राग को ललित ताल विधान से गाकर आपको प्रसन्न कर रही हैं। आप दोनों नव नवायमान क्रीडोल्लास द्वारा सबको सुख दे रहे हैं।

श्रीलाड़िलीलाल जू उन सखियों के साथ बसन्त लीला करते हुये नाना प्रकार के सुगन्धित रंग स्वर्ण मणिमय पिच-कारी में नायिकाओं पर तथा परस्पर में भी छिड़कते हैं तथा सुगन्ध चूर्ण (गुलाल) डाल रहे हैं। इसके अतिरिक्त वात्स्यायन सूत्रं १।४।२७ में निर्दिष्ट 'सुवसन्तकः' संज्ञक उत्सव भी श्रीरसाल वन के पंचमावरण वाले इन्द्र नीलमणि शैल शिखर स्थित रास स्थली में मनाया जाता है

॥ इति श्रीरसालबन विहार वर्णन ॥

❀ अथ श्रीतमाल बन विहार ❀

(वार्तिक)

❀ तमाल बन का स्वरूप वर्णन ❀

—❀—

प्रथम कोट चारो तरफ श्याम मणिमयी दीवालें हैं। उन पर बिबिध रंगों की मणियों के बेल बूटे, जाल झरोखे बने हैं। दीवालों पर नाना प्रकार के चित्राम बने हैं। यह कोट महल नव तल्ले तक ऊपर को गया है।

कोट के चारों तरफ चार फाटक हैं। फाटक की रचना अति विचित्र बनी है।

नायक नायिका के पारस्परिक सम्प्रयोग सुखाधिक्य आस्वादन करने का अधिक उपयुक्त समय रात्रि ही है। श्रीलाड़िलीलाल जू विशेष रसाविष्ट होने पर चिरकाल व्यापिनी रजनी की आकांक्षा करते हैं। इस भाव को सुस्पष्ट करने के लिये रसिकाचार्यों की कतिपय महावाणियाँ उद्धृत की जाती हैं।

रस विलसत पीतम सुखहिं, चिर निसि चाह प्रवीन।
चन्द्रकला चन्दहिं निरखि, मधुर जंत्र सुर कीन॥

—श्रीनेह प्रकाश

कोट के बाहर प्रान्त भाग में चारों तरफ युगल द[illegible]
करके वृत्तावली लगी है

(श्रीतमाल बन के अभ्यन्तर सात आवरण हैं)

हे सखि बार बार कहों तोसे रजनी,
रहो थिर वेगि सुघर जिन जावो टर।
अपने श्याम सँग रंग रस वस रहि,
तोरी ढरनि लखि लागे जिय डर॥
ससि की सताई किधौं रवि की बुलाइ माइ,
जात विहाइ किधौं काज बड़ो घर।
'कृपानिवासी' सिया लाल लालची,
रैनि निहोरी देइ माल गर॥

*** राग कालंगड़ा ***

"राघवजी काईं जाय छै प्यारी जामिनी।
राज म्हासों रंग मानों हँसि गर लागनी।
दिन दुरजन सों लागत हियरे ।
कन्त बिछुरि भरि कामिनी।
नीकी लागत आवत रजनी ।
फीकी लागत गामिनी॥
'कृपानिवास' श्री राम रसिक सों।
रस वस बोलत स्वामिनी॥"

सातों आवरण के मध्य में अनेक प्रकार के कुंज निकुंज बने हैं। कुंजों के मध्य मे यथा स्थान कहीं तड़ाग, कहीं बावली, कहीं वितर्दी, कहीं कृत्रिम, कहीं स्वयं वृक्षों की अवलि बनी है। कहीं लता कुंज हैं, लता वँगले हैं, इत्यादिक रचनाएँ बनी हैं।

"जानकी रघुनन्दन मन भावति भई रैनि ब्रह्म।
'रामचरण' सर्व जीव परमानन्द पाई ॥"

श्रीयुगल रसिक जू की रसमयी आकांक्षा के अनुरूप श्रीतमाल बन में निरन्तर रात्रि की स्थिति बनी रहती है। इस बन में कभी दिन का भान होता ही नहीं। यथा—

"तामालकुल वीथिभि दिंवसेऽपि कुहूरिव"
(श्रीशिव संहिता ५।५४)

अर्थात् तमाल वृक्षों की सघनता से वनबीथी में दिन के समय भी अमावस्या की रात्रि प्रतीत होती है। पुनः—

"प्रकाशैः पुष्प जातीनां राकेवासौ दिवानिशम् ॥"
(श्रीशिव सं० ५।५२)

अर्थात् जूही चमेली के शुभ्र प्रकाश से किसी आवरण विशेष में दिन रात पूर्णिमा रात्रि का भान होता है।

श्री तमाल बन के सातों आवरणों का विवरणः—

प्रथम आवरण की भूमि धुन्ध मणिमयी है। इसी आवरण वाले अन्तराल के मध्य में श्रीसरयूजी की धारा बहती है। इस धारा के उभयकूल श्याम मणिमयी सीढ़ियों के मढ़े हैं।

एक-एक कुंज में अनेक सखियाँ रहती हैं। कुंजों में अनेक तरह के पक्षी कलरव करते रहते हैं।

दालानों के दरवाजों में विविध रंगों के परदे पड़े हैं। किंकणी, लट्टू, जाली शोभा दे रहे हैं। इसी तरह से अनेकों रचनाओं से युक्त हैं।

धारा के दोनों ओर तमाल वृक्षों की सघन पंक्तियाँ लगी हैं। इससे इस आवरण में सदैव अमावश्या की रात्रि की भाँति निविड़ अन्धकार छाया रहता है।

इस अन्धकार की ओट में श्रीयुगलविहारी निशंक सम्प्रयोग सुख लूटते हैं। यथा –

सघन कुञ्ज की ओट में, मिलन भई रस काज।
ससि वदनी कहु क्यों छिपे, लखु दृग झलकत लाज॥
लखु दृग झलकत लाज, नाज नूतन सो आई।
नवल अंग नव मिलन विरह नव अगिनि बुझाई॥
धनि तमाल पिय लता धन्य या सुछवि पुञ्ज की।
'प्रेमप्रभा' रस अकथ मोहिनी सघन कुञ्ज की॥

श्रीसिया सनेह सुधानिधि –

(प्रथम आवरण के विनोद विलास परिचायक निम्नोद्धृत पद पढ़ें।

पिय प्यारी दोनों दीन्हें गल बहियाँ।
सरयू तीर तमाल कुञ्ज में, सुखदायक छहियाँ॥

* तमाल बन बिहार, दोहा *

बन तमाल की पौरि पर, सखियन युत सिय लाल ।
आय निहारे कोट छवि, रचना लखत विशाल ॥
सखी नगारे चोप दइ, शब्द कुञ्ज प्रति छाय ।
आय मिली वागेश्वरी, * सखियन युत पिय धाय ॥
जुगल ललन परनाम करि, सखिन मिली अँकवार ।
पट पाँवड़े बिछाय कै, लै आई निज द्वार ॥

---

* यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती कनकलता जू हैं ।

मंद मंद मुसकाय परस्पर, बतिया सुख महियाँ ।
'मधुरअली' त्रिभुवन में देखी, ऐसी छवि नहियाँ ॥

दै गलबाहीं झुलैं दोउ आज ।
सरयू तीर तमाल कुञ्ज में, जनकलली रघुराज ॥
काह कहैं सखि कहत बनै ना, कोटिन सुख को साज ।
'मधुरअली' सब तजि सँग झुलिहैं, छाड़ि लोक कुल लाज ॥

द्वितीय आवरण का कोट महल नील मणिमय है। श्याममणि के कृत्रिम तमाल वृक्षों की सघन पंक्तियाँ लगी हैं । नीचे की भूमि धुन्ध मणि मयी हैं । बीच बीच में सरोवर बने हैं । इन में नील कमल खिले रहते हैं । इस आवरण में प्रथम आवरण की अपेक्षा कुछ कम अन्धकार रहता है। यहाँ भी सदैव रात्रि की प्रतीति होती है ।

*** चौपाई ***

करि पूजा बहु विधि सेवकाई। बहु व्यंजन भोजन करवाई॥
कुञ्ज निकुञ्ज दिखावन लागी निरखि २ सिय पिय रस पागी
अरस परस अंसन भुज धारे। रोसन पर विचरत दोउ प्यारे॥
देखत चंपकली जब प्यारे। करज पदज सिय केर निहारे॥
देखत फूल गुलाबन केरे। सिय करतल तब दै चित हेरे॥

तृतीय आवरण का कोट महल हरित मणिमय हैं। पीत रंग की मणियों से जटित भूमि पर सोन जूही आदि पीत पुष्प वाली लताओं से परिवेष्टित तमाल वृक्षों की पंक्तियाँ सुसज्जित हैं।

तमालानां वनं दिव्यं वल्लिभिः परिवेष्टितम्।
(श्री सत्योपाख्यान रामायण २१।२४)

अर्थात् तमाल वन के तमाल द्रुम लताओं से परिवेष्टित हैं। बीच बीच में तालाब बने हैं, जिन में नील पीत कमल खिले हैं। यहाँ भी हलके अन्धकार की रात्रि बनी रहती है।

"विपिन तमाल तमाल तर, स्याम तमाल सुदेखु।
सोनजुही लतिका सरिस, नागरि छबि अवरेखु॥
नागरि छवि अवरेखु, रेख खिच ले हियरा में।
सोनजुही सी सिय तमाल पिय लगि गरवा में॥
उरझि रही रसरंग अंग अंगन शोभा फबि।
'प्रेम प्रभा' छहराति मोहिनी अकथ अगमकबि॥

देखत रंभ खंभ अति नीके। सिय ऊरु के आगे फीके ॥
देखत कमल कली स्थूले। सीय अंग सम नाहिन तूले ॥
देखत श्री फल रुचिर बड़ेरे। सिय उरोज दिसि हँसि २ हेरे॥
श्री फल की मनोज्ञ कठिनाई। पै ऐसी रुचिराइ न पाई ॥
देखत मीन कंज अरु खंजन।प्रिया नयन सम नहिं रस रंजन
लता द्रुमन पर नागिनि झूले।प्यारी कवरी सम नहिं तूलै॥

इहि बिधि रौसन रौस पर, प्रिया संग सिय नाह।
कुञ्ज निकुञ्जन में फिरे, आये बंगले माह ॥

चतुर्थ आवरण में लता कुंज हैं। बीच बीच में बापी दीर्घिका बनी हैं। कहीं लता के मण्डप, कहीं लता बंगले बने हैं। यहां भी हलके अन्धकार की रात सी प्रतीत होती है।

"बन तमाल लतिका ललित, ललना गन कर केलि।
करहिं विविध विधि सुखअवधि, सुकृती सुकृतसकेलि॥
(श्रीयुगलविहारिणि जू रचित दोहावली)

✻ दोहा ✻

बहु विधि मोद विनोद मय, करत इहाँ दोउ केलि।
दृग भोगी अलियाँ छकीं, तत्सुख रेलम रेलि॥
पुनि सिंगारे सखिन सब, नवल सिया पिय साथ॥
रुचि पावय आरति कियो, बहु विधि भई सनाथ॥

✻ चौपाई ✻

चढ़ि सुखपाल सिया सुत प्यारे।चंपक बन विहरन चित धारे

॥ इति श्रीतमाल वन विहार॥

पंचम आवरण पुष्प कुंजों का है। श्वेत पुष्पों की क्यारियों के बीच बीच में नाना आकार के जल यन्त्रों से इत्रों के फुहारे छूटते हैं। चन्द्रमणि मयी भूमि है। यहां पूर्णिमा की रात सी सदैव ज्योत्स्ना छाई रहती है।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंजों के उपयुक्त मणिमय बंगले आदि बने हैं।

सातवे आवरण के मध्य में कस्तूरी मिश्रित श्याम जल से परिपूर्ण विशाल सरोवर है। सरोवर के मध्य में श्याम-मणिमय क्रीड़ा पर्वत है। पर्वत शृङ्ग पर विशाल तमाल वृक्ष है। उसके नीचे रास चत्वर बना है। रास स्थली के चारो ओर पर्यंक सज्जित अनेक निकुंज बने हैं।

❀ अथ चम्पक वन विहार ❀

❀ वार्ता ❀

प्रथम कोट पीत मणिमय दीवाल है और बिबिध रंगों की मणियों से अनेक रचनाएँ बनी हैं।

यह कोट महल नव खंड ऊँचा है। सब खंडों में नील हरितादि मणियों से विभिन्न रचनाएँ की गई हैं।

यह वन श्री दन्तधावन कुंज और स्नान कुंज से पश्चिम है। यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती रूप गर्विता जू हैं।

श्री कौशलेन्द्र कुमार जू स्वयं ही श्री तमाल बन का रूप धारण किये हुये है। उसी प्रकार श्रीमिथिलेन्द्र राजदुलारी जू स्वयं चम्पक बन बन गई हैं। आप के श्री अंगों में भी पुष्प वाटिका की कल्पना रसिकाचार्यों ने की है। यथा —

सिय भइ सुभग मदन को बाग।
सुमन वाटिका परम मनोहर, ताको मनहुं सोहाग ॥
रूप वसन्त मृदुल कर पल्लव, भुज बल्लित की लाज ॥
नयन कमल जंघा रंभा सी, महक मनहु अनुराग ॥
देखि राम मन भंवर लुभाना. अलख प्रेम रस पाग।
नाभि बहुत गंभीर सरोवर, जहं दुइ हंस बिभाग ॥
पीत वसन परिखा जनु सोहत, भूषन ध्वनि खग बाग।
सिया राम को ताग जुरत ही, भाग 'देव' को जाग ॥

(श्रीकाष्ट जिह्व स्वामी कृत श्रीजानकी विन्दु)

दालानों के भीतर अनेक चित्राभ बने हैं। दरवाजों में ताश बादला, कमखाव आदि अमोल जड़ाऊ वस्त्रों के परदे पड़े हैं। दालानों के भीतर कहीं कुर्सी, कहीं पर्यंक, तोशक, तकिये से सजे बिछे हैं। ऊपर छत में जरकसी चन्दोवे लगे हैं। कलश कंगूरों पर कृत्रिम मोर, कबूतर, शुकादि की माला बैठी हैं।

सीता प्रतीकोज्ज्वल वाटिकायां भृङ्गो महाराज किशोरकोऽयम्।
दिव्याङ्ग पुष्पासव पान मत्तो विधूर्ण दृष्टि र्मुदमातनोति ॥
श्री माधुर्य केलि कादम्बिनी श्लोक ५७।

अर्थात् श्री मिथिलेश राजकिशोरी जू का श्रीविग्रह ही उज्ज्वल अर्थात् श्रृङ्गार रसमयी वाटिका। श्रीअवध किशोर जू ही इस वाटिका के रसलोलुप भ्रमर हैं। दिव्याँग रूपी पुष्पों के छवि मकरन्द पीकर मतवाले आप के रसछाके नयन घूमते हुये परमानन्द का विस्तार कर रहे हैं।

"श्री वन मनही मन में भावत।
कहत न बनत बनत वह देखत, कोउ सुकृती रस पावत ॥
रंग रंगीले फूल सिया मय, मधुकर प्रेम बढ़ाबत।
भासत देखि कुंज की अन्तर, सिया चली जनु आवत ॥
कबहुं केसरिया कबहुं चूनरी, कबहुं नील लहरावत।
कबहुं गुलाबी मँहकत पट छवि, कुंजन में दरसावत ॥
जेहि कारन जप तप को साधत, धर तजि मूड़ मुड़ावत।
याको देखत सोइ 'देवता' अनायास उर छावत ॥
(श्री जानकी विन्दु)

इसी प्रकार पाँचों कोटों की रचना जानो । मध्य मध्य के अवकाशों में अनेक कुंज निकुंज बने हैं। मध्य के भाग में पूर्वोक्त नाना रचनाएँ बनी हैं।

प्रथम आवरण के मध्य अवकाश में श्री सरयू धारा है। धारा के दोनों ओर चम्पाकेला का कदलीबन है। उसमें कदली द्रुम के ही कुंज निकुंज बने हैं।

द्वितीय आवरण में कई जातियों के चम्पकों के पृथक् पृथक् कुंज बने हैं। बीच बीच में पीत कमल से परिपूर्ण सरोवर, पीत मणि बद्ध घाटों से सम्पन्न बने हैं।

तृतीय आवरण में चम्पक लता कुंज हैं। बीच बीच में पुष्प करणियाँ बनी हैं।

चतुर्थ आवरण में द्वादश सेवा कुंज है। सेवा कुंजों की दीवालों पर चम्पक द्रुम, चम्पक लता के चित्राम ऐसे वने हैं, जिससे वहाँ भी बन के दृश्य का भान होता है।

पंचम आवरण में चम्पक इत्र से परिपूर्ण विशाल तड़ाग हैं। तड़ाग के बीच पीत मणिमय पर्वत हैं। उस पर विशाल चम्पक बृक्ष है। बृक्ष के नीचे रास वेदिका बनी है।

चम्पकानां वनं दिव्यं यत्र यान्ति न षटपदाः ॥
(श्री सत्योपाख्यान रामायण २०। २१)

अर्थात् श्रीप्रमोदवन के अन्तर्गत्त दिव्य चम्पक बन हैं। इसमें अन्य भ्रमर का प्रवेश नहीं है। इसके रसभोक्ता एक मात्र श्रीराम भ्रमर है।

पहुँचे कोट द्वार दोउ जाई । सजि सामा वागेश्वरि आई ॥
करि पूजा सनमान बहोरी । सखिन संग सिय लाल निहोरी
गइ लिवाइ कोट के भीतर । अद्भुत रचना दिखवति अन्दर
कहुँ दिवाल के अन्दर प्यारी ।दम्पति चित्र सु न्यारी न्यारी
कहुँ पांसे खेलत दोउ जोरे। गोटी मारत करि करि गोरे ॥
कहूँ गेन्द खेलत दोउ प्यारे। निज निज यूथनि लेत सँवारे ॥
छमकि झमकि कै गेन्द उठावत ।सीना तानि तानि के ताड़त
कहूँ पतंग उड़ावत हँसि हँसि । निज२ दावन काटत फँसि२
कहुँ पच्छिन को पाठ पढ़ावत । निज २ जीतन दाँव बतावत॥
कहूँ अश्व पै चढ़ि के दोऊ। मृग पाछे धावत सँग सोऊ ॥
कहुँ विपरीत शृङ्गार सँवारे । क्रीड़त हैं दोउ रस मतवारे ॥
यहि बिधि दोउ की नाना केली।चित्रित भीतिनमें रँग रेली

भँवर न कबहूं जात है, चम्पकली ढिग भूल ।
स्याम भँवर नित झूमहीं, बैठि सुचम्पक फूल ॥
बैठि सुचम्पक फूल भूल भरमत दिन रतियाँ ।
चम्पक सी सुकुमारि प्यारि लगि लगिकै छतियाँ ॥
विभव बिलास हुलास स्वाँस अरपित कर सबहूँ ।
मोहनि 'प्रेम प्रभा'स भूल पिय भँवर न कबहूं ॥
(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

सखियन युत सियलाल निरखिके अचरज मानत हैं हँसि२के
यहि विधि कौतुक देखत नाना। आये बाग मध्य स्थाना॥

सिंहासन बैठे दोउ जोरी। चहुँ दिसि सखियन मंडल रूरी॥
वागेश्वरि भोजन बहु धरिकै।दुहुँन पवावत स्वादन कहिकै॥
पुनि जल प्याइ कराई अचवन। बीरी देइ लगाई अतरन॥
करि आरति सखियन युत नाचै।पिय प्यारीके कौतुक राँचै॥
इहि विधि चम्पक बाग में, करि बिहार पिय प्यारि।
चन्दन बन की सुरति करि, चलत भये संग नारि॥

॥ इति श्रीचम्पक बन विहार ॥

चम्पक वरनी नागरी, चम्पकली उर धारि।
चम्पक तरु सी है खड़ी, चम्पक वन निरुवारि॥
चम्पक बन निरुवारि नारि नव तन वसिकर है।
स्याम वेलि रहि अरुझि करन टारन मनहर है॥
वसन चंपई रंग विभूषन हूं सुख भरनी।
'प्रेम प्रभा' सब साज मोहिनी चम्पक वरनी॥
(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

चम्पलता चम्पक सुवन, चंचरीक चित सेय।
लेय युगल आनन्द रस, रहस वारि निज देय॥
(श्रीयुगल विहारिणी जू कृत दोहावली)

❀ अथ चन्दन बन बिहार ❀

(वार्ता)

❀ चन्दन बन स्वरूप वर्णन ❀

प्रथम कोट की चारों ओर स्फटिक मणिमय दीवालें हैं, जिनमें बिविध रङ्गों की मणियों की रचनाएँ हैं। नव तल्ले हैं प्रत्येक खण्ड में तरह तरह की रचनाएँ बनी हैं।

पाँचों आवरणों के कोट इसी तरह बिविध रंगों के बने हैं। प्रत्येक आवरण के अन्तराल में नाना तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

श्री मान चन्दन वन के पूरब में श्री स्नान कुंज एवं श्री फाग कुंज हैं। दक्षिण में श्री मान चम्पक बन हैं। पश्चिम में महा यूथेश्वरी श्री मती हेमा जी का महल है। उत्तर में श्रीमान पारिजात वन हैं। यहाँ की वागेश्वरी का नाम श्री मती चन्दनाङ्गी जी है।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू की धारा है। धारा के एक ओर मलय (श्री खंड) बृक्षों की पंक्तियाँ सजी हैं, दूसरी ओर विविध प्रकार के फलों का बागीचा है। इस बागीचे में गोरोचन प्रगट करने वाली सुरभियों (गौओं) का यूथ बिचरा करता है।

दूसरे आवरण में हरिचन्दन, कालीयक (पीत रंग का चन्दन) कालागरु, तिलपर्णी (लाल चन्दन , गोशीर्ष (कमल गन्ध वाला चन्दन)

चन्दन बन के बहिर्कोट के द्वार पर सखियों से परि-वारित श्रीप्रिया प्रियतम जू पधारे। द्वार रक्षिकाओं ने आपके शुभागमन सूचक नगारे पर चोप दिया। वह शब्द सुनकर प्रधान कुंजेश्वरी ने निज अनुचरियों के सहित आकर आपको प्रणाम किया। पट पांवड़े देती हुई अपने कुंजमें लिवा गईं।

श्रीमहाराजनन्दिनी एवं श्रीमहाराजनन्दन जू को सिंहा-सन पर विराजमान कराकर, षोडशोपचार से पूजन किया। तत्पश्चात् आरति नृत्य करके बार बार बलैया ली।

मांगल्या (चमेली गन्ध वाला चन्दन), अगर, तगर, कंकोल, जायफल धूप आदि विविध सुगन्ध मय बृक्षों के उपवन पृथक् पृथक् सजाबट के साथ लगे हैं। इनमें कस्तूरी मृगों के यूथ विचरते रहते हैं। बीच बीच सरोवर वापी आदि कमलाकुल जलाशय हैं।

तीसरे आवरण में चारो ओर केशर की क्यारियाँ सजी हैं। किसी क्यारी के बीच में फूल बंगला बना है, किसी में मोती महल, किसी में खसखाना, किसी में तहखाना बना है; क्योंकि इस बन में सदा ग्रीष्म ऋतु बनी रहती है। प्रत्येक क्यारी में नाना आकार वाले जल यन्त्रों से विविध इत्रों के फुहारे छूटते रहते हैं। इस बन में भैरवी, गुर्जरी, रेवा, गुणकरी बंगाली और बहुली नामक स्वकीय पत्नियों के सहित भैरव राग श्रीमैंथिली जू की सखी स्वरूप से नित्य निवास करती हैं।

चौथे आवरण में द्वादश सेवा कुंज हैं। कोई कुंज महल मोती का, कोई चन्दन काष्ट का, कोई खस का बना है।

तत्पश्चात् श्रीप्रिया प्रियतम जू सखियों के संयुक्त सब कुंज निकुंजों की रचनाएँ देखने लगे।

चन्दन बन के मध्य में एक चन्दन ह्रद (सरोवर है। इसमें चारों तरफ मणिमय सोपान (सीढ़ी) बँधे हैं। तट से सटे हुये अनेक आकारों के बुर्जे (जल में) बने हैं। तड़ाग के मध्य में भी एक बुर्जा बना है। तड़ाग के तट पर चारों तरफ चन्दन की वृक्षावली लगी है। चन्दन की सुगन्ध से संपूर्ण बन आमोदित हो रहा है ❋। चारो कोनों में चार बंगले बने हैं। तड़ाग में जल के अभ्यन्तर अनेक गुप्त खंड खंडान्तर बने हैं।

पाँचवे आवरण में चन्दनोदक से परिपूर्ण विशाल सरोवर है। सरोबर के मध्य में मलयाचल पर्वत हैं। पर्वत शिखर पर सुबिशालचन्दन वृक्ष है, जिसके नीचे रास वेदिका बनी है।

❋ प्रकृति मण्डल में भी चन्दन अपने आस पास के वृक्षों को सुवासित कर देता है, तथा इसकी सुगन्ध सुदूर प्रान्तों के बायु मण्डल को सुरभित कर देती है।

यहाँ तो स्वतः सौरभमय दिव्य देश और बहाँ के चन्दन बृक्ष। फिर तो उसकी सुगन्ध सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड को सुवासित करने में समर्थ है।

"जेहि शुभ सौरभ परसि पूत पवमान प्रानप्रिय।
पूरित विपुल विनोद निखिल जग मध्य मधुर हिय॥
सरस सुगन्धित सकल सुवन अन्तर मारुत कृत।
सुमन सुभाविक सुभग सुमन सुमनस हुलास हृत॥
(श्रीयुगल विनोद विलास ३।१४)

तड़ाग का जल अतिशय सुगन्धमय है। उसमें श्वेत, पीतादिक कमल खिले हैं। कमलों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। चन्दनों की नौकाएँ अनेक प्रकार की बनी हैं।

वहाँ सखी समाज सहित श्रीप्रिया प्रियतम जू पधारे। चन्दन हृद को देखकर आपको ससमाज जल बिहार करने की उमंग उठी। उस उमंग का इतना अधिक आवेश हुआ कि भूषण वसन भी नहीं उतारने पाये। सब के सब सचैल जल में कूद पड़े।

*** चौपाई ***

जल बिहार विहरत रघुनन्दन। चपल चातुरी कर मन रंजन
कर संपुटमें जल भरि रसि कै। सिय नैननमें छिरकत हँसिकै
सिय हू जल भरि पिय को मारे। लोचन तार किया रतनारे
प्रीतम छींटा मारि मारि के। नयन लाल करि दइ प्यारी के
जल कन नहिं सहि सकी पियारी। नयनन मूंद लई करवारी

श्रीचन्दन बन के अन्तर्गत द्वितीय आवरण में स्थित श्रीहरिचन्दन उपबन का विहार श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी के द्वितीय अध्याय में इस प्रकार वर्णित है--

विहरन्तौ बने तस्मिन् हरि चन्दन संज्ञिते।
यत्र वृक्ष लताः कुंजाः हेम वल्कल शालिनः ॥ ३२ ॥
नाना प्रसून प्रवरा युक्ता मत्त मधुव्रतैः।
खगैः कनक चित्रांगैः कूजद्भिरभिनन्दिताः ॥ ३३ ॥
सुरत्न मणिमाणिक्य वेदी मन्दिर मण्डिताः।
सखीनां गान कलया सुगन्धानिल सेविता ॥ ३४ ॥

*दोउ दल सखियाँ न्यारी २। खोलि रही जलकन लै सारी
देखी मोद सिया सुकुमारी। जल सींचन से व्याकुल भारी॥
दौड़ो आइ सिया की ओरी। जल अंजलि पिय नैनन छोरी॥
पिय जलकन तिहि नैनन मारैं। बड़ो चलाक करन तैं टारैं॥
बार २ जलकन भरि अंजलि। पिय नैनन में छींटति चंचलि

पिछले पृष्ट वाले श्लोकों का भावार्थ: –

श्रीलड़ैतीलाल जू हरि चन्दन नामक वन में विहार कर रहे हैं। यहाँ के लता बृक्ष सभी स्वर्ण वल्कल वाले है। नाना उत्तमोत्तम पुष्प खिले हैं। उन पर मत्त भ्रमर मड़रा रहे हैं।

चित्र विचित्र सुनहले अङ्ग वाले पक्षी अपने कलरव से वहाँ आनन्द का संचार कर रहे हैं।

वहाँ रत्नमणि माणिक्य की वेदी पर मन्दिर स्थित है। सखियाँ गान कर रहीं हैं। सुगन्ध पवन डोल रहा हैं।

"चन्दन वन विलसत नितैं, सिय रघुनन्दन साथ।
ताप हरन शीतल करन, हिय जिय होत सनाथ॥"

(श्रीयुगल विहारिणि जी की दोहावली)

* चन्दन वन विहरत लली लाल। सुख यंत्र चलत दुति चंद धाल॥
छलकत चन्दन छबि सुभग अंग। लखि लाजि रहत अगनित अनंग॥
युग चरन संग युग चरन जाय। दरसत हौजन बिच दृग लुभाय॥
कर यंत्र मंत्र सम लगत हीय। छवि 'मोहनि' मोहन चपल कीय॥

(श्रीसिया मोहिनी शरण कृत वर्षोत्सव पद सं० १६८

तबसो कियो पियाको बिह्वल। नयन ढके पियतब निज करतल
तबतक नयन खोलि निज प्यारी। पियकी दशा देखि झटकारी
झटकि पिया कटि पकड़ी प्यारी। कहौ लाल का करौं तिहारी
पिय बोले सुनु प्रान पियारी। सब विधि तुम से हार हमारी

सुनि प्यारे के वचन मृदु, सिय लइ कंठ लगाइ।
अंकमाल दै चूमि मुख, बहु विधि लेत बलाइ॥

पुनि बिहरन लागे सिय प्यारे। सखिन संग श्रीराजदुलारे॥
काहू पकरि माल गर तोड़त। काहू जल में लै झकझोरत॥

चन्दन पुतरी सी खड़ी, चन्दन वन सुकुमारि।
चन्दन लेपन ग्रीव बिच, चन्दन सी भुज डारि॥
चन्दन सी भुज डारि प्यारि पिय हार गरे बनि।
इक भुज अंसन बीच एक लेपति सुगंध सनि॥
खैंचत अपनी ओर जोर भरि लखि इत उतरी।
'प्रेम प्रभा' भरि अंक मोहनि चन्दन पुतरी॥

तब ताके पिय मोद सुओरे । अपनों दांव लेन को दौरे ॥
पकरि लई झट करन मरोरी । छिटकि गई सो सिय की ओरी
चन्द्रकला कह सुनों खिलारो । मोद न ऐहैं हाथ तिहारो ॥
जौं इन के रस चाखा चहिये । तौ सिय जू के पाँयन गहिये॥

यहि बिधि सों जल केलि कै, सखिन संग सिय लाल ।
लालन नव शृङ्गार सजि, चलत भई सब वाल ॥

॥ इति श्रीचन्दन बन बिहार ॥

सीतल चन्दन सरिस तन, मेटत पिय संताप ।
कोमल चन्दन ते अधिक, देत मदन की ताप ॥
देत मदनकी ताप आप अपनी दिशि कसि कसि ।
मदन मरोरा खात पीय नव तन प्रिय फँसि फँसि॥
रसबस करत निहोर भोर भावन सुख कन्दन ।
'प्रेम प्रभा' लगि अंग मोहिनी शीतल चन्दन ॥

❀ अथ पारिजात बन बिहार ❀

❀ दोहा ❀

पारिजात बन द्वार पै, ललो लाल दोउ आय।
सखिन नगारे चोप दइ, शब्द कुञ्ज प्रति छाय॥

श्री पारिजात वन श्री कनक महल से वायव्य (पश्चित्तर) कोण में है। इनके पूरब श्री मान विहार वन, दक्षिण श्री मान चन्दन वन, पश्चिम श्री मती हेमा जी का महल है। यहाँ की वागेश्वरी जी का शुभ नाम श्रीमती गुणागरि जू है।

पारी समुद्र को कहते हैं, जात नाम उत्पन्न। अर्थात् समुद्र मंथन से प्रगट होने वाले चौदह रत्नों में एक पारिजात बृक्ष भी है। यह बृक्ष इन्द्र को मिला था। श्री सत्यभामा जी के आग्रह वश श्री द्वारकाधीश भगवान इन्द्र से उसके एकमात्र पारिजात को छीन लाये थे। यहाँ तो स्वयं प्रगट असंख्य पारिजातों का बन ही बना हुआ है। श्री पारिजात बन स्थित स्थावर जंगम सबों में कामद शक्ति है।

प्रथम आवरण के मध्य अवकाश में श्रीसरयू धारा है। कौस्तुम, स्यमन्तकादि दुर्लभ मणिगण श्रीसरयू अपने उभय तट बगेरी रहती हैं। उन्हें कोई पूछता भी नहीं। धारा के दोनों ओर पारिजात बृक्षों की पंक्तियाँ सजी हैं।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण उत्तर काण्ड के अ० ४२ श्लोक संख्या २ में पारिजात बृक्ष की कान्ति निर्धूम अग्नि के समान बताई गई है-

(वार्ता)

❁ पारिजात बन का स्वरूप वर्णन ❁

प्रथम कोट में चारों तरफ हरित मणि की दीवाल है और अनेक रङ्गों की मणियों से नाना प्रकार की रचनाएं बनी हैं। इसी प्रकार पाँचों कोट कोई नीलमणि, कोई पीतमणि करके बने हैं।

अन्तराल की भूमि स्फटिक मणिमय है। उसमें अनेक रङ्गों की मणियों से बेल बूटे बने हैं। अन्तरालों के मध्य में बिबिध रङ्गों की मणियों से अनेक आकारों के कुंज बने हैं। कोई कुंज कमलाकार है, कोई कमठाकार है, कोई सोता फला-कार है, कोई सारी फलाकार है। इस प्रकार अनेक भेदों से बने हैं।

"शोभितां पारिजातैश्च बिधूम ज्वलन प्रभैः ॥"

उनमें कामधेनु बृन्द चरा करती हैं। यहाँ की भूमि चिन्तामणि-मयी है। यहाँ की केलि कल्लोल भावना भी चिन्तकों को मनोवांछित देने में समर्थ है। आगे श्रीयुगल विनोद विलास की उद्धृत प्रथम पंक्ति देखिये।

"कामद केलि कलोल करत…"

द्वितीय आवरण में विविध जातियों के पुष्पों के पृथक पृथक चौक बने हैं। प्रत्येक चौक में अमृत सरोवर है। प्रत्येक सरोवर के मध्य में रास ंगला बना हैं। देवकन्या, गन्धर्व कन्या, किन्नर कुमारी आदि देव जाति

श्रीप्रिया प्रियतम जू के शुभागमन के नगारे सुनकर, अपना अनुचरियों के संयुक्त श्रीरागेश्वरीजी ने आकर प्रणाम किया।

की कन्याओं के रासनृत्य के हिसाब से इन सरोवर के रास बंगले पृथक पृथक भेद से बने हैं।

तृतीय आवरण में लताओं के कुंज, निकुंज, बंगले, मण्डप आदि बने हैं। रास कालीन ऐकान्तिक विहार के निमित्त इनमें पर्यंक तथा विविध भोग पदार्थ सजे रखे रहते हैं।

चतुर्थ आवरण में विविध भोगैश्वर्य से समृद्धमान द्वादश सेबा कुंज बने हैं।

"क्रीडयंश्च ततः श्रीमान् ययो वन मनुत्तमम्।
पारिजात द्रुमै यंत्र वेष्टितं परमाद्भुतम्॥
नाना रत्न मणि स्तम्भ कदंवै रन्वितं गृहम्।
सर्वं भोगै स्समायुक्तं मनोभिलषितं च यत्॥
श्रीहनुमत्संहिता रासपंयोध्यायी २।३५।३६

अर्थात् श्रीजानकी वल्लभ जू अन्य वन में बिहर का परमाद्भुत पारिजात बृक्षों वाले उत्तम बन में पधारे। इस बन के महल नाना रत्न-मणि स्तम्भो से सम्पन्न हैं तथा मनोभिलाषित सुख देने वाले सभी भोग पदार्थ से भरे हैं।

पांचवें आवरण के मध्य में विशाल क्षीर सरोवर है। सरोवर के मध्य में कामदगिरि है। गिरि शिखर पर बिशाल पारिजात बृक्ष है। उसके नीचे रास चत्वर है। कामद गिरि से पय सरिणी के विविध झरने बह कर क्षीर सरोवर में गिरते रहते हैं।

श्रीयुगलसरकार को पट पाँवड़े देकर अपने कुंज में लिवा ले गई। सिंहासन पर पधराकर, षोड़शोपचार से पूजन किया। आरति उतार कर नृत्य गान करने लगीं।

"कामद केलि कलोल करत हिय हरत होस सब।
पारिजात वन सघन निरखि दम्पत्ति प्रसन्न तब ।।
अगनित मनिमय महल अहर्निस चहल पहल अति।
विविध वितान विचित्र विजित रचना नित रतिपति ।।
चौक चांदनौ चारु चमक छज्जन प्रति छाजत।
कलस केलि संकलित महा मनिगन भल भ्राजत ।।
विसद विहार बहार विपुल अति अमल अनुपम्।
नवल निकुंजन मध्य मधुर रस रहस स्वरूपम् ।।
सौज सुहावन सुधा सार सम्पन्न सरस सुचि।
जेहि लखि छकि चित चैन ऐन आनन्द बढ़त रुचि ।।
नाना मनिगन कलित ललित सद सदन सोहावन।
रतन रचित रमनीय थंभ भासत प्रिय पावन ।।
सकल भोग गत सोग सतत सोहत सनेह सर।
निखिल मनोरथ सफल सजत सावित सहाय कर ।।
मनमथ रति आवेश वेस भीने रसेस रस।
ललित लड़ैती लाल लट्टू लपटे विहार वस ।।
उज्जल सजल उमंग रंग रस रंगे रमत नित।
झुकत गैन वर गैन, रुकत बैसुध तन मन चित ।।

पुनः फूलों के रौसों पर कुंज निकुंजों की शोभा दिखाने लगीं। किसी ठौर पर रंग रंग के फूलों की क्यारी बनी है। किसी ठौर पर चारों तरफ फूलों की क्यारी है, उसके मध्य में फूलों की बेदी बनी है। उस पर सखिन संयुक्त श्रीप्रिया-प्रियतम जू विराज गये। नाना प्रकार की रसमयी वार्त्ता होतीहै।

उदित मुदित अनुराग चारु चित चंद फंद मन ।
प्रसरित विसद उजास रास रस अति प्रमोद घन ॥
विहरत नवल किशोर चारु चित चोर ओर चहुं ।
प्रान पिया करजोरि नटन सम गति विहरत कहुं ॥
(श्रीयुगल विनोद विलास २१४-७९)

–: कुण्डलिया :–

प्यारी हित प्रीतम रचत, निज कर नित नव सेज ।
पारिजात भव सिन्धु ते, पारिजात वन तेज ॥
पारिजात वन तेज तेज भवसिन्धु भयावन ।
श्रम बिनु पार सुदेत सुखद सीय पीय मिलावन ॥
छूये से कुम्हिलात अंग मृदु लगि सो विकसित ।
'प्रेम प्रभा' पिय रचत सेज मोहनि प्यारी हित ॥
(श्री सिया सनेह सुधानिधि)

– दोहा –

पारिजात मुद व्रात प्रद, सुमन सुरुचि सखि हार ।
युगल विहार सुप्यार गर, पहिराइये दिलदार ॥
(श्रीयुगल विहारिणजी कृत दोहावली)

पुनः उठकर चलते हैं। जब चलते हैं, तो यूथ के यूथ मृगछौने आते हैं, जिन के कण्ठों और चरणों में सोने के मंजीर पड़े हैं। जब चलते और कुलाँचते हैं, तो मंजीरों के शब्द से सम्पूर्ण कुंज प्रदेश मुखरित हो उठता है। उन मृगाओं के बच्चों को श्रीप्रिया प्रियतम जू बहुत दुलारते हैं। वह बच्चे भी श्रीप्रिया प्रियतम जू के चरणों को चूमते हैं। पुनः आप बिबिध भाँति की मिठाइयाँ अपने करकंजों में ले ले कर उन्हें पवाते हैं। इसी तरह से नाना प्रकार के पक्षियों के साथ खेल करते हैं। उन्हें चुगाते हैं।

इस प्रकार कुंजों के रौसों पर खेलते हुये श्रीप्रिया-प्रियतम जू ने मध्य के कक्ष में प्रवेश किया। वहाँ पर सखियों ने आपको नाना तरह के व्यंजन भोजन कराये। पान मसाला दिया। अतर लगाया। आरति उतारी, तत्पश्चात् नृत्य गान किया।

श्रीपारिजात बन में नाना प्रकार की केलि क्रीड़ायें कर श्रीयुगलकिशोर जू बिहार बन के लिये प्रस्थित हुये।

॥ इति श्रीपारिजात बन विहार ॥

❋ अथ विहार बन बिहार ❋

❋ वार्ता ❋

❋ श्रीबिहार बन का स्वरूप बर्णन ❋

प्रथम कोट में चारों तरफ पाटलमणि की दीवालें हैं। उनमें अनेक रंगों की मणियों से बेल बूटे, जाली झरोखे बने हैं।

सात कक्ष करके श्रीविहार वन बने हैं। सातों कोटों की रचनाएँ नाना तरह की मणियों से बनी हैं।

श्री कनक महल से उत्तर दिशा में श्री विहार बन स्थित हैं। इनके पूर्व में श्री कदम्व बन है, दक्षिण में श्री फाग कुंज तथा श्री शृङ्गारकुंज हैं, पश्चिम में श्री पारिजात बन है, उत्तर में श्रीमती क्षेमाजी के महल का विस्तार है। श्रीमती हेम मंजरीजी यहाँ की वागेश्वरी हैं।

श्री विहार बन के प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा के दोनों ओर विविध जातियों के फूल फल वाले वृक्षों के मधुर मधुर उपबन बने है। किसी उपबन में क्रीड़ा शैल है, कहीं नील, पीत, श्वेत, हरित रंग की मणियों की विविध आकार वाली वेदिकाएं बनी हैं। वेदिकाओं पर कहीं बंगले, कहीं मण्डप बने हैं। इन उपबनों में श्वेत, पीत, लाल, हरित, धूसर रंग के, दुरंगे, पचरंगे, षटरंगे मृगाओं के यूथ छलांग मारते फिरते हैं। श्री प्रियतम जू कहीं कामेश्वर पूजन लीला, कहीं दान लीला, कहीं चीर हरण लीला रचते हैं। कहीं मान लीला होती है।

दालानों के भीतर दीवालों में अनेक तरह के चित्राम बने हैं। ऊपर चन्दोवे लगे हैं, जिनमें मोतियों की झालर लगी है। दरवाजों में अनेक रंगों के जड़ीदार पट पिधान पड़े हैं। परदों के प्रान्त भाग में किंकिणी लगी हैं। उठाते छोड़ते समय शब्द होता है। नीचे की भूमिकाओं में रेशमी जाजिमें बिछीं हैं। उनके ऊपर अनेक पर्यंकादि बिछे हैं।

कोटों के अन्तरालों में अनेक कुंज निकुंज बने हैं। तिन के मध्य में अनेक रंगों की वृक्षावली लगी है। तिन के मध्य में लताएँ लिपट रहीं हैं। उनपर तरह तरह के पक्षी कूज रहे हैं। भवँर गुंजार कर रहे हैं।

द्वितीय आवरण में षट ऋतु विहार के कुंज बने हैं।

❀ कुण्डलिया ❀

विकसित कमल तड़ाग बिच, रितु सुसुखद हेमंत।
विपिन विहार सुहार तजि, भँवर विहार एकन्त ॥
भँबर विहार एकंत कंत प्यारी सँग ठानै।
समय महल सुख चहल पहल कहि कहि सममानै ॥
आगे ग्रीषम कुंज तड़ाग भरे चोरत चित।
'प्रेम प्रभा' जहँ होति मोहिनी कुंज विकासित ॥

तृतीय आवरण में लताओं के कुंज, निकुंज, बंगला, मण्डप आदि बने हैं।

जहाँ तहाँ महलों में यूथ की यूथ सखियाँ गान कर रही हैं।

मध्य मध्य में कहीं वेदी, कहीं वँगले, कहीं तड़ाग, कहीं तड़ाग के मध्य में वँगले बने हैं। इस प्रकार से विहार वन शोभित है।

*** चौपाई ***

संग लिये सखियन सिय प्यारे। वन विहार के आये द्वारे॥
बागेश्वरी सुनि आनन्द भरि के। लै आई बहु स्वागत करिके

चतुर्थ आवरण पुष्प कुंज मय है। कहीं पुष्प मय फाग चौक, कहीं पुष्प मय गेन्द चौक, कहीं पुष्प मय रास चौक, कहीं पुष्प मय डोल चौक, कहीं पुष्प शृङ्गार चौक सजे हैं।

पंचम आवरण मणि कुंज मय है। इस आवरण में कही माणिक महल, कहीं मर्कत महल, कहीं विद्रुम महल, कहीं मोती महल, कहीं पद्मराग महल, कहीं पुखराज महल है। इस प्रकार से अनेक मणि रत्नों के महल पृथक पृथक बने है। इनमें भाँति भाँति की केलि क्रीड़ाएँ श्री-लड़ैती लाल जू करते हैं।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंज बने है। उनकी दीवालों में विविध युगल विहार के चित्राम अङ्कित हैं।

सातवें आवरण के मध्य में मधु सरोवर है। सरोवर के मध्य में पाटल मणि शैल है। शैल शिखर पर गंधराज नामक विशाल बृक्ष है। उसके नीचे रास मण्डप बना है। रास मण्डप के चारो ओर विविध लता निकुंज पर्यंकादि से सजे है।

सिंहासन मनि जटित सजाई। पिय प्यारी सादर बैठाई॥
करि पूजा भोजन करवाई। बहु विधि व्यंजन स्वाद बताई॥
करि आरति बहु नृत्यहुँ कीन्हीं। भाव बताइ ललन सुख दीन्हीं
चली लिवाइ बाग के कुञ्जन। जहँ बरसत अनन्द के पुञ्जन॥
देखहु लालन बाग निकाई। जनु अनेक अमरावति आई॥
कहुँ लाल मुनियन के पुंजे। आइ पास लगी अति गुंजे॥
कहुँ मोर की पाँती आई। नृत्य करन लागी सुखदाई॥
कहुँ कीर के यूथे सोहैं। पाठ सुनत मुनि जन मन मोहैं॥
कहुँ सारिका मिलि मिलि पुंजें। चोंच मिलाइ लगी अति गुंजे
कहुँ हंस की पाँती आई। मोती चूगन लगी सुहाई॥
कहुँ पारावत यूथें आये। अपनी प्यारिन कंठ लगाये॥
कहुँ कोकिला यूथे बोलें। प्यारी प्रीतम सुख अनुकूले॥
कहुँ पपिहा पिउ पिउ पुकारे। विरहिन कोमल हृदय विदारे॥

विहार वनमागम्य केलि कुंजं च गह्वरम्।
रेमे तत्र चिरं रामः स्वै रामार्पित विग्रहैः॥
(श्री शिव संहिता पृ० ३६। ४६)

अर्थात् श्रीजानकी जीवन जू केलि कुंजों से घनीभूत विहार बन में पधारे। वहाँ आप चिरकाल तक उन मनोरामाओं के साथ विहार करते रह गये, जिनने अपने विग्रह आपको समर्पण कर दिये हैं!

कहुँ पच्छी सब सभा लगाई । दोय दल करि बैठे मन भाई ॥
एक पच्छ प्यारी गुन गावै । दूजे प्रीतम गुन दरसावै ॥
यद्यपि प्रीतम हैं गुन आगर । प्रिया गुनन द्वि जात उजागर
प्रीतम के गुन एको माहीं । प्रिया गुनन नाहिन झलकाहीं ॥

* श्रीप्रीतम पच्छ की उक्ति *

प्रीतम गुन हम कहौं बखानी । मन चित दैके सुनहु सयानी
एकहि बार कहत जो कोई । हौं मैं तोर और नहिं कोई ॥
तौ प्रीतम तन मन से वाको । छोड़त नाहि सत्य ब्रत जाको

* श्रीप्रिया पच्छ का प्रतिवाद *

प्रीतम तो इक बार कहन के । आस रखत हैं शरन नरन के ॥
प्यारी तो यह आशा तिनकी । राखत नाहि सदा पन जिनकी
जो मैं जीव दोष का टोऊं । तो निर्दोष होय नहिं कोऊ ॥
दोषी निर्दोषी वा होई । मम शरनागत आवै सोई ॥
राखौं ताहि प्रान की नाई । यह प्रन सत्य सत्य जगमाहीं ॥
यह सुभाव सुन्दर सुनि सियके । लोचनललित भरे जल पियके
यहि प्रकार पच्छिन की शोभा । निरखत प्यारी प्रीतम लोभा ॥
कहुँ मृगन के यूथ घनेरे । लेहि कुलाँच कुञ्ज चहुँ फेरे ॥
कोइ पीत कोइ सेत लाल हैं । कोइ घूसर कोइ हरित बाल हैं
कोइ दुइ रंग पंच रँग कोई । कोइ चतुर रँग षट रँग कोई ॥

यहि प्रकार बहु रंगन केरे। मृग शावक विचरहिं अतिनेरे॥
आइ चुमत पगदूरि भगत हैं। पुनि चुचुकारत आइ मिलत हैं
पाँयन में मंजीरन बाजैं। सो धुनि कुञ्ज निकुञ्जन गाजै॥
कहीं द्रुमन की पाँति घनेरी। जाति जाति की है बहुतेरी॥
तिन मूलन में मणिमय वेदी।नील पीत रँग हरित सफेदी॥
तामैं वेली बूटे सोहैं। रचना देखि अधिक मन मोहैं॥
लता लिपटि रहि बृच्छन माहीं। प्रीतम अंग प्रिया जस चाही
तापै फूल लगे बहु रंगे। हरित पीत श्वेतादिक संगे॥
तापर भवँर पुञ्ज के पुंजे। छाइ रहे मधुरे सुर गुंजे॥
दृष्टि पड़त मुनियन के अंगे। जागि उठे मनसिज नवरंगे॥
यहि प्रकार प्यारी सँग लालन।कुञ्जन कुञ्ज फिरे बहु वालन॥

यहि प्रकार बहु बाग की, शोभा निरखत लाल।
प्यारी सँग आये तहाँ, जहाँ काम के शाल॥

मणिमय वँगले सुन्दर राजे। शोभा देखि काम मन गाजे॥
ताके मध्य सेज अतिसुन्दर।मनसिज बास कियो जनु अन्दर
ताके ऊपर बिछी सपेती। मानों दूध फेन को जीती॥
तापर राजै राज दुलारे। प्यारी के अंसन भुज धारे॥
प्रीतम प्यारी सुखमें पागी।चहुँ दिसि सखिन झरोखन लागी

प्रीतम प्यारी सुख अनुकूलै । निरखि २ सखियन तन फूलै ।।

यहि विधि से बहु खेल करि, बन बिहार सिय लाल ।
बन कदम्ब को सुरति करि, चले बैठि सुखपाल ।।

।। इति श्रीबिहार बन विहार बर्णन ।।

विविध बिहार विहार वन, विहरत अलि ललि लाल ।
एकान्ती चित चिंत कय, हित वित पाय निहाल ।।
श्रीयुगल बिहारिणी जी ।।

अथ कदम्ब वन बिहार

❀ वार्ता ❀

❀ श्रीकदम्बन का स्वरूप वर्णन ❀

प्रथम कोट में चारों तरफ विद्रुममणि की दीवालें हैं। उसके ऊपर अनेक रंगों की मणियों से रचना बनी है। चारों तरफ चार फाटक हैं। फाटक की रचना अनेक तरह से बनी है। इन में बज्र के किवाड़े लगे हैं, सुन्दर तोरन लगे हैं।

श्री कदम्ब वन के पूरब में श्री नागकेशर वन हैं, दक्षिण में श्री-कलेवा कुंज तथा श्री सभा कुंज हैं, पश्चिम में श्रीविहार बन हैं, तथा उत्तर दिशा श्रीमती सुभगाजी का महल है। यहाँ की वागेश्वरी श्रीमती अनुरागा जी हैं।

कदम्व का अर्थ कदम्ब बृक्ष तथा कदम्ब का अर्थ समूह भी होता है। श्रीहनुमत्संहिता के अनुसार ' वरं कदम्बैः परिवेष्टितं महत्'' अर्थात् वह कदम्ब नामक परमोत्तम वन कदम्ब बृक्षों से आबृत है। अर्थात् प्रथमा-वरण में चारो ओर कदम्ब की सघन बृक्षावली लगी है।

श्री युगल विनोद विलास के अनुसार "कलित कदम्ब विचित्र विपिन बहु बनन वलित वर।'' अर्थात् इस वन के अभ्यन्तर बहुत से मधुर मधुर उपवन बने है। श्री अग्रस्वामीजी के संस्कृत अष्टयाम से भी श्री कदम्ब बन के अभ्यन्तर वहुत से उपबनों का होना सिद्ध होता है। वह उद्धरण आगे लिखा जाता है।

इसी प्रकार पाँचों कोटों की रचनाएँ रंग विरंग की अनेक तरह की मणियों से बनी हैं।

कोटों के पाँचो अन्तरालों में अनेक तरह के कुंज निकुंज बने हैं। उनके मध्य में अनेक जातियों की बृक्षावली चारों तरफ लगी है। उसके मध्य में छोटे छोटे फूलों के बृक्ष लगे हैं। उसके मध्य में मणियों के गमले लगे हैं। उसके मध्य में कहीं बँगले, कहीं वेदी, कहीं चारो कोनों में वेदी, मध्य में नाना आकारों की वेदियाँ, कहीं तड़ाग अनेक रङ्गों की मणियों से अनेक रचना युक्त हैं। कहीं तड़ाग में अनेक रङ्गों के कमल

श्री कदम्ब वन के प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू जी की धारा बहती हैं। धारा के दोनों ओर कदम्ब बृक्षों की सजीली पंक्तियाँ लगी है। प्रत्येक कदम्ब बृक्ष में झूला पड़ा है। सावन हिंडोल उत्सव का वहाँ बिशेष समारोह रहता है। श्री कदम्ब वन के झूले के अनेक पद रसिकार्यों के रचित उपलब्ध हैं। उनमें नमूने के लिये एक पद नीचे उद्धृत किया जाता हैं।

दशरथ राज दुलारे सिया सँगे झूलै हो।
सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो।
ताहि तर झूलैं हिंडोरा दिये गलबहियाँ हो॥
एक ओर जनक किशोरी सखिन सँग झूलैं हो।
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो॥
प्यारी की लट पिया जुलफन झूलत अरझै हो।
अचल रहो 'सखे श्याम' कबहु नहि सुरझै हो॥

खिले हैं। इन कमलों के ऊपर भँवरों के झुण्ड के झुण्ड गूँजार कर रहे हैं। भँवर भी अनेक रङ्गों के हो रहे हैं।

जब सखिन समाज संयुक्त श्रीमहाराजनन्दिनी जू एवं श्री-महाराजनन्दन जू श्रीकदम्ब बन के प्रथम कोट के फाटक पर आये, तब कोट के दरवाजे की रचना देखकर अति आनन्द युक्त हुये।

दूसरे आवरण में बिबिध द्रुमों के पृथक पृथक उपबन बने हैं। श्रीमद् अग्रस्वामीजी के संस्कृत अष्टायाम श्लोक ४१, ४२ में इनकी चर्चा आई है।

"तुलसी पुष्प सौरभ्य नित्योत्सव सुमण्डितम्।
वासन्ती चम्पकाशोक पारिजात महोद्यतम्॥
मालती यूथिकाम्भोज कुन्द मन्दार सेवितम्।
केतकी मल्लिकोद्भासत्कदम्ब तरु मण्डितम्॥"

अर्थात् परम रमणीय श्रीकदम्बबन में श्रीतुलसी एवं विबिध पुष्प बृक्षों से सुवासित, नित्योत्सव से विभूषित, वासन्ती श्री से सम्पन्न, चम्पक अशोक, पारिजात, मन्दार, कदम्ब आदि बृक्ष तथा मालती, यूथिका, कुन्द, केतकी, मल्लिका आदि की लताएँ विलस रही हैं। इन सबों के उपबन पृथक २ समझना चाहिये।

तीसरे आवरण में बिबिध लता कुञ्ज बने हैं। ऊपर के उद्धरण में जितने बृक्षों के नाम आये हैं, उनके उपवन दूसरे आवरण में हैं तथा जिन लताओं के नाम गिनाये गये हैं, उनके कुंज तृतीय आवरण में समझना चाहिये। इनमें कहीं कहीं तड़ाग, बावली आदि बिबिध रमणीक जलाशय बने हैं।

श्रीयुगलकिशोर जू के वहाँ पहुँचते के साथ सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर अपनी सखियों के यूथ के संयुक्त कोट के भीतर के कुंज से श्रीवागेश्वरीजी आईं। श्रीप्रिया प्रियतम जू को प्रणाम किया। पुनः सर्वेश्वरी श्रीचन्द्र-कला जू को प्रणाम किया, तत्पश्चात् सभी सखियों से मिलीं।

इस प्रकार से श्रीलड़ैतीलाल जू को पट पाँवड़े देती हुई, अपने कुंज को लिवा चलीं। जैसे मतवाला गज अपनी करिणियों के संयुक्त चले, इस प्रकार चले।

किवदन्ती है कि कदम्ब वृक्ष सुहागिनी कामिनी के चरण स्पर्श करते ही फूल उठताहै। हमारे सुहाग भाग से इस बन को प्रफुल्लता होती है, ऐसा जानकर श्रीप्रिया जू नित्य एक रूप से इसी बन में प्राण प्रिमतम जू के सहित शयन सुख लेती हैं। यथा—

कदम्ब कानने रम्ये लता मण्डप मध्यगे।
मत्त भ्रमर गुञ्जार कोकिला रव संकुले ॥ ४३ ॥
वर्हालि सारिका श्रेष्ट शब्दिते शुक कूजिते।
वृक्षगुल्म घनच्छाया कुञ्जपुञ्ज मधुस्रवे ॥ ४४ ॥
नृत्यन्मयूर निकरे नाना पक्षि विराजिते।
सरयू जल कल्लोल सङ्ग मारुत सेविते ॥ ४५ ॥
प्रफुल्ल कमल प्रख्ये मरन्दा मोद मेदुर।
तत्र प्रसून शयने समा सीनान्तु जानकीम् ॥ ४६ ॥

(श्रीअग्रस्वामी कृत संस्कृत अष्टयाम)

बागेश्वरीजी ने श्रीयुगल सरकार को सिंहासन पर विराजमान करा कर, षोडशोपचार से पूजन किया। आरति उतारकर नृत्यगान किया। तत्पश्चात् सखियों के संयुक्त श्री-प्रिया प्रियतम जू को नाना प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। अतर लगाया। पान की बीटिका दी।

अर्थात् परम रमणीय श्री कदम्ब बन है। वहाँ लता मण्डप की शोभा का वर्णन कर रहे हैं। वहाँ पुष्पों पर मनवाले भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। वह बन प्रदेश कोकिल काकली तथा मयूर आदि सारिका के कलरव तथा सुग्गों के कूजन से मुखरित हो रहा है। समीप में बृक्ष गुल्मों की सघन छाया है। उनसे मधु स्राव हो रहा है। वहाँ मोर नाच रहे हैं। नाना पक्षी फुदकते फिरते हैं।

एक सरयू नहर वहाँ भी प्रभाहित हो रही है। उस प्रवाह में मिल कर पवन अठखेलियाँ कर रहा है। वहाँ स्निग्ध मकरन्द पूर्ण प्रफूल्ल कमल के समान पुष्प शय्या पर श्रीजनकेन्द्र नन्दिनी जू विराजी हैं।

चतुर्थ आवरण में द्वादश मणिमय सेवा कुंज बने हैं।

पाँचवे आवरण के मध्य में सुगन्धित जल से परिपूर्ण सरोवर, के मध्य में विद्रुम मणिमय पर्वत शिखर पर सुविशाल कदम्ब बृक्ष है। उसके नीचे रासवेदिका बनी है।

पुनः श्रीवागेश्वरीजी सखियों के संयुक्त दोनों सरकारों को कुंजों की रचना दिखाने लगीं। कहीं तरह तरह के फूलों की क्यारियाँ बनी हैं। कहीं तरह तरह के फूलों के बंगले बने हैं। कहीं लताओं के बँगले बने हैं।

श्री कदम्ब वन विहार वर्णन श्रीयुगल विनोद विलास के दूसरे अध्याय में छन्द ४ से १५ तक पढ़िये। यहाँ स्थानाभाव से उद्धृत नहीं हो सका।

कबहूँ जाय कदम्ब बन, तोरत फूल कदम्ब।
मारत गेन्द निहारि उर, वचत सुहग अवलम्ब॥
वचत सुहग अवलम्ब, लंब प्रिय प्रेम पिछानै।
मुसुकनि घूंघट ओट चोट लगि भृकुटी तानै॥
कबहूं कुच रस ख्याल सैन पिय लखि कर जबहूं।
'प्रेमप्रभा' वलि जाय मोहिनी भावन कबहूँ॥ १॥

ठाढ़ी नवल कदम्ब तर, अँगुरी कर धरि डार।
पँखुरी मनहुँ कदम्ब की, सहत न मुंदरी भार॥
सहत न मुदरी भार, भार यहि ते रखि डारैं।
जगमगाति नग जोति होति सुखमा की बारैं॥
पवन लगे तन खुलत वसन उड़ि रहे रस बाढ़ी।
'प्रेमप्रभा' सुकुमारि मोहिनी बन तन ठाढ़ी॥
बन कदम्ब दम्पति रमत, सम्पति रहस कदम्ब।
श्री मानस नन्दिनि सुतट, रसिक संत अवलम्ब॥

(श्रीयुगल विहारिणिजो)

कहीं मोर नृत्य कर रहे हैं। कहीं पक्षी परस्पर कूज रहे हैं। कहीं दीवालों में नाना तरह के चित्राम बने हैं। इस

तौ तत्र दृष्ट्वा विपिनं मनोहरं वरं कदम्बैः परिवेष्टितं महत्।
यन्मूल वेदी मणिमाल संयुता हेमैर्महार्हैः परितः प्रसन्ना ॥२॥

नाना सुगन्धानि वनानि कानि प्रफुल्लतानीह समं समंतात्।
द्विरेफ माला शुभ संयुतानि पिबन्तिमाध्वीक रसानि सर्वतः॥३

पतन्ति मत्ता रजसारुणाङ्गाः नयन्ति केचित्कुसुमाकरेषु।
क्वचिन्मयूराः परिनृत्ययन्ति गायन्ति कीराः क्वचिद्प्रेमयाः ॥४॥

अन्ये द्विजाः जाम्बुनदाङ्गनस्थाः निरक्षयन्ते रघुवंश नाथम्।
ध्यानेक्षणाः सद्य निमेषणाश्च चित्तार्पिताश्चिन्मनसोवभूवुः ॥५॥

(श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी द्वितीय अध्याय)

अर्थात् श्री युगल सुकुमार मनहार जू ने वहाँ पधार कर परम मनोहर बन देखा। वह कदम्ब बृक्षों से घिरा हुआ था। बृक्षों के मूल में अमूल्य स्वर्ण एवं मणि गण की वेदिकाएँ बनी थीं। वह सब ओर से सुख दायिनी थीं।

जलाशयों में सुगन्धित जल भरा था। उनमें कमल खिले थे। सब तरफ मकरन्द पान करते हुये भ्रमर पंक्ति गूज रही थी। भ्रमर पुष्परज से रंग कर अरुण हो रहे थे। रसपान से मत्त होकर गिर जाते थे, पुनः अन्य पुष्पों पर जा बैठते थे। कहीं मयूर नाच रहे थे। कहीं सुग्गे गा रहे थे।

प्रकार से अनेक तरह की शोभा देखते श्रीयुगलविपिन बिहारी श्रीनागकेशर बन को चले ।

॥ इति श्रीकदम्ब बन विहार ॥

अन्य पक्षी स्वर्णमयी भूमि पर स्थित होकर श्रीजानकीकान्त जू की मुख माधुरी अवलोकन कर रहे थे । उनके अर्धोन्मीलित नयन ध्यान मुद्रा बता रहे थे । अपने चित्त को चितचोर कोशलकिशोर को सुपुर्द कर दिया तथा चिन्मयानन्द में छक गये ।

❀ अथ नागकेसर बन विहार ❀

(वार्ता)

❀ श्री नागकेसर बन वर्णन ❀

— ❀ —

प्रथम कोट में पद्म राग मणि की रचना बनी है। यह बन पाँच आवरण वाला है। पाँचों परकोटे भिन्न २ रंगों की मणियों से रचना युक्त हैं। कोटों के मध्य भागों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

"चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः।" इत्यमरः

अर्थात् नागकेसर के चाम्पेय केसर, और काञ्चनाह्वय नामान्तर हैं। नागचंपा और बज्रकाठ भी इसे कहते हैं। इसमें श्वेत रंग के सुगन्धित पुष्प खिलते हैं।

श्री नागकेसर बन के पूरब सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू का महल है। इनके दक्षिण में श्री श्रृङ्गार बन हैं। पश्चिम में श्री कदम्ब बन हैं तथा उत्तर श्री सुभगाजी के महल का विस्तार है। श्रीमती कृष्णा जी यहाँ की बागेश्वरी हैं।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू धारा है। धारा के दोनों ओर नागकेसर बृक्षों की सजीली पंक्तियाँ लगी हैं। बृक्ष ही कहीं बंगलाकार, कहीं मंडपाकार बने हैं।

द्वितीय आबरण में लता कुंज, तृतीय में पुष्प कुंज तथा केसर क्यारियाँ चतुर्थ में द्वादश सेवा कुंज हैं।

जब कोट के फाटक पर दम्पति की अवाई हुई, तब श्रीबागेश्वरीजी नगारे के शब्द सुनकर आईं और दरवाजे से पूर्वोक्त भाँति से सत्कार कर, उन्हें अपने कुंज में लिवा लाईं। पूजन करके अनेकों तरह के व्यंजन भोजन कराये।

पञ्चम आवरण में केसर नीर से परिपूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में केसराचल पर्वत है। पर्वत शिखर पर कल्पवृक्ष है। उसकी छाया में रास वेदिका बनी है।

ययावन्यद्वनं यत्र नागकेसर मण्डितम्।
यस्याविदूरे सरयू तीरं परम पावनम्॥
दृष्ट्वा सर्वाः प्रहृष्टात्मा सख्यः प्रेम पूरिताः॥
श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी २।३६, ४०)

अर्थात् श्री युगल किशोर जू तत्पश्चात् दूसरे वन में पधारे, जहाँ नागकेशर के बृक्ष लगे हैं। इस वन के समीप ही परम पावन श्री सरयू पुलिन हैं। इसे देख सबके सब प्रसन्न हो गईं तथा सखियाँ तो प्रेम में निर्भर हो गईं।

"करि केसर सुभ नाम सघन कानन किसोर कल।
ललित लोनाई लाल लसत जेहि मध्य मधुर भल॥
बन समीप सुचि स्वच्छ सरस सोभित सरजू जल।
दरस परस पय पान करत हिय हरत मोह मल॥
प्रवल प्रेम प्रिय धाम माँझ बिश्राम पाय अति।
गावन लगी ललाम ललन रस चरित रमित मति॥
नृत्यहिं नेह निचोल नवल अंगन प्रति पहिरे।
मगन मधुर आनन्द सुधा सागर गुन गहिरे॥

तत्पश्चात् दोनों सरकार कुंज निकुंजों की रचना देखने लगे। कहीं बैठकर चौसर खेलते हैं, कहीं गेन्द खेलते हैं, कहीं चकई खेलते हैं, कहीं पतंग उड़ाते हैं, कहीं पक्षियों को लड़ाते हैं, कहीं आँख मिचौनी खेलते हैं, ❀ कहीं दम्पति प्रेम के भार से परस्पर लपट रहते हैं।

इस प्रकार से अनेक खेल करते तथा अनेक कुंजों की रचना देखते अनङ्ग बन को चले।

॥ इति श्री नागकेसर बन बिहार ॥

कामिनि काम प्रकास करन कौतुक कलाप रचि।
सियवल्लभ निज नेह छको सौन्दर्य सार सचि॥
(श्रीयुगल विनोद विलास २।८३-८६)

❀ इन खेलों के लिये तीसरे आवरण में पृथक पृथक चौक बने हैं एक एक जाति के पुष्प तथा केसर की एक एक क्यारी हैं। प्रत्येक क्यारी में एक एक क्रीड़ा चौक हैं। ऊपर जितने नाम गिनाये गये हैं, उनसे भी अधिक यहाँ नाना प्रकार के खेल चौक बने हैं।

"बैठे केसर नाग वन, लेपत केसर अंग।
सरके वसन सिंगार तन, केसर हो तन जंग॥
केसर हो तन जंग ढङ्ग आपनी लगावैं।
चावैं चौगुन चढ़ें उघार अंगन रस पावैं॥
रवि हित होत अधीर वीर पिय मदन सुऐंठे।
'प्रेम प्रभा' मोहिनी सुनागकेसर वन बैठे॥
विपिन नागकेसरि न सार, युगल विलास प्रकास।
द्वादश वन मन रमन करु, लहु मुद द्वादश मास॥
(श्रीयुगल विहारिणिजी)

❀ अथ अनङ्ग बन बिहार ❀

वार्ता)

❀ श्रीअनङ्ग बन स्वरूप वर्णन ❀

प्रथम कोट में श्याम मणि की दीवाल है। उसमें अनेक रंगों की मणियों से बेलि बूटे, झरोखे जालियों की रचनाएँ बनी हैं। यह बन सप्त कक्ष करके युक्त है। सातों कोटों की रचना भिन्न भिन्न मणियों से बनी है।

मनोज भोग सम्भवं कुमार राम वैभवं,
अलौकिकादलौकिकं निबोध शौनकाशु वः।
इदं मुदं तनोतु नो मयोदितं तु यत्तु वः,
करोतु लोक मंगलं रसादि भाव संकुलम् ॥
(श्रीबृहत्कौशल खंड ५।१३१)

अर्थात् सूत जी कहते हैं कि हे शौनक, आप शीघ्र ऐसा जान लें कि श्रीकौशलेन्द्र कुमार जू के मनोज भोग पूर्ण जो भी वैभव हैं, सब दिव्यातिदिव्य हैं। मैंने श्रृङ्गारादि भाव से सम्पन्न जो श्री जानकी जीवन जू की विहार लीला सुनाई है, वह हम लोगों को परमानन्द प्रदान करने वाली तथा लोक मंगल करने वाली होवे।

तात्पर्य यह है कि पाँचभौतिक अधमातिअधम स्थूल शरीर धारियों के विषय सुख दुर्गन्ध पूर्ण, घृणास्पद एवं दुःख परिणामी हैं, किन्तु श्री-

चारों तरफ चार चार दरवाजे सब कोटों में बने हैं। उनके मध्य मध्य वाले कुंजों की दीवालों में अनेक तरह की केलियों के चित्राम बने हैं। किसी किसी कुंज की दीवालों में तरह तरह के मनुष्यों के चित्राम बने हैं। दिवालों में किसी

जानकी बिहारी जू की दिव्य मनोजरसमयी विहारलीला शाश्वत दिव्यानन्द प्रदान करने वाली एवं अमृत फल देने वाली है।

श्रुत्वा कथामिमां निन्देन्मातु र्योनि मिवाधमः ॥

(श्रीशिव संहिता २०।१२०)

अर्थात् जो लोग बुद्धिवाले हतभागी व्यक्ति ऐसी दिव्य भगत्कथा की निन्दा करेंगे, वह दुर्बुद्धि अपने मातृ अंगों की निन्दा करने वाले समझे जायेंगे।

श्री अनङ्ग बन से पूरव सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू के महल का विस्तार हैं, दक्षिण श्री शृङ्गार बन हैं, पश्चिम श्री सभाकुंज तथा श्री-भोजन कुंज हैं, तथा उत्तर श्री नागकेशर वन हैं। यहाँ की बागेश्वरी श्रीमती रति मंजरी जी हैं।

प्रथमावरण के मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा में मीनादि जलचरों तथा हंसादि जल पक्षियों के जोड़े परस्पर में क्रीड़ासक्त दृष्टिगोचर होते हैं। धारा में लाल कमल और नील कमल खिले हैं। ये मंदन के क्रमशः मोहन और उन्मादन सर हैं। धारा के उस पार मंजरियों से भरे आम्र बृक्षों की सघन सजीली पंक्तियाँ लगी हैं। रसाल बृक्ष के नामान्तर कामायुध, काम फल, मन्मथानन्द एवं मदनालय भी है। इसी पर बैठ कर आम मंजरियों के शोषणास्त्र द्वारा मदन इस बन में स्थित

स्थान पर नायिका नायक परस्पर परिरम्भण किये हैं। किसी जगह पर नायिका नायक के साथ पुरुषायित आसन सजे हुई हैं। कहीं दोनों परस्पर नागर बन्ध से खेल रहे हैं, कहीं चक्र-बन्ध से खेल रहे हैं। इस तरह से अनेकों आसन, अनेकों बन्ध-वाले कोकोक्त रीति से चित्राम बने हैं। बतौर प्रत्यक्ष दर्शित होते हैं। जिनके देखते ही मदनाग्नि प्रज्वलित हो उठता है। किसका अख़्तयार है कि सम्हाल सके?

इसी प्रकार कुंजों में, बंगलों में, वेदिकाओं में, कहीं पक्षियों की, कहीं मृगों की जाति जाति के भेदों से जोड़े अनेक भेदों से रति कल्लोल करते हुये चित्राङ्कित हैं। लतायें वृक्षों के साथ लिपट रही हैं। वृक्षों से मद टप टप चू रहा है।

कामी कामिनियों को प्रपीड़ित करता रहता है। रसाल वृक्ष पर बैठी कोकिला मारु राग का तान छेड़ कर मदन वीर को प्रोत्साहित करती रहती है।

धारा के दोनों ओर पुलिन पर चमेली पुष्प की पंक्ति है। चमेली मदन का स्तंभन सर होती है। धारा में तैरती हुई मीन मानो मीनकेतु की विजय वैजयन्ती फहरा रही है।

धारा के इस पार पुष्पवती लताओं से समालिंगित सघन अशोक द्रुमावली है। इन्हीं के कुंज, निकुंज, बंगले, मण्डप बने हैं। अशोक पुष्पों का संतापनास्त्र प्रयोग कर, मदन इस बन में स्थित व्यक्तियों के विग्रह में कामाग्नि प्रज्वलित करता रहता है। उस समय कोई भी नायिका हो, श्रीरघुचन्द जू से मिलने को विरहातुर हो उठती हैं। यथा-

स्वयं पक्षी जहाँ के तहाँ रति कल्लोल परस्पर जोड़े मिल कर, कर रहे हैं। तड़ागों में अपनी करेणुओं के साथ मदान्ध मतंग कल्लोल कर रहे हैं। मानों काम की राजधानी यही है। इस तरह से श्रीअनङ्ग वन की विचित्र रचना बनी है।

पिय पास कोउ पहुंचावो रे।
पंच वान अंग अंग वेधित हिय, कोउ श्याम चुम्बक लै आवो रे।
जहर भरे सर तन मन दाहत, कोउ माह वदन सो जिआवो रे।
अबहीं चलत नरी फेरत न मिलत सही, पछिताय रही कछु हाथ न आवोरे
'नवल विहारी प्रिया' चन्द्रकला जू, पिय प्रियतम सों मिलावो रे।

दोनों पार के द्रुम बनों में बिचरते मृग जोड़े परस्पर क्रीड़ासक्त रहते हैं। वहीं दशा द्रुम डालों पर बैठे पक्षी जोड़ों की है। प्रथमावरण में वसन्त का नित्य निवास है। यहाँ श्रीयुगलकिशोर जू डोलोत्सव बिहार करते हैं।

द्वितीय आवरण के कोट महल वाले दीवालों पर साम्प्रयोगिक प्राक् व्यापारों के सुललित चित्र अङ्कित हैं। नायक नायिका के सम्मिलन भेद। १ स्पृष्टक, २-विद्धक, ३-उद्धृष्टक, ४-पीड़ितक, ५-लतावेष्टित, ६ वृक्षाधिरूढ़, ७-तिलतण्डुल, ८ क्षीर नीरक, ९-उरूपगूहन, १०-जघनोपगूहन, ११-ललाटिका, और १२-संवाहन आदि चित्र इस कला से अंकित हैं मानों प्रत्यक्ष दृश्य हों।

द्वितीय आवरण के अन्तराल में ग्रीष्म ऋतु का नित्य निवास है। अतः उस ऋतु के सुखदायक उपकरण यहाँ सजे हैं। फूल बँगले, मोतीमहल खसखाने, तहखाने आदि विविध इत्रों के फुहारों से संयुक्त ठौर ठौर पर

❋ चौपाई ❋

चले सियापिय सखिनअनेका। काम बागके निरखनओका।।
पहुँचे कोट द्वार पै जाई । सखी दुन्दुभी दई बजाई ।।
शब्द गये महलन के भीतरि । दम्पति लेन आइ बागेश्वरि ।।
करि पूजा सनमान बड़ाई । पट पाँवड़ दै चली लिवाई ।।
लै आई निज कुंज अँगनाई । पिय प्यारी आसन बैठाई ।।
सखियन मंडल सन्मुख सोहै । सिंहासन दम्पति मुख जहै।।
विविध भाँति भोजन करवाइ । पान मसाले अतर सुंघाई ।।

सजे हैं । बीच बीच में प्रफुल्ल पङ्कजों से परिपूर्ण पुष्करिणियाँ बनी हैं । कमलों पर मदन दूत भ्रमर गुंजार के व्याज से मनोज मन्त्र का पाठ कर रहे हैं। त्रिविध पवन कामाग्नि का सहायक बना है।

तृतीय आवरण के कोट दीवालों पर विविध वोश प्रयोग के चित्र अङ्कित हैं । १-निमित्तक, २-स्फुरितक, ३-घट्टितक, ४-अवपीड़ितक, ५-सम, ६-पीड़ित, ७-अश्चित, ८ मृदु, ६-रागदीपन, १०-चलितकम्, ११-प्रतिवोधक, १२-त्रिपीडत, १३-भ्रमित, १४ उल्लसितक, १५-संहतोष्ठ और १६-वैकृतक आदि भेद वाले भाव व्यंजक चित्र कलात्मक ढंग से अङ्कित हैं ।

इस आवरण में तमाल एवं कदम्ब द्रुमों के कुंज, निकुंज, बंगले आदि बने हैं । यहाँ पावस का नित्य निवास रहता है। अतः हिंडोल विहार की प्रधानता रहती है। बीच बीच के कासारों में नौका जल विहार होता है ।

बागेश्वरि बोली मृदुबानी । सुनिये प्रीतम प्रिया सयानी ॥
चलिये प्यारे बाग दिखाऊं । जेहि देखत कुसुमेषु जगाऊं ॥
सुनि सखि बचन उठे रघुनंदन । प्रिया अंस दीन्हें भुजबंधन॥
प्रथम गये मणियन के कुञ्जन । देखे विविध चित्र सुखपुञ्जन
निधुवनविधि बहुभाँतिन नागर। नागरि संग मिले छविआगर
कहुँ२सुन्दर मिलि दोउजोरी । प्रणय कलहवश करभककोरी

चौथे आवरण के कोट दीवालों पर । १–आच्छुरितक, २–अर्ध-चन्द्र, ३–मँडल, ४–रेखा, ५–व्याघ्र नख, ६–मयूरपदक, ७–शशप्लुतक और ८–उत्पलपत्रक भेद के नखर बिलेखन चित्राङ्कण दर्शाये हुये हैं । इसी प्रकार से दशनच्छेद्य के भी १–गूढ़क, २–उच्छूनक, ३–विन्दु, ४–विन्दुमाला, ५–प्रवासमणि, ६–मणिमाला, ७–खण्डाभ्रक, और ८–वाराह चर्वित आदि नाम वाले विविध भेद चित्रित हैं ।

इस आवरण में पुष्पोद्यान के बीच बीच विविध लता निकुंज, लता मंडप, लता बंगले आदि बने हैं । यहाँ शरद का नित्य निवास रहता है ।

पाँचवे आवरण की दीवालों पर १–उत्फुल्लक, २–विजृम्भितक, ३–इन्द्राणी, ४–संपुटक, ५–पीडितक, ६–वेष्टितक, ७–वाड़वक, ८–जृम्भितक, ९–अर्ध पीड़ितक, १०–वेणु दारित, ११–शूलाचितक, १२–कार्कटक, १३–परावृत्तक आदि संवेशन कालीन विविध योगासन के चित्र अङ्कित हैं ।

कहूँ नवोढ़ा नागरिका कै । पिय फुसलाय रहे बहु दै के ॥

* दोहा *

आये लता निकुंज में, जुगल दिये गलबाह ।
लता छटा को देखि के, करत प्रसंसा नाह ॥
चहुँ दिसि लता निकुञ्जमें, सोभा देखि विसाल।
पुनि आये द्रुमकुञ्जमें, सखिन संग सियलाल॥

इस आवरण में मरकत, माणिक्य, पद्मराग, वंशच्छद, स्यमंतक, कौस्तुभ, प्रवाल आदि विविध मणि रत्नों के पृथक पृथक कुञ्ज बने हैं । इसीसे इस आवरण का नाम मणि कुञ्जावरण है। इन विविध कुञ्जों की दीवालों पर भी १-स्थिर २-अवलम्बितक, ३-धेनुक, ४-संघाटक, ५-गोयूथिक आदि असंख्य प्रकार के चित्ररत के योगासन चित्राङ्कित है । यहाँ हेमन्त और शिशिर का नित्य निवास है।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुञ्ज बने हैं। सर्वत्र अनंगोत्सव के उपयुक्त भोगैश्वर्य भरे पड़े हैं।

सातवें आवरण में मधुरासव परिपूर्ण सरोवर हैं। सरोवर के मध्य में श्याममणिमय मदनाचल है । शैल शिखर पर सन्तानक बृक्ष है। उसके नीचे रास वेदिका बनी है । रास चत्वर के चतुर्दिक पर्यंकादि से सुसज्जित विविध निकुञ्ज बने हैं। यहाँ शरद्मिश्रित बसन्त का नित्य निवास है।

द्रुमन बने महलें अति सुन्दर। द्रुम के बंगले बने मनोहर ॥
द्रुम ही के गमले सुठि सोहैं। द्रुमनहि साज सजे सब जो है॥
यहि विधि से द्रुम कुञ्ज विहारी। फूल कुञ्ज आये पिय प्यारी
फूलन महल अटा फूलन के। कलस कंगूरे सब फूलन के ॥
फूल चन्दोवा फूलन झालर। फूलन मय सब रचना आगर॥
फूल निकुञ्ज बने बहुतेरे। फूलन सेज बिछी चहुँ फेरे ॥
बहुत कहौं का कथा बड़ाई। फूलन मय सब साज सजाई ॥
तापर बैठे प्यारी प्यारे। करत विनोद विलास अपारे ॥

"पावस समय अनंग वन, मनु अनंग अँग धार।
विहरन जंग उमंग भरि, नैन अनंग पसार॥
नैन अनंग पसार चार ह्वै चतुर लरत है।
भिरे अंग निज दाव हेरि रति खेत अरत है॥
झरझरात घनस्याम सीय दामिनि दुति छावस।
'प्रेम प्रभा' दोउ वीर मोहिनी मूरति पावस॥"

वन अनंग सुविदेहजा, अलि रघुनन्दन संग।
विलसत विहँसत अंग अंग, वारिये अमित अनंग॥

(श्रीयुगल विहारिणीजी)

यहि रसके अधिकार न औरन यह रस तो सखियन के जीवन
सखियन निरखत हैं चहुँओरी। पिय प्यारी रस छकि भइबौरी
काहू को सुधि नहि तन मनकी। प्रिय प्यारी रसमें दिये बुरकी
यहि सुखको का करौं बखानी। 'मोद' पुलक तन मन रहसानी

करी केलि बहु भाँतिसे, प्यारी प्रीतम लाल।
सखि दूजे सिंगार करि, सिंहासन बैठाल॥
बहुविधि व्यंजन साजिके, कुंजेश्वरि बहुथाल।
धरि आगे सिय लाल के, लगी पवावन बाल।
भोजन विविध कराइके, बीरी ललित सँवार।
पिय प्यारी मुख में दई, लागी करन बयार॥
वन अनंग के बीच में, विविध भाँति करि केलि।
वन श्रृङ्गार की सुरति करि, चली सखिन सँग रेलि॥

॥ इति श्री अनंग वन विहार वर्णन ॥

"सुन्दर स्यामल अंग लखि, गढ़न निराली ढ़ंग।
मैन मैन कहि लाज बस, तजि अंग भयो अनंग॥
तजि अंग भयो अनंग अंग पिय लखि सरमायो।
ह्वै अनंग हरि रूप भूप जग जोति समायो॥
रति गुमान गति भंजि रामहूं के चित वित्त हर।
'प्रेमा प्रभा' है गोरि मोहिनी सिय अंग सुन्दर॥

❀ अथ श्रृङ्गार बन बिहार ❀

❀ वार्ता ❀

❀ श्री श्रृङ्गार बन स्वरूप बर्णन ❀

प्रथम कोट में चारो तरफ इन्द्र नील मणि की दीवालहै। उस पर अनेक रंगों की मणियों की रचना है।

सात आवरण वाले श्री श्रृङ्गार बन हैं। सातों कोटों में चारों तरफ चार चार दरवाजे हैं।

श्री श्रृङ्गार बनके पूरब श्रीमती श्रीप्रसादाजी का महल है, दक्षिण श्री बिचित्र बन हैं। पश्चिम श्री दिवस शयन कुंज एवं श्री केलि कुञ्ज हैं, तथा उत्तर श्री अनङ्ग बन हैं। श्रीमती मदन मोहिनीजी यहाँ की वागेश्बरी हैं।

श्री श्रृङ्गार बन में उटवन मज्जन से लेकर सब प्रकारों से षोडश श्रृङ्गार सजाये जाते हैं। यथा—

"पुनि प्रभु गे श्रृङ्गार बन माहीं। नख शिख भूषन सुमन कराहीं ॥"

(रसिकेश श्रीकरुणासिन्धुजी की अष्टयाम पूजा)

"करत श्रृङ्गार श्रृङ्गार बन" श्रीसियामोहिनी शरणजी।

इस बन के बृक्षों में श्रृङ्गारोचित भूषण वसन फलते हैं। यथा—

"विपिन श्रृङ्गार श्रृङ्गार नव, फलित ललित लावन्य।
यथा योग अंग अंग ही, रचिये होय अनन्य ॥"

(श्रीयुगल विहारिणिजी)

कोटों के अन्तरालों में अनेक रंगों के कुंज बने हैं। किसी कुंज में हरित, पीत, नील, श्वेत मणियों से रचनाएँ बनी हैं। किसी कुंज में पद्मराग मणि के ऊपर पीत, हरित, श्याम मणियों से अनेकों बेलि बूटे, झरोखे जाली आदि बने हैं।

कुवेर के चैत्ररथ नामक बन के बृक्षों के पत्तें ही बसन भूषण के रूप में पल्लवित होते हैं तथा दिव्य नारी ही फल के रूप में प्रगट होती है। यह प्रसंग श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड के ६१ सर्ग के श्लोक १९ में आया है। महर्षि श्रीभरद्वाज ससमाज श्रीभरतलाल जू का अपने आश्रम में आतिथ्य करने के लिये चैत्ररथ का आवाहन करते हुये कहते है:—

"बनं कुरुषु यद् दिव्यं वासोभूषण पत्रवत्।
दिव्य नारी फलं शश्वत् तत्कौवेर मिहैव तु॥

जहाँ चैत्ररथ के बृक्ष भूषण वसन प्रगट करते हैं, तहाँ श्रीसाकेत श्रृङ्गार बन के लिये कौन आश्चार्य है।

दिव्य देश के द्रुमलतादि सभी सच्चिदानन्द एवं कामद हैं। श्री-लड़ैती लाल जू की रुचि के अनुसार ही बरतते हैं। अतः इनमें श्रृङ्गारो-पकरण फलना आश्चर्यजनक नहीं है। प्रकृति मण्डल में भी श्रीधनाजी के तुम्बे गेहूं से भरे फले थे।

प्रथम आवरण के मध्य अन्तराल में श्री सरयू धारा बहती है। धारा के दोनों ओर फल फूलों के विविध बृक्षों के कुंज, निकुंज, बंगले

कुजों के मध्य में चारो तरफ से प्रान्त भाग में कहीं छोटी छोटी वृक्षावली लगी है, कहीं बड़ी बड़ी बृक्षावली लगी है। उन बृक्षों में से एक एक बृक्ष में कई तरह के फल, कई तरह के फूल लगे हैं। हरित, पीत, अरुण, श्वेतादि भेदों वाले लगे हैं।

किसी कुंज में कृत्रिम बृक्षावली लगी है उन पर कृत्रिम लताएँ चढ़ रही हैं। उन में नाना तरह के कृत्रिम फूल लगे हैं, तरह तरह के कृत्रिम फल लगे हैं। उन पर जाति जातिके कृत्रिम पक्षी बैठे हैं। पवन के प्रसंग से परस्पर कूज रहे हैं। कृत्रिम भँवर गूँज रहे हैं।

मण्डपादि बने हैं। इस आवरण में श्री प्रियतम जू अनुकूलनायक बन श्रीप्रिया जू के साथ तथा दक्षिण भेद से अमित रूप बना कर प्रत्येक नायिका के साथ उबटन मज्ज्जन विहार करते हुये, पारस्परिक अंग स्पर्श का रसानुभव करते हैं।

दूसरे आवरण में केसर क्यारी, तथा कंकोल, जायफल, श्रीखण्ड, हरिचन्दन आदि के द्रुम लगे हैं। इस आवरण में नायक नायिका परस्पर में अंग राग लगाने के ब्याज से स्पर्श सुखानुभव करते हैं।

तीसरे आवरण में पुष्पों के गुल्मलता, द्रुम सजे हैं। इनके फूलों को तोड़ने से पुष्पों के विभिन्न वसन भूषण तैयार निकलते हैं। पुष्पोद्यान के बीच कहीं फूल बंगले, कहीं फूल मंडप, कहीं फूल मय फाग चौक, हिंडोल चौक, गेन्द चौक आदि क्रीड़ा स्थल बने हैं। यहाँ सखियों के सहित श्री लाड़िली लाल जू पुष्प शृङ्गार धारण कर विविध क्रीड़ाएं करते हैं। यथा–

मध्य भाग में कहीं मणियों की वेदिका है। कहीं चारों कोणों में वेदिकाएँ तथा उनके मध्य में बंगला है। कहीं चारों कोणों में वेदिकाएँ तथा मध्य में भी वेदिका ही है।

हिंडारे झूलत कौसल चन्द ।
बाजहि बाजन मधुर गान ध्वनि, दसो दिसि होत अनन्द ॥
सरजू तीर सुभग सिंगार बन, ललित परन फल फूले ।
गुंजहि भ्रमर मधुर स्वर कोकिल, बोलहिं प्रिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिंडोरा, लसत फूल मय डोरी ।
फूलन के जुग खंभ मनोहर, रचि पचि मदन सच्यो रीं ॥
फूल मुकुट पट लसत लाल के, फूलन की सिय सारी ।
नख शिख लौं फूलन के भूषन, दंपति अंग सँवारी ॥
फूल तरंग उठत सरजू की, फूल बरषि घन धानी ।
'रामचरन' सखि सब श्रृङ्गार किये, फूल गान मय बानी ।

देखो सखि, आवत रास बिहारी ।
सरजू तीर श्रृङ्गार विपिन ते, अति अनूप छबि न्यारी ।
.... ॥
संग सखी सोहैं अलबेली बनी ठनी छबि कारी ।
सुमन सिंगार किये नख शिख लौं, निज कर श्याम सँवारी॥
प्रभु आगे सखि खेलत आवैं, फूलन गेन्द उछारी ।
.... ॥

यहाँ ध्यान देने की बात है कि श्यामसलोने जू ने अमित्त रूप प्रगटाकर प्रत्येक सखी का सुमन श्रृङ्गार अपने कर कंजों से किया है।

कहीं मध्य भाग में वापी है, कहीं तड़ाग है। उनमें चारों तरफ मणियों की सीढ़ियाँ बनी हैं। उनके तटों पर चारों कोणों में बंगले बने हैं। कहीं मध्य भाग में केवल फरश ही है। उन भूमिकाओं में रंग रंग मणियों के फूल बने हैं। इस प्रकार सातों आवरणों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं।

इस प्रकार श्रृङ्गार बन का रूपक संक्षेप मे वर्णन किया, यथा भावानुसार।

चौथे आवरण में मोतियों के कुंज, निकुंज, महल, बंगले, मंडप आदि बने हैं। मोती के ही द्रुम लता लगी हैं। जिनमें मोती जटित अमोल पोशाक एवं मोतियों के भूषण फलते हैं।

पाँचवे आवरण के मणियों के कृत्रिम बृक्षों में मणि जटित भूषण फलते हैं। मणियों की जरतारी पोशाकें भी फलती हैं। मणियों के ही महल, मंडप, कुंज, निकुंज तथा विविध क्रीड़ायों के चौक बने हैं।

छठे आवरण में द्वादश सेवा कुंज हैं।

सातवें आवरण में सर्वोषधि जल परिपूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में श्रृङ्गार पर्वत है। उसके शिखर पर देवदारु का बृक्ष हैं। उसके नीचे रास चत्वर बना है।

करत सिंगार सिंगार बन, सिसिर सीत सुख लेत।
मीत भीत लपटत हिया, सी सी तिय रस देत॥

श्री महाराजनन्दिनी तथा श्री महाराजनन्दन जू श्री-प्रियाप्रियतम, मनमानी, सुखदानी श्रीचन्द्रकलादि सखी समाज संयुक्त, नागयान (हाथी रथ) पर बैठकर श्रृङ्गार वन के प्रथम फाटक पर आये।

सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो शब्द सुन कर श्री लाड़िली लाल जू की आवाई जानी। श्री श्रृङ्गार वन की वागेश्वरी जू ने निज सखी समाज संयुक्त आकर, श्री प्यारी लाल जू को प्रणाम किया। सब सखी समाज से मिलकर, पट-पाँवड़े देती हुई, निज कुंज में लिवा लाईं।

दोनों सरकारों को मणिमय सिंहासन पर विराजमान करा कर, षोडशोपचार से पूजन किया, आरति उतारी और नृत्यगान किया।

सी सी तिय रस देत, लेत प्रीतम सुख हिय लगि।
कसि कसि दोउ गरमात, गात रस काम अगिनि जगि॥
सखि ज्यों वार सँवारि, सँवारति अंग वसन टर।
'प्रेम प्रभा' पिय उठे आप मोहनि सिंगार कर॥

यों तो श्री श्रृङ्गार वन में ग्रीष्म ऋतु का ही नित्य निवास है, परन्तु ग्रीष्म के अनुरूप वहाँ इतने अधिक शैत्य प्रयोग किये गये हैं कि ग्रीष्म में ही शिशिर का अवतरण हो गया है।

"हेमन्त वत्तस्य निदाघ आसीद्वारि प्रवाहे हरिचन्दनाद्यैः।"

(श्रीबृहत्कौशल खंड १८।१०)

अर्थात् हरि चन्दन आदि सुगन्धित जल की नालियों के प्रवाह से वह ग्रीष्म ऋतु भी हेमन्त सी हो रही है।

तत्पश्चात् कुंजेश्वरियाँ अपने अपने कुंजों की रचना, ❀ शोभनीय वस्तु इत्यादि दिखलाने लगीं।

किसी कुंज में फूलों की रचना है। किसी में लताओं की रचना है, किसी कुंज में वृक्षों की रचना है। किसी कुंज में

❀ नीचे श्री शृङ्गार वन वर्णन श्री अमर रामायण अ० २२ से उद्धृत किया जाता है।

भवनात्कौशलेन्द्रस्य भागे सोत्तरपूर्वके।
वनं शृङ्गारकं नाम सर्वतः शोभनं परम्॥ १॥

फल पुष्प पलाशाढ्यैः द्रुमैः सर्वर्तु रम्यकम्।
लतानां सुप्रतानास्तत्कृतं कुंजं मनोहरम्॥ २॥

नाना वर्णैः पुष्पगुल्मै श्चर्दिक्षु विराजितम्।
भ्रमद्भ्रमरिकाभि स्तन्मधुर स्वर गुंजितम्॥३

मयूरीभि र्मयूरै स्तन्नृत्यन्निव कला गणैः।
पिकस्वनै र्गीयमानं मुनीनां हि मनोहरम्॥ ४॥

अर्थात् श्री चक्रवर्तीन्द्र जू महाराज के राजसदन से उत्तर पूर्वकोण में सब प्रकार से परम शोभायमान् श्री शृङ्गार बन हैं॥ १॥ पत्र पुष्प फल से समृद्धमान वहाँ के बृक्ष सभी ऋतुओं में रमणीक बने रहते हैं। उन पर लताएं फैली हैं, जिससे मनोहरकुञ्ज बन गया है॥२॥ चारो ओर नाना रंग के फूल के पौधे शोभित हो रहे हैं। उन पर मड़राती हुई भ्रमरियाँ मधु स्वरसे गुंजार कर रही हैं॥३॥ मयूरों के साथ मयूरी अनेकों कलाओं

यूथ यूथ पक्षियों की शोभा दर्शनीय है। किसी कुंज में चारों तरफ से सखियों के पिंजड़ों में अवलि के अवलि पक्षी परस्पर पाठ कर रहे हैं। उसकी शोभा न्यारी है। किसी कुंज में सखियाँ परस्पर पक्षियों को लड़ा कर, एक से एक को जिताने की अभिलाषा कर रही हैं।

पठद्भिस्तु शुकैः किन्तदुद्गृणन्निव वैदिकम्।
खेलद्भि मृग यूथैस्तु क्रीडमानं शुभायने ॥५॥

बहुशोऽन्ये पक्षिगणाःफलानि मधुराणि च।
अदन्तो हि नदन्तस्ते निवसन्ति सुखं वनम् ॥६॥

से नृत्य करतीं रहती हैं। कोकिला स्वर के साथ गान कर रही हैं, जिससे मुनियों का मन भी मोहित हो जाता है ॥४॥ सुग्गे पाठ करते हुये ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वेद की ऋचाएँ उगल रहे हैं। मृग यूथ खेलते हुये उस शोभन स्थल पर क्रीड़ा कर रहे हैं ॥५॥ अन्यान्य बहुत से पक्षी बृन्द वहाँ के मधुरफल खाते हैं, कलरव करते हैं और सुख पूर्वक उस बन में निवास करते हैं ॥ ६ ॥

वाताः सुगन्धमादाय पुष्पाणामति शीतलाः।
प्रसरन्ति बने तस्मिन्मंदं मन्दतरं सदा ॥७॥

अर्थात् उस बन में पुष्पों से सुगन्ध लेकर शीतल पवन सदा मन्द मन्द बहते हैं ॥ ७ ॥

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणीविजयते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀

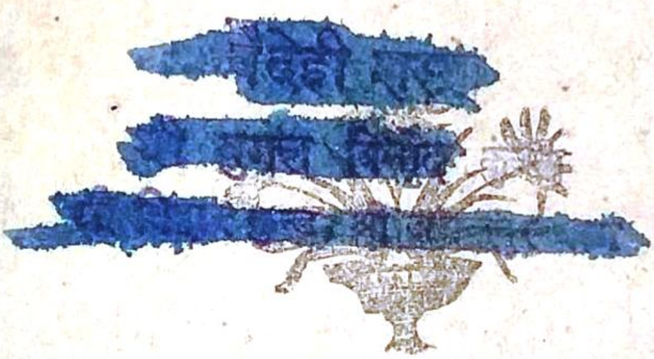

पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

किसी कुंज में सखियों के संयुक्त श्री युगल सरकार चौसर खेलते हैं, किसी कुंज में गेन्द खेलते हैं। किसी कुंज में परस्पर विराजमान होकर, वात्स्यायन सूत्रों की व्याख्या करते हैं। किसी कुंज में श्रीप्रिया प्रियतम दोनों ही विहार कर रहे हैं। वहाँ और कोई जाने नहीं पाती।

तड़ाग वापिका कूपा मणिवद्ध तटामुखाः ।
शोभमाना तटागारै हंस सारस क्रीड़नैः ॥८॥
क्रीड़न्तीभिः सुन्दरीभि स्तद्वनं सुविसङ्कटम् ।
अन्तरे दीप्यमानं स्याद्वहि वीरैः सुरक्षितम् ॥९॥
इत्थंभूते बने रम्ये जानकी रमण प्रभोः ।
भ्राजतेभवनं रम्यमसंख्योच्च विशालकम् ॥१०॥
मणिभिश्चित्रितै स्सप्त प्राकारैश्च परिवृतम् ।
काञ्चनैः कलशैर्दिव्यैः ध्वजैर्दूरात्प्रदर्शितम् ॥११॥

तड़ाग बावली कूपादि सभी जलाशयों के तट मणियों से बन्धे हैं। तट पर बने भवनों से तथा हंस सारस की क्रीड़ाओं से वहाँ की रमणीयता बढ़ रही है ॥ ८ ॥ उस निरापद बन में सुन्दरियाँ क्रीड़ा करती हैं, जिससे बन का अन्तर्भाग दीप्तिमान हो रहा है। बाहर से योद्धा गण रक्षा करते है ॥ ९ ॥ इस प्रकार के बनमें श्रीजानकी रमण जू के असंख्य ऊँचे विशाल रमणीक भवन सुशोभित हो रहे हैं।१०। यह बन सात मणि विचित्रित कोटों से आवृत हैं। उन कोटों के ऊपर वाले स्वर्ण कलश और दिव्य ध्वजाएं दूर से ही दीख पड़ती हैं ॥११॥

इस प्रकार अनेकों खेल खेलते, अनेक तमाशे देखते, श्री विचित्र वन केलिये प्रस्थान किया।

॥ इति श्रीशृङ्गार बन बर्णन ॥

तेतु सप्तैव प्राकाराः त्रिकद्वारोच्च गोपुरैः।
शोभमानाश्चतुर्दिक्षु चौम जाल गवाक्षकैः॥१२॥

इन सातों कोटों के सिंहदरवाजों में तीन तीन डयोढ़ियां बनी हैं। अटारी, जाल, झरोखों से चारो ओर से कोट सुशोभित हो रहे है॥१२॥

❁ अथ विचित्र बन वर्णन ❁

(वार्ता)

❁ श्री विचित्र बन रूपक वर्णन ❁

प्रथम कोट में चारो तरफ नाना रंगों की मणियों की दीवालें हैं। स्फटिक मणि की दीवाल पर नील, पीत, हरितादि मणियों के बेलि बूटे, जाली झरोखादि की रचना है। अनेकों चित्राम बने हैं।

जहाँ नील रंग की दीवाल है, तहाँ श्वेत, अरुणादि मणियों की रचना बनी है। इस तरह प्रथम कोट की रचना है।

इसी तरह से पाँचों कोटों की रचना जानना। सब कोटों में चारो तरफ चार चार फाटक हैं। कोटों के मध्य अवकाशों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं। कुंजों के मध्य अवकाशों में बृक्ष, लता, फूल, वेदी, बंगला, तड़ाग आदि सुशोभित हैं।

श्री विचित्र वन के पूरब श्रीमती श्रीप्रसादाजी के महल का विस्तार है, दक्षिण श्रीमती बिमलाजी का महल है, पश्चिम श्री अशोक वन हैं, तथा उत्तर श्री शृङ्गार वन है। यहाँ की बागेश्वरी श्रीमती चित्राजी हैं।

इस प्रकार से विचित्र बन के प्रथम कोट के फाटक पर सखी समाज संयुक्त श्रीनृपनन्दिनी श्रीनृपनन्दन जू आये। सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर अपनी सखियों के संयुक्त श्रीवागेश्वरी जी आईं। श्री लाड़िली लाल जू को प्रणाम करके, पट पाँवड़े देती हुई, निज निकुंज को लिवा ले चलीं। गाती बजाती नृत्य करती हुई अपने कुंज में ले आईं।

प्रथम आवरण वाले कोट दीवाल में आश्चर्यजनक चित्राम बने हैं। उसका विवरण मूल रचना में आगे पढ़िये।

मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा के दोनों ओर द्रुमकुंज बने हैं।

इन द्रुमों के स्वरूप श्री 'श्रृङ्गार रहस्य रत्न मंजरी' के शब्दों में पढ़िये :—

केचित्फलैस्तु सम्पूर्णाः केचित्पुष्प मयास्तथा।
केचित्केवल पत्राढ्याः केचितत्र त्रिभियुंताः ॥१॥

केचिद्धरित पत्रास्ते केचिदारक्त पत्रकाः।
सुवर्णवर्ण पत्राश्च नील पत्रास्तथापरे ॥२॥

अर्थात् किसी बृक्ष में केवल फल ही है, किसी में केवल फूल, किसी में केवल पत्ते, किसी में तीनों हैं॥ १ ॥

किसी बृक्ष के पत्ते हरे, किसी के लाल, किसी के सुनहले, किसी के नीले हैं।

श्री युगल सरकार को सिंहासन पर बैठाल कर पूजन किया। नाना तरह के व्यंजन थालों में सजाकर लाईं। सुन्दर मणिमय चौकी पर आगे धर कर, एक एक व्यंजन का स्वाद कह कर, भोजन कराने लगीं। पवाते समय अनेकों तरह के हास्य रसमय बचन कहती हैं, जिनको सुनकर सब हँसने लगती हैं। दोनों सरकार को आनन्द उत्पादन करती हैं। इस प्रकार बहुत देर तक श्रीप्रिया प्रियतम जू भोजन करते हैं।

हरितैः कुसुमैर्युक्ताः केचिद्रक्तप्रसूनकाः।
पीत पुष्पास्तथा केचिन्नील पुष्पद्रुमाः क्वचित् ॥३
केचिद्विचित्र पत्राश्च विचित्र कुसुमास्तथा।
केचिच्चित्र फलावृक्षाः विचित्र लतिका क्वचित्॥४
श्वेत पुष्पलताः केचिन्नील पुष्पलताः क्वचित्।
पीत पुष्पलताः केचिद्रक्त पुष्पलता द्रुमाः ॥५॥

किसी के फूल हरे, किसी के लाल, किसी के पीले, किसी के नीले रंग के हैं ॥ ३ ॥ किसी के पत्ते विचित्र हैं, किसी के फूल विचित्र हैं, किसी के फल विचित्र हैं। कोई लता ही विचित्र है ॥ ४ ॥ किसी लता के फूल श्वेत, किसी के नील, किसी के पीत, किसी के लाल हैं ॥५॥

प्रथम आवरण में श्री लाड़िली लाल जू साँझी उत्सव का आनन्द लेते हैं। यहाँ सर्वदा आश्विन महीने की छटा छाई रहती है। यथा-

वन विचित्र चित्रावली, चित्रित चित्र विचित्र।
दिव्य नेत्र सद्गुरु सुप्रद, चितत होत पवित्र ॥
(श्रीयुगलविहारिणिजी)

तत्पश्चात् आचमन कराकर, बीरा पवाकर, अतर लगाकर, आरति की। श्रीप्रिया प्रियतम जू के संग की सखियों ने साथ ही भोजन किया। तत्पश्चात् श्रीकुंजेश्वरीजी ने अपनी सखियों के संयुक्त प्रसादी पाई।

भोजन कराकर कुंजों की रचना दिखाने को लिवा चलीं। किसी कुंज की दीवाल में मणियों की ऐसी कृत्रिम रचना है कि साक्षात् की भाँति देखने में आती है।

वन विचित्र विच चित्र पिय, लिखत सुप्यारी केर।
रति विपरीति निहारि तिय, रहति लाजवस हेर॥
रहति लाजवस हेर, फेर दृग मृग बहरावै।
पिय ऊपर निज लखे लाज नवला तन छावै॥
वह नितंव की हलनि अंग मिलवनि नागरि तिय।
'प्रेम प्रभा' मोहनि सुचित्र लखि वन विचित्र पिय॥

द्वितीय आवरण की भूमि ऐसी विचित्र मणियों से जटित हैं कि स्थल पर जल की, जल में स्थल की भ्रान्ति होती है। महलों में भूल भुलैयाँ वाले मार्ग बने हैं। द्वार की जगह दीवार, दीवार की जगह द्वार दीख पड़ता है। यहाँ की सखियाँ जादूगरनी और वाजीगरनी हैं। वह नाना प्रकार आश्चर्यजनक कौतुक दिखाती रहती हैं।

मायेव शंवरस्यैषा कालनेमिरिवायता।
ऐन्द्रजालिक राजस्य विश्वकर्तुर्मयस्य वा॥
गन्धर्व शावरादीनां मायामय महीरुहैः।
वाटिका रामचन्द्रस्य त्रिलोक्यां प्रथितामुने॥१॥
[श्रीशिव संहिता ५।५९,६०]

किसी दीवाल के चित्र में सिंह को हाथी दबाये हुये है, किसी जगह बाघ को सियार मार रहा है, किसी जगह बिल्ली को मूसा पकड़े हुये है, किसी जगह मूसा सर्प को निगल रहा है, किसी जगह लावा पक्षी बाज को खदेरे जा रहा है, बाज उड़ा भागा जाता है। यह सब साक्षात् की भाँति देखने में आते हैं।

अर्थात् इस वन की विचित्रता देखकर ऐसी प्रतीति होती है कि यह महा-मायाबी शंबरासुर की माया है, अथवा कालनेमि की सुविस्मृत माया है, अथवा इन्द्रजाल विद्या विशारद विश्वकर्मा या मय की माया है।

यहाँ के बृक्ष भी गन्धर्व शवरादिकों की माया के समान माया मय है। श्री जानकीकान्त जू की यह वाटिका अपने गुणों से त्रिलोक में ख्यात है।

तीसरे आवरण के कोट महल की दीवाल ऐसी मणियों की बनी है, जो दिन रात बराबर अपने रंग बदलती रहती हैं। इसके आवरण के अन्तराल भर में पड़ने वाला उनके प्रकाश का रंग भी बदला करता है। अतः अन्तराल भर की बस्तुएँ क्षण क्षण में विभिन्न रंगों की दीख पड़ती है।

इस आवरण में रजनी गृह, दिवस गृह, चन्द्रिका चौक, तमिस्रा-चौक आदि कुतूहलोत्पादक महल बने हैं।

चौथे आवरण में द्वादश सेवा कुञ्ज बने हैं। ये सब भी आश्चर्य रचना मय बने हैं। इसमें स्थित हिंडोलकुंज की लीला पढ़िये:—

अन्दोल केलि निकुंज यह विधि झूलि सिय रघुलाल।
पुनि चित्र वन मन मुदित गवने रूपनिधि सुखजाल॥

कहीं पर है पृथिवी, परन्तु देखने में आता है कि भारी गंभीर धारा का प्रवाह चल रहा है। उसमें बड़े बड़े जलचर गण इधर उधर तैर रहे हैं। एक दूसरे को पकड़ कर दबा देते हैं। उस जल में नौका चल रही है।

(तहँ अली करि आरति निछावरि भोग भरि मनि थार।
अति प्रीति मधु भोजन कराये रचे नव सिंगार ॥
पुनि लै गई आन्दोल कच्छ सुस्वच्छ मनि बहु धाम।
बहु रंग चित्र हिंडोलना झूमक झलक मनि दाम ॥
कल कलित वलित बिहंग भौंरा चलित कल वल डोरि।
नव पुत्रिका कंचन मई गावैं नचैं अँग मोरि ॥
इक लक्षदल मनि कंज मंजुल प्रति दलन आन्दोल।
सब सखिन युत झूलन लगे सिय लाल मन रसलोल ॥
(दयासिन्धु श्रीरसिकअलीकृत श्रीअन्दोल रहस्य दीपिका)

पांचवे आवरण में गुलाब जल से सम्पूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में आश्चर्य पर्वत है। पर्वत शिखर पर मन्दार बृक्ष है। उसकी छाया में रासवेदिका बनी है। यहाँ रास में गन्धर्व कुमारियों नाना आश्चर्य कौतुक प्रगट करती रहती है। यथा—

दोहा:—

इन्द्र जाल के स्वांग बहु, गन्धर्वी के ख्याल।
करन लगीं गंधर्व सुता, निरखहिं लाड़िलीलाल ॥१॥

कहीं पर बहुत गंभीर जल भरा है, परन्तु देखने में आता है कि पृथिवी की रचना बनी है।

कुंजों के मध्य में बृक्षावली, लता, वेदिका, बंगले वावली आदि अनेकों रचनाएँ बनी हैं।

❀ सवैया ❀

(गान्धर्वी माया द्वारा रासस्थल में प्रकट दृश्य)

देखिये लाल मराल की पाँति परावत हंस रु मोरन की।
सुक सारिका चाष पपीहन की अरु तीतर भृङ्ग चकोरन की॥
लखि लीजै लला जू कुरंग की पाँति गयन्द अनेकन घोरन की।
पुतरी बहु भाँति नचै लखिये गति लेति हैं लाल अमोलनकी॥१॥
लखिये फुलवारि अनेक लगी औ लतान में आम लगे चखिये।
चखिये फल दाड़िम दाख छुहार बदाम लवंग लता देखिये॥
देखिये यह बीन बजे अपुने यह नारि निहारि नचै रखिये।
रखिये यह बाग बिहार करौ पिय और सरोवर हू लखिये॥२॥
थल में बहु पंकज फूले पिया तिन पै बहु नारि नचै लखिये।
तरु पत्रन पै गृह तोरन पै तिय निर्त करै तिनहूँ लखिये॥
बिनु वारि चलै जल ज्यों सफरी बिन मेघ भई बरषा लखिये।
यह मूँदि पिटार दई अबही तिय आपुके पाछे खड़ी लखिये॥४॥
यक बीरी दई पिय के कर में, सो गई उड़ि आनन मेलत ही।
वनिता एक हाथ गही बलकै, सो गई छुटि पानिके फेरत ही॥
एक हेम लता परसी कर सो लिपटी सुवनै न निवेरत ही।
यक दर्पन माहि असंख्य तिया निकसी करलै मुख हेरत ही॥५॥

इस प्रकार से विचित्र बन की शोभा देखते श्रीमहाराज किशोरी जू श्रीमहाराज किशोर जू सखी समाज संयुक्त, गज-रथ पर चढ़कर, श्रीअशोक वाटिका के लिये चल पड़े।

॥ इति श्रीविचित्र बन विहार बर्णन ॥

पिय वस्तु खरीदिये देस विदेस की नाम अनेकन जानौ लला।
कल कन्दुक कोमल श्रीफल गोल नरंग सुरंग निहारौ लला॥
नवरंग सुरत्न की माल विसाल सद। उर धारौ न त्यागो लला।
एक चन्द्रमनी परसौ मुख सौ सरसौ रस अमृत पाइ लला॥६॥

दोहा:—

'निरखि मुदित मन दंपती, हँसत विलोकत ख्याल।"

श्रीअवध सागर, चौदहवें रत्न के
१ से ६ छन्द तक।

❋ अथ श्रीअशोक वाटिका बिहार ❋

❋ वार्ता ❋

❋ श्रीअशोक वाटिका का रूपक वर्णन ❋

प्रथम कोट (का आवरण महल) नव खंड (तल्ले) ऊर्ध्व को गया है। प्रत्येक खंड में भारी भारी तीन तीन दालान हैं।

एवं पुण्यारण्यानि चावृतानि वनानि च ।
तन्मध्येऽशोक वनिका सर्वेषामप्यगोचरा ॥
परमानन्ददा सान्त ब्रह्म ज्योतिर्भिरावृता ।
तज्ज्योति भेदने शक्ता रसिकाः रसवेदिनः ।
राम प्रसादादन्येषां गमनं न भवेत्कदा ॥
पुंसामगोचरं स्थानं केवलं प्रेमदायकम् ।
नारीभाव समायुक्तस्तेषां दृश्यं भवेद्ध्रुवम् ॥
(श्रीहनुमत्संहिता अ० ३)

अर्थात् श्री प्रमोद बन अनेकों पुण्य बन उपबनों से आबृत हैं। उन के मध्य में श्रीअशोक वाटिका है। यह वन सर्व साधारण के लिये अगोचर है। क्योंकि चारो ओर बाहर से परमानन्दमयी ब्रह्म ज्योति इस बन को घेरे हुई है। इस ब्रह्म ज्योति को पार कर भीतर बन में जाने में केवल रस तत्वज्ञ रसिक जन ही समर्थ हैं। श्री जानकी रमण जू की विशेष कृपा

प्रथमखंड (तल्ला) चारो तरफ स्फटिक मणि की दीवाल और भूमि है। उस पर नील हरित पीतादि मणियों की वेलियाँ बनी हैं। वेलियों के मध्य मध्य में पद्मराग मणि के बूटे हैं, और मणियों की जाली बनी है। उसके प्रान्त भाग में चारों तरफ मणि कणियों की वेलियाँ बनी हैं। वेलियों के मध्य-मध्य में कहीं नील मणि के बूटे, कहीं पीत मणि के बूटे, इसी प्रकार अनेक रंगों के बूटे बने हैं।

के बिना इस बन में किसी का प्रवेश असम्भव है। श्री अशोक बन तो विशुद्ध प्रेम देने वाले हैं। यह पुरुषों के लिये तो अगोचर हैं। केवल नायिका भावाविष्ट रसिक जन ही इन्हें ध्यान में या प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं। यथा-

(श्रीचित्र निधिजी के हुये-श्रीरसिकप्र०)
भक्तमाल पृष्ट ४८। १८

"विपिन अशोक जहँ नित्य रास थली तहाँ,
अलिन समेत लली दरश दिखायो है।"

दुःप्रवेशा जनानां सा देवानामपि वाटिका।
रामस्य पुरुषेन्द्रस्य सम्भोगारम्भ कारणात् ॥ ४३ ॥
नैतादृशी सुरेन्द्रस्य नागेन्द्र वरुणस्य च।
न कुबेरस्य नान्येषां देवानां रतिवाटिका ॥ ४४ ॥

अर्थात् श्री अशोक वन में क्या मनुष्य, क्या देवता कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि पुरुषेन्द्र राघवेन्द्र जू यह ऐकान्तिक विहार स्थली है ॥४३॥ ऐसी रति वाटिका न तो इन्द्र की है, न शेषजी की, न बरुण की, न कुबेर की, न किसी अन्य देवता की ॥४४॥

दालानों के अवकाशों की दीवालों पर अनेकों चित्राम बने हैं। किसी दालान में पीत रंग के, किसी में हरित रंग के किसी में नील रंग के, इसी तरह से भिन्न-भिन्न रंगों के चन्दोवे टँगे हैं। चन्दोवों के चारो तरफ प्रान्त भाग में सोनैले, रुपैले की बेलियाँ बनी हैं। मोतियों की झालर लगी है। चन्दोवे के मध्य भाग में कहीं सूर्य के, कहीं चन्द्रमा के, आकार बने हैं। दालानों की नीचे वाली भूमिका (गच्ची) कहीं नील, कहीं पीत, कहीं हरित मणियों से खचित है।

न नागानां न दैत्यानां न च दानव रक्षसाम् ।
तत्तुल्य वनिका विष्णो वैंकुण्ठेपि न विद्यते ॥ ४५ ॥
दुःखैक भाजनानां तु मनुष्याणां कुतस्तराम् ।
यस्याः स्मरण मात्रेण नृणां शोको विनश्यति ॥ ४६ ॥
मत्त नागेन्द्र रूपेण पुण्यलोक विनायकः ।
आदेशाद्राम चन्द्रस्य तां रक्षति यक्षराट् ॥ ४७ ॥
(श्रीशिव संहितो अ० ५)

ऐसी वाटिका नाग, दैत्य, दानव, राक्षस, किसी को नहीं है। बैकुण्ठ विहारी विष्णु भगवान् को भी ऐसी बाटिका नहीं है ॥४५॥ तब भला दुखों के पात्र मनुष्यों को कहाँ से होगी। श्री अशोक बन के स्मरण मात्र से मनुष्यों के शोक मिट जाते हैं ॥४६॥ श्रीकोशलेन्द्र कुमार जू की आज्ञा से पुण्यलोक विनायक यक्ष राज मत्तनागेन्द्र रूप से इसकी रक्षा करते हैं ॥ ४७ ॥

उस पर रेशमी जाजिमें बिछी हैं। उनमें यूथ की यूथ नायिकाएँ अवस्थाओं के भेद से अनेकों तरह के बाजे बजाकर गान कर रही हैं।

इस प्रकार से कोटों के बारह खंड (आवरण) हैं। पुनः प्रथम कोट के दूसरे तल्ले में नीलमणि की दीवाल है। उस पर श्वेत पीतादि रंगों की पूर्वोक्त रचनाएँ हैं।

तीसरे तल्ले की दीवाल पीतमणि की है। उस पर और रंगों की मणियों के बेलिबूटे कढ़े हैं। और सब रचनाएँ पूर्वोक्त की भाँति जानना, केवल रंगों में भेद है।

इस भाँति चतुर्थ तल्ले में पद्मराग मणि की दीवाल, पंचम तल्ले में हरित मणि की, षष्ठम तल्ले में धूम्र मणि की, सप्तम तल्ले में पाटल मणि की, अष्टम तल्ल में वैडूर्य मणि की, तथा नवम तल्ले में पांडुर मणि की दीवाल उसी भाँति बनी है।

अशोक वनिका तत्र योजने द्वय विस्तृता।
आयता योजने द्वे च सरयूतीरमाश्रिता॥
'श्रीश्रृङ्गार रहस्यरत्न मंजरी'

अर्थात् श्री सरयू तीर पर स्थित श्री अशोक वनिका दो योजन (१६ मील) लम्बी, दो योजन चौड़ी है।

वाटिका अशोक तामैं थोक थोक प्रमदा गन,
ओक ओक चौकी हूँ में ठाढ़ी हुशियार हैं।
बाहर से भीतर कौ परिकर बिनु। अति अगम्य
चोपदारी नारी कर कनक दंड धार हैं॥

प्रथम कोट के चारों तरफ चार विशाल-विशाल गोपुर❀ बने हैं। बन्दनवार आदि अनेकों रचना से युक्त हैं। दरवाजों में विशाल-विशाल वज्र के किवाड़ लगे हैं। दरवाजों के बाहर अनेकों बीर अस्त्र शस्त्र लिये रक्षा में सन्नद्ध हैं। मध्य की ड्योढ़ियों में स्त्रियों का पहरा है।

कोट के बाहर युगल युगल अवलि करके, चारो तरफ बड़े भारी-भारी अशोक बृक्ष शोभित हैं।

कोट के ऊपर कंगूरों की पाँति शोभित हो रही है। चारों कोणों के ऊपर चार कलश अनेकों सूर्य के समान प्रकाश कर रहे हैं। उनके ऊपर कृत्रिम हंस बैठे हैं। इस तरह से प्रथम कोट की शोभा है।

पुरुष बाच्य पक्षी इत्यादि हूँ अशक्य रास,
खाश महल वासिनीहै जोई को अधिकार है॥
पावै कौन पार मुख चारिहूँ लचार होत,
अशोक बनिका विहार सुख सागर अपारहै।
(श्रीसिया रसिकअलीकृत समयरसवर्द्धिनी)

॥ चौपाई ॥

❀तरु अशोक के चित्र बनाये। फाटक पर लिखि नाम जनाये॥
सिंह पौरि चहुँ ओर सुहावन। बाहर बीर खड़े मन भावन॥
सजि सिंगार धनुबान सुधारे। वय किशोर मन्मथ छविहारे॥
(श्रीविदेहजाशरणजी कृत
श्रीअशोक बाटिका बिलास)

प्रथम कोट और द्वितीय कोट के मध्य वाले अवकाश में श्री सरयू प्रवाह चारो तरफ घूमी है। दोनों तरफ नाना रंग मणियों के कुंज बने हैं। कुंजों के मध्य में चारो तरफ वृक्षा-वली लगी है। उन पर लता फैल रही है। मध्य में नाना रंग के फूलों की क्यारियाँ बनी हैं। उनके मध्य में कहीं वेदी, कहीं बंगले, कहीं तड़ाग, कहीं बावली इत्यादि बने हैं।

श्री अशोक वन को चारो ओर से आवृत करने वाली श्री सरयू धारा का विशद वर्णन श्रीयुगलविनोद विलास के तृतीय अध्याय के छन्द संख्या ११ से छन्द २४ तक पढ़िये।

मूल ग्रन्थ श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी के अध्याय ३, श्लोक ३ से श्लोक १६ तक, श्री अशोक वन को आवृत करने वाली श्री सरयू धारा का बड़ा ही रोचक एवं परत्व प्रदर्शक वर्णन है। ग्रन्थ विस्तार भय से सब उद्धृत नहीं किये गये। केवल तीन श्लोक अन्त वाले दिये जाते हैं।

"तन्मध्येऽशोक वनिका दिव्य पादप संकुला।
प्रफुल्लिता चारुवती श्रीमद्भ्रमर मालिनी ॥ १७ ॥

ज्योतिष्मती मणिद्वीपवती प्रेमप्रदा सती।
रामप्रिया चक्ररूपा हरिनेत्र भवावृता ॥ १८ ॥

तत्र चिन्तामणि भूमि वाञ्छाधिक फल प्रदा॥ १९ ॥

कुंजों के मध्य में जाति जाति के पक्षी यूथ के यूथ मिल कर कल्लोल कर रहे हैं। किसी कुंज में केवल हंस के यूथ हैं। हँसों के भी अनेकों रंग वाले भेद हैं। जिन जिन रंगों के हंस हैं, उनके अलग अलग यूथ हैं।

किसी कुंज में केवल मयूरों के यूथ हैं। किसी में केवल शुकों के यूथ हैं। किसी में केवल सारिकाओं के यूथ हैं। इस प्रकार कुंजों में अनेक जातियों के पक्षी हैं।

इस तरह से श्री सरयू जी के दोनों कूलों पर कुंज बने हैं। कुंज के बाहर श्री सरयू जी के दोनों तटों पर वृक्षों की पंक्तियाँ लगी हैं। छोटे-छोटे फूल-गुल्मों की क्यारियाँ बनी हैं।

उनके मध्य मध्य-मध्य में वेदिकाएँ बनी हैं। कोई वेदिका तो षटकोण है, कोई अष्टकोण, कोई त्रिकोण, और कोई है कमलाकार। इस प्रकार अनेकों भेदों से मणिमयी वेदिकाएँ बनी हैं।

अर्थात् श्री अशोक वनिका दिव्य द्रुमों से परिपूर्ण हैं। सभी वृक्ष रमणीय एवं प्रफुल्लित रहते हैं। उन पर भ्रमर पंक्ति मड़राती रहती है। श्रीअशोक वनिका प्रकाशमयी है। इनमें मणि के दीपक जलते रहते हैं। चिन्तकों को दिव्य प्रेम प्रदान करने वाली है। श्रीजानकी रमण जू की यह वनिका अतिशय प्यारी है। यह चक्रचकार बनी है। नयनजा अर्थात् श्रीसरयू जी से घिरी हैं। यहाँ की भूमि चिन्तमणि से जटित है, जो मनोरथ से अधिक फल देने वाली हैं।

जितने कोण के भेद हैं, उनमें से किसी–किसी वेदिका के कोणों में मयूरों के आकार बने हैं, किन्हीं कोणों में हंस के आकार बने हैं। इस तरह अनेकों आकार से युक्त हैं। वेदिकाओं के ऊपर अनेक रंगों की रेशमी जाजिमें बिछी हैं।

श्री सरयू जी के दोनों तटों के ऊपरी भागों से लेकर गंभीर जल के भीतर तक अनेक रंग मणियों के सोपान (सीढ़ियों) बन्धे हैं। कहीं कहीं सुन्दर सुन्दर बुर्जें बने हैं। तट पर स्थित वृक्षों के प्रतिविम्ब जल में पड़ने से, अति-शोभित हो रहे हैं।

इस प्रकार से सात कक्ष* हैं।

सारे बाग की एक बागेश्वरी* हैं।

प्रत्येक कक्ष की एक एक कक्षेश्वरी है और प्रत्येक चौक की पृथक-पृथक चौकेश्वरी है। प्रत्येक कुंज में एक एक कुंजेश्वरी रहती हैं।

---

* यहाँ कक्ष से तात्पर्य आवरण का है। श्री सीताकुण्ड के बाहर ये सातों आवरण हैं। पुनः कुण्ड के भीतर पांच आवरण और हैं। सब मिल कर बारह आवरण हुये जैसा पीछे पृष्ट में कह आये हैं।

* इनका नाम श्रीमती रतन मंजरी जी है। देखिये श्री रसमोद माधुरी पृ० १९ दोहा १३।

❀ अथ प्रथमावरण विहार ❀

❀ दोहा ❀

वाग अशोक अनूप के, प्रथम कक्ष के द्वार ।
सखियन युत सियलाल जू, शोभा जोह अपार॥१॥

❀ चौपाई ❀

सखिन नगारे चोष दये जब । कुञ्ज २ प्रति शब्द भये तब ॥
बहु कुंजेश्वरि अरु कक्षेश्वरि । सहित समाज चलीं वागेश्वरि
बहु थालन पूजन के सामा । चली मोदभरि उमगत वामा॥
धरी भेंट पिय प्यारो आगे । करि पूजन बोली मृदु वागे ॥
आज सनाथ भई हम सब बिधि ।
पिय प्यारी जो मोहि लियो सुधि ॥
भये मनोरथ सुफल हमारे । अब चलिये मम कुञ्जन प्यारे ॥
पिय प्यारी अमृतमय बानी । वागेश्वरि बहुविधि सनमानी॥
सखियन युत वागेश्वरी, गान करत उमगन्त ।
पट पाँवड़े दिवाय कै, लै चलि* सीताकन्त ॥२॥

❀ सवैया ❀

*आवत जानि किशोर किसोरी अशोक महावन भूमि सोहाई ।
फूलि उठो द्रुम गुल्म लता नव कोमल डारन पातन छाई ॥
कंज सरोवर में विगसे तिन ऊपर भौंर रही मड़राई ।
वीथिन वीथिन सीतल मन्द सुगन्ध समीर बही सुखदाई ॥
(श्रीअवध सागर १ । ३९)

प्रथम कक्ष के मध्य में, कुंज सु परम विशाल।
ता मधि सिंहासन विरचि, बैठाये सियलाल ॥३॥

विधि विधानसे पूजिकै, भोजन विविध कराय।
करि निवछावर आरती, नृत्य कियो गुन गाय ॥४॥

चहुंदिशि अलि उड़गन अवलि, मध्य सीय पियचंद।
बागेश्वरी चकोरिका, निरखत छकि आनन्द ॥५॥

कछुक काल तहँ विलमि पिय, संग सीय सखिजाल।
चले विलोकन कुंज बहु, जहँ रचना के शाल ॥६॥

प्रथम गये हंसन के वासू। देखत कुंज मनोहर तासू ॥
चहुँदिशि मनिमय महल सुहाई। मध्य वेदिका अति मनभाई
तेहि पर बैठे मनहर जोरी। चहुँ दिसि सोहै नवलकिशोरी॥
आये हंसन यूथ घनेरे। रंग रंग के जो बहुतेरे॥
मोती ताहि चुगाये दोऊ। पिय प्यारी छवि निरखत सोऊ॥
पिय बोले सुन हंसन अवली। यहि जगमें अतिहै का धवलो
है का साँच सार यहि जग में। कहौ असार अहै का सबमें॥
हंसन कह सुनु लाल सुजाना। राउर जस सम धवल न आना
सियपिय युगल सुसेज विहारा। यहि सम सार न कछुसंसारा
जो जन दम्पति रस अवगाही। सो तौ जगमें सार कमाही॥
यह रस छाड़ि जो और संचन। ताहि असार कहत श्रुतिसज्जन
यह रसते जो मनफिरकायो। सो यहि जगहि असार कमायो

हंसन के यह बचन सुनि, पिय प्यारी मुसुकांहि ।
दै गलबाँही सखिन युत, चले अपर थल माँहि ।।७।।

नील मनिन मय महल घनेरे । अति विस्तार बने चहुँ फेरे ।।
नील मनिन खंभन की पाँती । नील पिधान बने बहु भाँती ।।
बृक्षन की अवली बहु तेरे । शाखा पत्र नील रंग केरे ।।
ता मधि मोरन यूथ घनेरे । ऋतु पावस भ्रम किये बसेरे ।।
सखियन यूथ लिये पिय प्यारी । आये तहाँ निकुञ्जविहारी ।।
आये मोर यूथ बहु रंगा । विचरत जहँ सिय प्रीतम संगा ।।
पिय प्यारी के छबि सुखभरिके। बहुविधि नाचे थिरकिरके।।
भरिर मूठिन दानासखियन । लगीं खवावन तिन सब मोरन

नाट्य कला बहु भेद के, नाचि दिखाये मोर ।
चले देखि नृप नन्दिनी, रसिक राज सिरमौर ।।८।।

कीर कुंज पहुँचे रघुनन्दन । संग लिये सखियन के बृन्दन ।।
देखे कीरन जाति सुहाई । रंग रंग के जे बहुताई ।।
सित कोइ लाल हरे रंग कोई । स्यामल कोइ पीत रंग कोई ।।
इक के हरित बने सब अंगा । ग्रीवा सोहै ताहि सुरंगा ।।
कोउ सर्वाङ्ग अरुन रँग सोहै । ग्रीवा हरित रंग मनमोहै ।।
कोइ दुइ रंग तीन रंग कोई । कोइ चतुरंग पंच रंग कोई ।।
यहि विधि से बहु रंगन केरे । शुक विचरै जहँ तहँ बहुतेरे ।।
मध्य कुञ्ज पहुँचे यह जोरी । दशरथ सुत श्रीजनककिशोरी ।।

बैठे सिंहासन पर जाई । चहुँ दिशि सोह सखी समुदाई ॥
कीरन की पाँती जुरि आई । जाति जाति की वरनि न जाई॥
सखियन चुगा चुगावन लागी। बोले पिय प्यारी अनुरागी॥
कोउ कह जय मिथिलेश दुलारी। भनै कोउ राघव जयकारी॥
कोउ प्यारी के वरनै शोभा। प्यारे छवि काहू मन लोभा ॥
कोउ प्यारे की करै बड़ाई । कोउ प्यारी गुन कहै बढ़ाई ॥
कोउ प्यारी की मुखछवि ऊपर। न्यौछावरकर अमितसुधाकर
कोउ कह प्यारे मुख छवि आगे। मदन करोरन फीको लागे॥
कोउकह हम बहुजानतनाहीं। निरखहुँ पिय अँग सियकोछांही

यहि विधि शुक सब परस्पर, पिय प्यारी गुन गाइ ।
निरखि २ छवि माधुरी, तन मन सुधि बिसराइ ॥९॥
कुंज कुंज प्रति जाइ कै, दम्पति कौतुक देखि ।
आये सरयू तट बहुरि, जल प्रवाह को पेखि ॥१०॥

तट के ऊपर दोउ दिशि राजे । वृक्षन की अवली बहु छाजे॥
लता लपटि रह ताके ऊपर । जस पतनी पति परिरंभन कर॥
फलफूलन भरिझुकोसुसाखन। जनु करती पृथ्वीको चुंबन* ।

---

* सोरठा—श्रीलड़ैती बचन--

पुष्प लता द्रुम देखि, बूझति सिय निज नाथ सों ।
कहिये नाम विशेषि, कौन लता यह कौन तरु ॥

क्यारी क्यारी फूलन छाये। तेहि पर भँवरन झुंड लुभाये॥
पवनप्रसंगसुगंधन उड़िकै। दिसिअरु विदिसि गगन रहि भरिकै
मनियन कनिकन रंग रंग के। क्यारिन पर सोहत सुढंगके॥

❀ नायक वचन। कवित्त ❀

देखु प्रान प्यारी ये अशोक वाटिका सँवारि
तेरेई अनूप रूप गुन की जु भास है।
कंचन अवनि तन वदन सुकंज वन
बिंवाधर दाड़िम दसन कुंद हास है॥
श्रीफल उरोज लता रोम राजी रंग अरु
पल्लव अरुन कर चरन प्रकाश है।
नील कंज लोयन अरुन कंज कोयन
रसाल गंड कुण्डल कदंब सुखरास है॥४२॥
सिरस सुमन सुकुमारता भुजंग केस
भृकुटी द्विरेफ पंक्ति कवरी तमाल है।
बसन हरित पर्ण कंचुकी विचित्र वर्ण,
बिबिध सुगन्ध अंगराग पुष्प माल है॥
पनस नितम्ब गोल कूज खग मंजु बोल
गुंजत भ्रमर पद भूषन रसाल है।
कंदुक नारंग फल निर्तत मयूर कल
प्यारी तोहि पाय याके खुले भाग भाल है॥४३॥
(श्रीअवध सागर, दशवाँ रत्न)

मनियन के सोपान बन्धे हैं। जहँ तहँ बहु चित्राम सधे हैं॥
श्री सरजू जल स्वच्छ बहुत है। चन्द्रकिरन छवि दूरि करतु है॥
पुनि गोक्षीर शंख दुति काहीं। छीन लई छवि अतिभलकाहीं
अमिय स्वादु को मान नवावै। जल को स्वाद कौन बतलावै

जलानि शीतांशु करा कराणि गोक्षीर शंख द्युति निर्जितानि।
सुधा शरन्मेघनिभानिकानि श्रीमेदुर श्याम यशांखितानि॥६॥
हिमागमाच्छीत विडंबितानि स्वादूनि माध्वीकरसाद्धनानि।
स्वच्छानि सच्चित्तसमानि कानिकपूर कुन्दाद्भुतदर्शनानि॥ ॥
प्रफुल्लितं चारु चतुर्विधं महत्सरोरुहं षटपद राजि वेष्टितम्।
कुमुद्वतीन्दीवर मजु मडितं कह्लारकाह्लाद जलं व्यभासत्॥१०॥
(श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी अध्याय)

अर्थात् श्री सरयू जल अपनी शुभ्रता से चन्द्र किरण समूह, गौ दूध और शंख की उज्ज्वला को जीत रहा है। इसे शरद् के शुभ्र वादल एवं श्याम सलोने जू के सुयश के समान शुभ्र कहें, तो कोई अत्युक्ति नहीं। श्री सरयू जल शीतलता में हिम ऋतु की ठंढक को उपहास करता है तथा स्वाद में दाख से बढ़ चढ़ कर है। सज्जनों के चित्त तथा कपूरकुन्द से भी अधिक सौगन्ध्य एवं शुभ्रता इसमें दर्शित होती है।

श्रीसरयू जल में चार प्रकार के कमल खिले हैं। उन्हें भ्रमरों की पंक्ति घेरे हुई है। मंजुल कुमुद, नील कमल, श्वेत कमल से अलंकृत जल बड़ा ही आह्लाद दायक प्रतीत होता है।

क्यारी क्यारी फूलन छाये। तेहि पर भँवरन झुंड लुभाये॥
पवनप्रसंगसुगंधन उड़िकै। दिसिअरु विदिसि गगन रहि भरिकै
मनियन कनिकन रंग रंग के। क्यारिन पर सोहत सुढंगके॥

❀ नायक वचन। कवित्त ❀

देखु प्रान प्यारी ये अशोक वाटिका सँवारि
तेरेई अनूप रूप गुन की जु भास है।
कंचन अवनि तन वदन सुकंज वन
बिंबाधर दाड़िम दसन कुंद हास है॥
श्रीफल उरोज लता रोम राजी रंग अरु
पल्लव अरुन कर चरन प्रकाश है।
नील कंज लोयन अरुन कंज कोयन
रसाल गंड कुण्डल कदंब सुखरास है॥४२॥
सिरस सुमन सुकुमारता भुजंग केस
भृकुटी द्विरेफ पंक्ति कवरी तमाल है।
वसन हरित पर्ण कंचुकी विचित्र वर्ण,
विविध सुगन्ध अंगराग पुष्प माल है॥
पनस नितम्ब गोल कूज खग मंजु बोल
गुंजत भ्रमर पद भूषन रसाल है।
कंदुक नारंग फल निर्तत मयूर कल
प्यारी तोहि पाय याके खुले भाग भाल है॥४३॥
(श्रीअवध सागर, दशवाँ रत्न)

मनियन के सोपान बन्धे हैं। जहँ तहँ बहु चित्राम सधे हैं ॥
श्री सरजू जल स्वच्छ बहुत है। चन्द्रकिरन छवि दूरि करतु है॥
पुनि गोक्षीर शंख दुति काहीं। छीन लई छवि अतिभ्रमकाहीं
अमिय स्वादु को मान नवावै। जल को स्वाद कौन बतलावै

जलानि शीतांशु करा कराणि गोक्षीर शंख द्युति निर्जितानि।
सुधा शरन्मेघनिभानिकानि श्रीमेदुर श्याम यशांसितानि ॥६॥
हिमागमाच्छीत विडंबितानि स्वादूनि माध्वीकरसाद्वनानि।
स्वच्छानि सच्चित्तसमानि कानिकपूर कुन्दाद्भुतदर्शनानि॥ ॥
प्रफुल्लितं चारु चतुर्विधं महत्सरोरुहं षटपद राजि वेष्ठितम्।
कुमुद्वतीन्दीवर मंजु मंडितं कह्लारकाह्लाद जलं व्यभासत् ॥१०॥
(श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी अध्याय)

अर्थात् श्री सरयू जल अपनी शुभ्रता से चन्द्र किरण समूह, गौ दूध और शंख की उज्ज्वला को जीत रहा है। इसे शरद् के शुभ्र वादल एवं श्याम सलोने जू के सुयश के समान शुभ्र कहें, तो कोई अत्युक्ति नहीं। श्री सरयू जल शीतलता में हिम ऋतु की ठंढक को उपहास करता है तथा स्वाद में दाख से बढ़ चढ़ कर है। सज्जनों के चित्त तथा कपूरकुन्द से भी अधिक सौगन्ध्य एवँ शुभ्रता इसमें दर्शित होती है।

श्रीसरयू जल में चार प्रकार के कमल खिले हैं। उन्हें भ्रमरों की पंक्ति घेरे हुई है। मंजुल कुमुद, नील कमल, श्वेत कमल से अलंकृत जल बड़ा ही आह्लाद दायक प्रतीत होता है।

नाना रंग कमल बहु सोहै। नील पीत अरुनादिक जोहै ॥
तापर रंग रंग के भँवरन । छाइ रहे गुंजे बहु झुंडन ॥
चक्र चातक सारस बहुतेरे। जल कुक्कुट अरु हंस घनेरे ॥
जहँ तहँ प्यारी प्रीतम संगा कूजहि क्रीड़हि करि रस रंगा ॥
यहिविधि देखत सरयूशोभा*। पियप्यारीके मन अति लोभ

चक्राङ्ग दात्यूह समारि सारसाः
सदारका वै जल कुक्कुटादयः।
क्रीड़न्ति क्रीड़ां परिहृत्य सर्वे
वसन्ति यत्राकलयन्ति पक्षिणः ॥१२॥
(श्रीहनुमत्सं० अध्याय ३)

अर्थात् चकवा, चातक, सारस, जलकुक्कुट आदि पक्षी गण अपनी पत्नियों के साथ लज्जा त्याग कर क्रीड़ा कर रहे हैं, श्री सरयू जल में निवास करते हैं तथा युगल विहार विषयक वाणी अपनी भाषा में कूज रहे हैं।

❀ छप्पय ❀

*सरजू सीतलधार बहहि आनन्द रस लहरी।
चिंतत फल की दानि परम पावनि अति गहरी ॥
बने मनिन के घाट तीर पंकज बहु फूले।
मुक्ता चुगहि मराल मधुर बोलहिं अनुकूले ॥
सुभ चक्रवाक सुक पिक रटत, सारस मोर चकोर खग।
सुचि पीवत जल निर्भय रहत, मर्कटादि निज वृन्द सँग ॥
(श्रीअवध सागर ११। ३६)

बेठे मनिमय बुर्जे ऊपर। सखियन युत पियप्यारी छविधर॥
देखि देखि सरयू की लहरें। सब मन उठ्यो मदन की कहरे॥
सरजू पिय प्यारी को दृष्टा। आई धाइ सखिन युत हृष्टा॥
धूप दीप नैवेद वेद बिधि। पूजी पिय प्यारी मंगल निधि॥
नाना पुष्पमाल पहिराई। सब नाचन लागी गुन गाई॥
बोली मधुर मनोहर बामा। मनइप्सित करिये पियश्यामा॥
ताकी मृदुबानी सुनि प्यारी। जल क्रीड़ा की उठी खुमारी॥
पट झीने पहिरे कटि माहीं। सब कूदन लागीं जल माहीं॥
काचित् करन पकरिरघुनंदन। जलअगाध डारत अतिमुदमन
कोइछल करिपिय अंगनऊपर। गिरि लैजाइ पकरि जलभीतर
सबविधि करति मनोरथपूरन। अतिनिशंक नहिं करतिशंकमन
जुगमिलि निज२बाँहजोरिकरि। जल प्रवाहमें तैरति सुखभरि
कोइभय करि प्रीतमकटिपकरी। लिपटिरही पियअङ्गनजकरी
काचित् अंशुक जल प्रवाहमें। छूटि गई ही भइ अति मन में
ऊँचे चढ़ि कोउ कूदे जलमें। जनु दामिनि प्रवेशकर घनमें॥
जल उलचै बहु तिन पै कोऊ। अतिगहिरे जल बोड़त सोऊ॥
कोउ के पिय चोली बँदतारे। सखियन मिलि प्रीतमको घेरे।
मुख चूमै पिचकारी मारे। हार कहावै जयति उचारे॥
कोइ सखि पियसंग होड़लगावै। हारि जायपिय नाचनचावै

अति अनन्द जल में मच्यो, पिय प्यारी अलि साथ।
हास्य अपर कछु करन हित, वसन हरयो सिय नाथ ॥११

सारी इक नारी की छीने। बाहर आय कहत रँग भीने ॥
काकी सारी अहै सुहाई। जल सो निकसि लेहु सो आई ॥
वह लज्जित जलभीतर ठाढ़ी। कहन व्यंग प्रीतम रुचिबाढ़ी।
सकुचौ जिन ममआगे आवो। बहुविधि अंगपरसि सुखपावो
सुनि बहु नारि पियाको घेरी। वड़े चपल पिय जाइ न पकरी
पुनि तिनहूँ की सारी छोरी। हसत दिखाय बजाय हथोरी॥
बोली तब सिय मन सबनारी। स्वामिनि राखो लाज हमारी
दैडुबकी सिय पिय ढिग आई। गहि बोलो पिय बचन रमाई
छोन लई पिय सौ सब सारी। सखियन कहँ पहिरायो प्यारी

जनकलली हँसि कै कह्यो, मधुर रसीले वैन।
निजर अलिगन विलगकै, सजहु जुगल दिसिसैन॥१२।

जल विहार का प्रसंग इससे मिलता जुलता श्री युगल विलास के पाँचवे अध्याय के छन्द ५ से छन्द ३७ तक पढ़िये। पुनः श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी के अध्याय ५ श्लोक ५ से १६ तक भी द्रष्टव्य है।

उत प्रीतम दिसि राजति सखियाँ।
इत सिय संग खड़ी रुख लखियाँ॥
कर पिचकारी दुहुंदिसि मारै। उलचत जल गहि गहिरे डारै
उझकि पिया प्यारी मुख चूमत। कुंडलकेश उरझि नहि छूटत
दुहुँ दिसि हँसि२ कह सबआली। उरझे सदा रहो रसख्याली
चतुर सखी हँसि२ निरुवारति। व्यंग राग गावै मन भावति
कर कर गहि नाचे जल ऊपर चंचल चरननि बाजत नूपुर॥
छम२ थेइ थेइ तानन गावति। पिय प्यारी की बलि२ जावति
सियजल उलचतपिय मुखमाहीं। आवतबाहरपुनिफिरि जाहीं
विकल होत क्यों प्रीतम प्यारे। आजु वीरता कहाँ बिसारे।
हारि वदो तब बाहर आवो। नाहि त जल में रंग मचावो॥
बार बार पिय कह हम हारे। जयतिसीय जय बचन उचारे॥
प्यारी हृदय लगायो प्रीतम। करति निछावर मनिगन उत्तम

श्री रसमालिका के सातवे अवकाश के प्रारम्भिज चंचरीक, हरिगीत और द्वितोय चंचरीक छन्द भी जल विहार के हृदयग्राही वर्णन करते हैं।

यहि विधि जल क्रीड़ा* कियो, सिय पिय बाहरजाय ।
भूषन वसन सँवारि अलि, अँग अँग सजे बनाय ॥१३॥

मधुर भोग बहु ल्याय कै, दंपति को अरपाय ।
सिय पिय पावत प्रेम सो, शेष सखिन बरताय ॥१४॥

मुख प्रछालि कर पोंछि कै, पान मसाले पाय ।
सखिन उतारति आरती, बहु विधि लेति बलाय ॥१५॥

यहि विधि प्रथम सुकक्ष में, करि विहार बहु रंग ।
दुतिय कक्ष को चलत भे, सिय पिय सखियन संग ॥१६॥

* इति श्रीअशोकवाटिकायां प्रथमावरण वर्णनम् *

---

* श्री विदेहजाशरणजी महाराज ने स्वरचित श्री अशोक-वाटिका विलास के प्रथम विलास में श्रीअशोक वनिका वाली श्री सरयू धारा में नौका जल विहार का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। ग्रन्थ विस्तार भय से यहाँ उद्धृत नहीं हो सका।

श्री अशोक वाटिका का द्वितीय कक्ष

(षटऋतुकुञ्ज आवरण)

द्वितीय आवरण के नव तल्ले कोट महल का स्वरूप बर्णन :—

* वार्ता *

द्वितीय कक्ष (आवरण) का कोट । प्रथम खंड (तल्ला) चारो तरफ पीत मणि की दीवाल है, उसके ऊपर और मणियों के बेलिबूटे, और रचनाएँ, दरवाजे, झरोखे आदि बने हैं।

अनेक रंगों के जड़ीदार परदे पड़े हैं। दालानों में तीन तीन हाथ की कुर्सियाँ सजी हैं। उनमें अनेकों रचनायें बनी हैं। दालानों के अवकाशों में ऊपर चान्दनी तनी है। उसमें झब्बे झालरें लगी हैं। परदों में तथा चान्दनी में, चारो तरफ किंकिणी लगी हैं। पवन के प्रसंग से उसके शब्द बराबर हुआ करते हैं।

दीवालों में अनेक रंगों के चित्राम बने हैं। श्रीप्रिया प्रियतम जू के बाल, विवाह आदि चरित चित्रित हैं। मध्य के अवकाशों में रंग विरंग के फरश बिछे हैं।

प्रत्येक दालान में यूथ की यूथ नायिकायें कल्लोल कर रही हैं। अनेकों तरह के खेल खेल रही हैं।

कोट के द्वितीय खंड (तल्ले) की दीवाल नील मणि रचित है। उस पर और रंग मणियों की रचनाएँ बनी हैं। और सब पूर्वोक्त बातें जानना।

तृतीय खंड में श्वेत मणि की दीवाल पर और मणियों की रचनाएँ बनी हैं।

चतुर्थ खण्ड में पद्मराग मणि की दीवाल और मणियों की रचनाएँ, पंचम खंड में हरित मणि मयी दीवाल पर और मणियों की रचनाएँ, षष्टम खंड में वैदुर्य मणि मयी दीवाल, सप्तम खंड में श्याममणि मयी दीवाल, अष्ट खंड में धुम्र मणि-मयी दीवाल, नवम खंड में पांडुर मणिमयी दीवाल पर अन्यान्य मणियों की रचनाएँ हैं।

उनके ऊपर चारों तरफ कंगूरों की पाँति शोभित हो रही है। ऊपर बैठे हुये अनेक रंगों के कृत्रिम पक्षियों से वह शोभित हो रही हैं। चारों कोनों में चार कलश विलस रहे है। वे अनेकों सूर्य की प्रभा को हरण कर रहे हैं। उन कलशों पर कृत्रिम मोर बैठे हैं।

कोट के चारो तरफ विशाल विशाल गोपुर❀ बने हैं। प्रत्येक गोपुर पर अनेकों स्त्रियों का पहरा पड़ रहा है।

कोट की दीवालों में अनेकों तरह की नकल बनी है, जो कि साक्षात् की भाँति दर्शित होती हैं।

❀ त्रिकद्वारी गोपुर चहुँ ओरी। प्रतिहारिन ठाढ़ी रस बोरी॥
[श्रीअशोक वाटिका विलास]

कहीं पर समुद्र की नकल बनी है। जहाँ तक नेत्र जाता है, सर्वत्र जलमय दिखाई देता है। उस जल के भीतर कहीं बड़े विशाल-विशाल मगर बिचर रहे हैं, कहीं पर बड़े-बड़े मीन यूथ के यूथ जल में चल रहे हैं। इसी तरह से जो जो जीव समुद्र के रहने वाले हैं, सभी वहां दीख पड़ते हैं। तरंगके युक्त समुद्र साक्षात् की भाँति दर्शित होता है।

कहीं पर बन की नकल बनी है। उसमें अनेक जातियों के बृक्ष लगे हैं। बृक्षों के ऊपर जहाँ तहाँ अनेक तरह के पक्षी बैठे हैं। बहुत से पक्षी भूमि पर जहाँ तहाँ बिचर रहे हैं। कहीं पर यूथ के यूथ गज बिचर रहे हैं। कहीं झुण्ड के झुण्ड मृग बिचर रहे हैं। कहीं सिंह विचर रहा है। कहीं सिंह हाथी का मस्तक विदीर्ण कर रहा है। जहाँ तहाँ बड़े-बड़े ऋषि समाधि लगाये बैठे हैं। इसी तरह बन और जहाँ तक बन के रहने वाले जीव जन्तु हैं, सब दीखते हैं। यह सब रचनाएँ कोट की दीवाल में साक्षात् की भाँति दीख पड़ती हैं।

बसन्ताद्यर्तवो यत्र फल पुष्प समन्विताः।
नव पल्लव नम्राग्रा भ्रमद् भ्रमर वेष्टिताः॥
[श्रीहनुमत्संहिता रासपंचाध्यायी २। २६]

अर्थात् श्री अशोक वन में वसन्त आदि सभी ऋतुओं का निवास है। यहाँ सभी ऋतुओं में वृक्ष नव पल्लवों के भार से झुके रहते हैं तथा फल फूलों से समृद्धमान् बने रहते हैं।

कहीं-कहीं बड़े-बड़े पर्वत दर्शित होते हैं। उनमें जहाँ-तहाँ झरने झर रहे हैं। झरने कहीं पर भारी, कहीं पर छोटे हैं। इसी तरह कहीं बड़े भारी-भारी शहर, शहर की वस्तुएँ, और शहर के जीव जितने होते हैं, सब यथार्थ की तरह दर्शित होते हैं।

कहीं पर श्री सरयू जी का प्रवाह चल रहा है। दोनों तटों पर वृक्षावलि लगी है। घाटों पर जहाँ तहाँ मनुष्य स्नान कर रहे हैं। कहीं ध्यान लगाये माला फेर रहे हैं। कहीं यूथ के यूथ बालक मिल कर, तट के ऊपर से जल प्रवाह में कूदते हैं। इस तरह अनेक प्रकार की नकलें कोट की दीवाल में बनी हैं। कोट के अवकाश में चारो तरफ युगल पंक्ति अशोक वृक्ष लगे हैं। तिन के मध्य में षट ऋतु कुंज हैं।* प्रत्येक ऋतु कुंज के दो भेद हैं। एक ऋतु अनुकूला, दूसरा ऋतु स्वरूपा।

---

* श्री अशोक वनिका में सभी ऋतु कुञ्जों की स्थिति श्रीशिव संहिता को भी मान्य है। यथा—

"अशोक बनिका चेयं सर्वर्तु रस पूरिता।"

श्रीशिव संहिता २०। २०)

अर्थात् यह अशोक बनिका सभी ऋतुओं के सुख से भरी हैं।

'बनअशोक मधि परमसुहावन। षटऋतु कुंज बने मनभावन॥
पादप बिपुल अमित नव रूपा। चिन्मय विग्रह तुरिय सरूपा॥

[श्रीसिया अलीजी कृत 'नित्यरास']

❋ ग्रीष्म कुञ्ज अनुकूला का स्वरूप वर्णन ❋

(वार्ता)

चन्द्रमणि के कुंज बने हैं। उनके दीवालों में अनेक रचनाएँ बनी हैं। कुंजों के भीतर चारो तरफ मधुर मधुर वृक्षावली लगी है। तिसके बाद चारो तरफ लताएँ लगी हैं।

दीवालों में अनेकों बड़ी-बड़ी नालियाँ लगी हैं। उन नालियों में किसी के मुख पर हजार, किसी के दश हजार, किसी के एक लाख, बारीक-बारीक छिद्र बने हैं। उन छिद्रों से अनेक प्रकारों के सुगन्धमय जल के फुहारे बरसते रहते हैं।

"द्वादश कुंज बने रितु रूपा। द्वादशरितु अनुकूल अनूपा॥
यक यक ऋतु दुइ मास सुहाये। युग २ कुंज रितुन प्रतिभाये॥
मुख्य कुंज चौविस चहुँओरी। चौबिस चौक छवो रितु रूरी॥
अपर कुंजकी सख्या नाहीं। चहुँदिशि बने न वरनि सिराहीं॥'

(श्रीबिदेहजाशरणजी कृत श्रीअशोकवाटिका बिलास)

स्वरूपा, अनुकूला के अतिरिक्त एक ऋतु आभास वाला स्थल भी है, यथा—

"इष्टकोपल रत्नाढ्यै र्बहु मध्य महीतला।
जलयंत्र प्रणालीभिः प्राविडिव विभाविता॥"

(श्रीशिव संहिता ५। ५५

अर्थात् हरित रत्न के ईंटों पत्थरों से जटित हरी भूमि पर जल यन्त्र की फुही पड़ने से, वहाँ वर्षाऋतु का आभास होता है।

चारो कोनों में छोटे-छोटे पहाड़ बने हैं। उनसे सुगन्धमय झरने झहर रहे हैं। नालियों से जो फुहारे छूटते हैं, वे वृक्षों के ऊपर, लताओं के ऊपर, झरझर गिरते रहते हैं।

तिनके मध्य चारो तरफ फूलों के महल बने हैं। उन में फूल ही की दीवाल, फूल ही के स्तम्भ, फूल ही की पुतलियाँ और फूल ही के परदे बने हैं। दीवालों में नाना रंगों के फूलों से बेलिबूटे, जाली झरोखे, खिड़कियाँ तथा तरह तरह के चित्राम बने हैं। सारी रचनाएँ फूलमयी हैं

कुजों के दालानों में तरह तरह के फूलों की शय्या बिछी हैं। उनके चारो तरफ फूलों के गमले सजे हैं। शय्या के चारो तरफ जल यंत्रों से फुहारे छूट रहे हैं।

इन फूल महलों के मध्य में चारों तरफ फूलों की रंग-रंग की क्यारियाँ बनी हैं। तिन के मध्य में कहीं फूल बंगले हैं, तथा कहीं फूल वेदियाँ हैं।

कहीं मोती के बंगले बने हैं। उनमें यावत् रचनाएँ हैं, सब मोतिनमयी हैं।

कहीं पर सुन्दर अति कोमल-कोमल दूर्वों के फरश लगे हैं।

कहीं पर चन्द्रमणि के बंगले बने हैं।❀

❀ ग्रीष्म अनुकूला में खसखाना, तहखाना भी सम्मिलित किया जा सकता है। श्री कृपानिवास स्वामी के मत से चन्दन का साज भी ग्रीष्म अनुकूला के लिये उपयुक्त है, यथा—

इस प्रकार बाहर सर्वत्र ग्रीष्म ऋतु बरत रही है। परन्तु यहाँ हिम ऋतु वद्भुत सुखदायक कुंज बना है।

इस प्रकार का ग्रीष्म अनुकूला समझना।

❀ ग्रीष्म स्वरूपा कुञ्ज वर्णन ❀

(वार्ता)

ग्रीष्म स्वरूपा कुंज में सभी रचनाएँ सूर्यमणि की हैं। सूर्यमणि के ही कुंज, बंगले, बेदिका आदि बनी हैं। ग्रीष्म का जैसा स्वरूप होता है, वह यहाँ सब दिन बना रहता है। यह कुंज केवल हिम ऋतु में ही भोग्य है।

इसी प्रकार प्रत्येक ऋतु स्वरूप कुंज को समझना। जिस ऋतु का जैसा स्वरूप होता है, उसी तरह से यहाँ सदा दिखाते रहते हैं।

चन्दन विभूषन बसन तन चन्दन के
चन्दन सुराग भोग चन्दनी विहारवर।
चन्दन के हार हिय लिये हाथ पुष्प डार
चन्दनके हौजवर चन्दन फुहार झर॥
चन्दन भा चान्दनी ज्यों उभे चन्द सीतावर
चन्दन सुगन्ध मन्द शीतल समीर तर।
चन्दन निवास अली चन्दन उपास हित।
चन्दन प्रकास सम चन्दनी विलास कर॥

और ऐसा भी है कि एक ही ऋतुकुंज समय समय पर छवों ऋतुओं के धर्म एक ही ऋतु में दर्शाता है। ऐसी मणि विशेष की सामर्थ्य है।

❀ अथ ग्रीष्म कुंज विहार ❀

दोहा:—

द्वितीय कक्ष के द्वार पर, गज रथ पर असवार।
आये सखिन समाज युत, रचना लखत अपार❀ ॥१॥

❀ सोरठा ❀

आवन सुनि पिय प्यारि, कक्षेश्वरि कुंजेश्वरी।
सौंजें सकल सँवारि, आइ मिली अहलाद से ।२॥
करि पूजा सतकार, पट पाँवड़े दिवाइ के।
ले आई निज द्वार, छत्र चँवर व्यजनादि युत् ॥३॥
भोजन विविध कराइ, सिंहासन बैठाइ कै।
बीरी ललित बनाई, दइ दम्पति मुख कंज में ।४॥

❀ सवैया ❀

❀रूप धरे बन देवी अनूपम दम्पति रूप निहारि सिहाहीं।
सिन्धु नदी गिरि तीरथ कानन आनि बसे सगरे वन माहीं ॥
रागिनि राग सबै रितु मास प्रिया पिय की रुचि लै प्रगटाहीं।
नव निधि सिद्धि अठारह आइ निहारहि दम्पति की गलबाहीं॥

(श्रीअवध सागर ११।४०)

अतरन घ्रान कराइ, करि आरति मुख निरखि कै।
कियो नृत्य गुन गाइ, लेत बलैया दुहुँन की । ५॥

*** चौपाई ***

ग्रीष्म कुंज आये मनभावन । रचना देखन लगे मुदित मन॥
फूलन भूषन वसन बनाई । सखियन पिय प्यारी पहिराई ॥
फूलन क्रीट चन्द्रिका सोहै । फूल श्रवण भूषन मन मोहै ॥
फूलन वंदी बेसर फूलन । फूलन गोप बने मन मोहन ॥
फूल बिजावट बाजू फूलन । फूल वलय कंकन सुठिसोहन॥
फूलन माला बहु रंग सोहै । प्रीतमप्यारी छबि दरसोहै ॥
फूल कंचुकी कंचुक फूलन । फूलन सारी धोती फूलन ॥
फूलन गुच्छ लिये कर प्यारी । फूल छड़ी प्यारे कर धारी॥
फूलन के श्रृङ्गार बनाई । नख सिख पिय प्यारी पहिराई ॥
सखिन परस्पर निज २ अंगे । फूल श्रृङ्गार सजे नव रंगे ॥
सखिन सहित पियप्यारो बनठन। रचना फूललगे अवलोकन
फूलनमय गैंसो पर फिरहीं । फूलन चोट परस्पर करहीं ॥

फूलन ते खेलत बहु खेलन । आय जहाँ झरना झर जलकन
बैठे फटिक सिला दोउप्यारे । सहन लगे झरना की धारें॥
अतिसुकुमारी जनकदुलारी।सहिनहिसकी निकसि भइन्यारी

बोले प्यारे वीर की बेटी। ह्वै कर भागति हौ दै पीठी ॥
सिय बोली सुनु राजदुलारे। जलकन सहन वीरता धारे ॥
जानौ वीर वाप के बेटा । जौ तुम सहिहौ मैन चपेटा ॥

यहि विधि कौतुकमय बहु बातें। करि दोउ चले रंग रसराते
आये मधि बंगले फूलन के। फूल सेज जहँ मयन अयनके ॥
तापर बैठि उमगि दोउलालन।करनलगे बहुबिधिरसख्यालन

* दोहा *

सखिन सिंगारे नवल दोउ, सिंहासन बैठाइ।
मधुर सु भोग लगाइ कै, आरति करी सुहाइ ॥
सावन कुंज हिंडोल सुख, लूटन को दोउ लाल।
परिकर सखियन संग लै, चले बैठि सुखपाल ॥

* इति ग्रीष्म कुंज बिहार वर्णन *

पावस कुञ्जान्तर्गत श्रावण हिंडोल विहार :—

॥ श्रावण कुञ्ज का स्वरूप वर्णन ॥

※ चौपाई ※

हरित मनिन के चहुँदिसि महले । सावनकुञ्ज मचै जहँ चहले
हरित मनिन खंभावलि राजै । तामें पुतली बहु विधि भ्राजै
हरे हरे बृच्छन की पाँती । राजि रहो चहुँ दिसि सुख माती ।।
ता मधि लता निकुञ्ज सुहाये । हरे हरे चहुँदिसि छबिछाये ।।
हरे मनिन जल यंत्र फुहारे । छूटि रहे जहँ तहँ छबि धारे ।।
फूलन की बहु जाति सुहाई । चहुँ दिसि फूलि रही मनभाई ।।
जहाँ तहाँ फूलन पर न्यारे । भँवरन की बहु भीर गुंजारे ।।
जहँ तहँ कोकिल मोर चकोरी । सारस हंस मनोहर जोरी ।।
पारावत तीतर के यूथा । बिचरहिं सावन कुंज बरूथा ।।
ता मधि बंगला परममनोहर । जोहिजगै मनमाँहि असमसर
चहुँदिसि खंभावली सुहाई । हरित मनिन बहुभाँति बनाई ।।
परदे हरे रेसमी सोहैं । तामें जड़ीदार बूटो हैं ।।

ग्रीषम कुंज विहार करि, पावस कुंजहि जाय ।
झूला झूलै नवल दोउ, रस वर्षा बरसाय ।।
(श्रीअशोक वाटिका विलास)

चहुँ दिसि किंकिन लगी सुहाई। रुनझुन शब्द करै मनभाई।
चँदवा हरे रंगे के सोहै। झब्बे झालर लखि मनमोहै॥
१झार फनूस हरे रंग को है। लट्टू ललित हरित मनमोहै॥
ताके मध्य हिंडोरा राजै। पटुली छतुरी बहु विधि भ्राजै॥
कहँ लगि करौं हिंडोल बड़ाई। काम निपुन बहु जतन बनाई
तेहि कुञ्जन आये पियप्यारी। निरखत रचना भा सुखभारी२
धूप दीप नैवेद वेद विधि। कुंजेश्वरी पूजे दोउ रसनिधि॥
३बैठे ललन हिंडोरें जाई। लगी झुलावन सखि सुखदाई॥

१—श्री विदेहजा शरणजी महाराज के मत से श्रावण कुंज का प्राङ्गण भी हरे रंग का है, यथा—

चहुँदिशि कोट चारि दरवाजे। हरित अजिरमधि झूलन साजे॥
(श्रीअशोक वाटिका विलास)

❀ दोहा ❀

२—राज सुवन रुख पाइ कै, छाये घन चहुँ ओर।
बन अशोक थल छाइ कै, गर्जत बरसत घोर॥
घुमड़ि रह्यो सो रास रस, वन अशोक भरिपूरि।
बाहेर जन जानहि नहीं, बरसत है घन भूरि॥
(श्रीअवध सागर १०।३४,३५)

३—महारास के उपरान्त, श्रीअशोक वन विहार के सिलसिले में श्रीयुगल विनोद विलास ग्रन्थकर्त्ता जू कहते हैं :—

भीने विमल विहार सुरस दम्पति गमने तहँ।
नवल हिंडोल सुकुंज कलित कामद राजत जहँ॥

रस रस पेंग बढ़न जब लागे। प्रीतम प्यारी रस में पागे ॥
रस की चोट चलावत हँसि२। अरस परस रस अंगन गसि२
बहुसखि यंत्र बजावनलागी। बहुसखि नाचत अतिअनुरागी
बहु सखि स्वर लै तान अलापै। राग मलार अंग सब थापै॥

यहि बिधि सावनकुंज में, करि विहार दोउ लाल।
सरद् कुञ्ज की सुरति करि, चले संग सब बाल ॥

॥ इति पावस कुंजान्तर्गत श्रावण हिंडोल विहार ॥

प्रेम प्रदरसिनि सखी अमित विधि पूजि परम प्रिय।
झूलन बीच झुलाय आप झूली सनेह हिय ॥
गान तान रसखान सहित प्रीतम रिझाय अति।
निज अभिमत सब रीति करी पूरन विचित्र मति॥
[अध्याय ५। ६५, ६६]

श्री हनुमत्संहिता रासपंच अध्याय भी देखिये।
[अध्याय ५, श्लोक ४५]

❀ अथ शरद् कुञ्ज बिहार ❀

॥ दोहा ॥

आये सरद् सु कुंज में, पिय प्यारी सुख धाम।
रचना देखि अनेक विधि, पायो मन आराम ॥

❀ शरद् कुञ्ज का स्वरूप वर्णन ❀

वार्ता)

चारो तरफ स्फटिक मणि के विशाल कुंज बने हैं। कुंजों की दीवालों में नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। तिनके मध्य में चारो तरफ लता वृक्ष शोभित हैं। तिन के मध्य चारो तरफ फूलों की क्यारियां बनी हैं।❀

❀ रसिक सम्राट् श्रीमत् अग्रदेवायाचार्य जू ने श्री अशोक वन के रासकुञ्ज की रचना का बड़ा ही हृदयग्राही शब्द चित्र अङ्कित किया है—

श्री सरयू तट वन अशोक मधि, रास रच्यो श्री अवध विहारी।
चहुँ दिसि मनिमय कोट बिराजे, मध्य कुंज बहु न्यारी न्यारी॥
ताके चहुँ दिसि पादप राजै, त्रै संपति युत अति रुचिकारी।
ता आगे बहु लता कुंज हैं, जाति जाति की न्यारी न्यारी ॥
ताके चहुँ दिसि कृत्रिम पादप, जाति जाति मनिके छबि भारी।
ताके चहुँ दिसि गमले सुन्दर, बहुत भाँति के धर्यो सुधारी ॥
ताके चहुँ दिसि मोतिन झालर, मध्य में रचना बहुत प्रकारी।
मध्य भूमि बहु रंग मनिन के, बेली बूटा बहुत प्रकारी ॥

फूलों के ऊपर भँवर गुंजार कर रहे हैं। तरह तरह के पक्षी सुरीले शब्द कर रहे हैं।

तिन के मध्य में विशाल स्फटिक मणि का चौक है। उसमें नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। उसके ऊपर श्वेत रेशमी जाजिम बिछी है। ऊपर श्वेत चान्दनी तनी है। उसमें मोतियों की झालरें लगी हैं। चारो तरफ स्फटिक मणि की खंभावली लगी हैं। उन खम्भों में अनेकों चित्राम बने हैं।

उसके मध्य में एक चन्द्र मणि का सिंहासन सजा है, जो अनेकों चन्द्रमा का प्रकाश कर रहा है।

सखियों के संयुक्त श्री प्रियतम प्यारी जू इस प्रकार के रासकुंज में आये। श्रीरास कुंजेश्वरी जू ने दोनों सरकारों को बैठा कर षोडशोपचार पूजन किया। साथ में आने वाली सखियों का भी सत्कार किया। पुनः अनेक प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। पुनः रासचौक में ल गईं।❀

तापर जाजिम स्वेत बिछी हैं, चन्द्र किरन के अति छविहारी।
ता मधि सिंहासन अतिसुन्दर, स्वेत मनिनमय अति सुठिकारी॥
तापर बैठे युगल बिहारी, श्री नृपनन्दन जनक दुलारी।

पद का शेषांश श्र अग्र स्वामी जू की अष्टयाम पदावली
पृ० ३६ में देखें।

❀ सवैया ❀

❀प्रान पियारिहि राजकुमार जू बाग सुहावन आपु दिखाइकै।
आये जहाँ वर रास थली तहँ फूलन मंडप राख्यो छवाइ कै॥

रास श्रृङ्गार के समान दोनों सरकारों के अलग अलग रखे। पुनः श्रीप्रिया प्रियतम जू ने नखसे शिखा पर्यन्त परस्पर एक दूसरे का श्रृङ्गार किया। सखियों ने भी रास श्रृङ्गार किया।

❀ रास विहार वर्णन ❀

॥ चौपाई ॥

*रास मंडल दोउ राजदुलारे। अरस परस अंसन भुज धारे॥
मनिन सिंहासन ऊपरराजे। चहुंदिसि ललना गन छविछाजे
मनहुँ काम रति सेन सँवारे। विश्व विजय को कीन्ह विचारे॥
ऋतु बसंतवत द्रु मसबफूलै। चात्रिक सुक पिक कोकिलबोलै
सीतल मंद सुगन्धपवन चल। मधू भार तरुलता परस थल॥
मधुपन वृन्द नारि लै संगा। क्रीड़हि फूलन प रस रंगा॥

मध्य सिंहासन आप लसे पिय, वाम बिराजी सिया हरषाइकै।
वीरी खवावत खात लला, मिथिलेश लली मुख कंज छुवाइकै॥

(श्रीअवध सागर ११। ४४)

*अशोक वनिकां रम्यां राघवः सीतया सह।
प्रविवेश विहाराय तस्या एव विनोद भाक्॥ २॥
सखी सहस्र संयुक्ता जानकी जनकात्मजा।
रमयामास रामं सा नाना भावैः मनोरमैः॥ ३॥
ह्रिया कीर्त्या च शीलेन भर्तुः सीता हरन्मनः॥ ४॥

श्रीसत्योपाख्यान अध्याय २५।

पारावत वर सकुन सुहाये । जोड़ी मिलि क्रीड़हि मनभाये ॥
हँसि बोले पिय रासविहारी । चन्द्रकला मुख कंज निहारी ॥
रचहुँ रास मंडल सुखदाई । तान तात गति भेद जमाई ॥
*मुरली वीन मृदंग उपंगा । सारंगी सितार मुरचंगा ॥
सकल सुयंत्र एक सुर कीनी । यूथन यूथ सखी रँग भीनी ॥
मंडल करि कर सो कर जोरी । मध्य लाल दोउ करि रसबोरी

अर्थात् श्री अशोक वनिका श्री युगल रसिक जू की विनोद स्थली है । श्री मैंथिली जू के सहित श्री राघव जू ने विहारार्थ उसमें प्रवेश किया। श्री जनकेन्द्रनन्दिनी जू ने सहस्त्रों सखियों के साथ श्री कौशलेन्द्रकुमार जू को नाना मनोरम हाव भावों से रमाया, तथा स्वकीय शील संकोच गुणादिकों से श्रीजनकदुलारी जू ने अपने प्राणवल्लभ जू का मन हर लिया ।

*अशोक वाटिकायां तु विजहार बहून् ऋतून् ॥ ५ ॥
सीतया सह चासीनः पीठे मणि विचित्रिते ।
ततस्तु सख्यस्ताः सर्वे लेभिरे परमां मुदम् ॥ ४२ ॥
राघवेण समाज्ञप्ता नृत्यं चक्रुर्मनोहरम् ।
मृदंगं वादयामास काचित्परम सुन्दरी ॥ ४३ ॥
वादयन्त्यपरा वीणां कांस्य वाद्यं तथापरा ।
वंशिकां तानपूरांश्च पणवं मुरजं मृदु ॥ ४४ ॥
गायन्त्योभिनयं चक्रू रामस्याग्रे मनोहराः ।
नाना वेष धरास्तास्तु नृत्यमाना कलं जगुः ॥ ४५ ॥

लाल सिया कर निज कर धारे। नूपुर धुनि से ताल सँवारे॥
मृग सावक-नयनी रसभीनी। निरखत अंग अंग चित दीनी
मंडलचक्र फिरत सुधिनाहीं। ताल बन्धान गतिन्ह सँगजाहीं
छातीकटि अति लचकसुहाई। कमलनाल जिमि टूटिन जाई
बायें कर कटि अपर अंस धरि। गावत नाचत हँसतसुरनभरि

*** दोहा ***

ललना गन निज कर धरे, रास भाँवरी लेहिं।
सियालाल मुख देखिसुख, वारि मैन रति देहिं॥
यहि विधि सरद सुकुञ्ज में, करि विलास सुखरास।
चले लाल नृपनन्दिनी, हिम ऋतु कुञ्ज सुवास॥

॥ इति श्रीशरद्‌कुञ्ज रासविहार वर्णन ॥

अर्थात् श्री युगल किशोर जू सुदीर्घ तक श्री अशोक वाटिका के षट ऋतु कुञ्जों में विहार करते रह गये। श्री शरद कुञ्ज में आप श्रीमैथिली जू के संग मणि विचित्रित सिंहासन पर विराजे हैं। सखियाँ युगल छबि अवलोकन कर निहाल हो रही हैं। श्रीरास बिहारी जू की आज्ञा पाकर उन रमणियों ने मनोहर नृत्य किया। कोई सुन्दरी मृदंग बजाती है, कोई वीणा, कोई ताल, कोई वंशी, कोई तानपूरा, कोई पणव कोई मुरज बजाती हैं। नाना वेष धारण कर गान पूर्वक श्रीजानकी रमण जू के आगे नाट्योचित अभिनय प्रदर्शित किया।

(श्रीसत्योपाख्यान उत्तरार्द्ध अ० २५)

❀ अथ हिम ऋतु कुञ्ज विहार वर्णन ❀

❋ चौपाई ❋

❋हिमरितु महल सूर्यमनि सोहन। बनेविशाल लखत मनमोहन
कम्बल परदे द्वार झरोखन। रंग विरंग जड़े मनि रतनन ॥
पवनों को जहँ गति है नाहीं। सूरज मनि जहँ तहँ झलकाहीं
मणि पिंजरन में पच्छी सोहै। पाठ करत मुनिजन मन मोहै॥
पादप सूर्य मनिन बहुतेरे। साखा पत्र सुफूल घनेरे ॥
पर्यंकन बहु बने सुहाये। गरम मनिन रचना मनभाये ॥
गद्दे ओजनदार सुतूलन। मयन अयन जनु हैं सुखमूलन ॥
मनमथ चाव बढ़ावन हारी। तेहि पर बैठे प्रीतम प्यारी ॥

❀ चौपाई ❀

❋पुनि आये हिमरितुके कुंजहि। प्रियपिय सहित अलिनके पुंजहि
कुंज विशाल लाल रंग जोहै। चहुँदिसि कोट द्वार चहुँ सोहै ॥
ताके मध्य कुंज युग सोहै। इक पूरब इक पश्चिम जोहै ॥
युगल कुंज मधि एक वेदिका। तापर मण्डप चित्र रेखिका ॥
लच्छ खंभ मंगलमय रचना। देखत बनै न आवै बचना ।
लली लाल अलि युत तहँ आये। अलिगनके युग भाग बनाये ॥
दुहुँ समाज मिलि कीन्ह बिचारा। व्याह समय को सौजसँवारा
पूरब कुंज अलिन युत प्यारी। पश्चिम कुंज लाल पगुधारी ॥
अवध लाल दूलह बनि सोहै। जनक लली दुलहिन मन मोहै ॥
मिथिला अवध कुंज के नामा। व्याह उछाह होय दोउ धामा ॥

*** दोहा ***

बहुविधि हास विलास करि, हिमरितु कुञ्ज मझार।
सखिन जिमायो दुहुँन को, व्यंजन बहु रस सार ॥
पान मसाले देइ कै, अंगन अतर लगाई।
ता पाछे सखियन सवै, शेष प्रसादी पाइ ॥

॥ इति श्रीहिम ऋतु कुंज बिहार वर्णन ॥

दोउ समाज दंपति रुखजानी। विविध वेष धरि लीन्ह सयानी॥
दोउ दिशि दंपति रूप बनाई। कन्या वर लै लाड़ लड़ाई ॥
कोउ उपरोहित रूप बनाये। दोउ दिसि व्याह विधान बताये ॥
... ... ॥
गाँठि जोरि दोउ भाँवरि देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं ॥
जेहिविधि प्रथम भयो तसकीन्हा। सेंदुर दान नेग सब दीन्हा॥
दंपति एक सिंहासन राजे। कोटिन रति मन्मथ लखि लाजे ॥
पुनि कोहवर की लीला ठानी। केलि कुतूहल रसमय सानी ॥
कुंवरि कुंवर संग भोजन कीन्हें। शयन शाल सोये रसलीन्हें।
यहि विधि व्याह उछाह करि, कौतुक सकल नेवारि।
अलिन सहित चढ़ि नवलरथ, शिशिरकुंज पगु धारि।

श्रीविदेहजाशरणजी रचित श्रीअशोक वाटिका विलास।

❀ अथ शिशिर कुञ्ज विहार ❀

❀ चौपाई ❀

कुञ्ज शिशिर के बने सुहाये। पीत मनिनमय चहुँदिसि छाये
सकल सौज तहँ पीत बनाये। पीतहि पीत देखि मन भाये॥
आये सखि समाज सह प्रीतम। देखे रचना कुंज मनोरम॥
पीत पोशाकें बहु लै आई। कुंजेश्वरि सिय पिय मन भाई॥
धरि आगे पहिरावन लागी। पिय प्यारी के सुखमें पागी॥
पीत पोसाक पहिरि पिय प्यारी।
नख शिख पीत रंग छबि धारी॥
सखिन सकल निज अँग शृङ्गारे। भूषन बसन वसन्ती धारे॥
वासन्ती व्यंजन बनवाई। पिय प्यारी भोजन करवाई॥
आपस में सब विधि वरताई। शेष प्रसादी सखियन पाई॥
चन्द्रकला सिय पिय रुखपाई। यूथेश्वरि गन को बुलवाई॥
बोली सर्वेश्वरि मृदु वानी। सुनहु सखिन मम परम सयानी

तथा तयो र्विहरतोः सीता राघवयोश्चिरम्॥
अत्युक्रामच्छुभः कालः शैशिरो भोगदः सदा।
प्राप्तयो र्विविधान् भोगानतीतः शिशिरागमः॥
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण
७।४२।२५, २६।

करहुगोल दइ विधितैयारी। इक प्रीतम दिसि इकदिसिप्यारी
यूथेश्वरि दुइ गोल बनाई । लगि खेलन बसंत सुखदाई ॥
सिय उर तकि पिय कुंकुम मारे । प्यारी कुंकुम पिय उरतारे
प्यारी भरि २ मूठिन रोरी । पिय कपोल मसलत बरजोरी ॥
दोउन गोल परस्पर जूटी । होन लगी रस रंग अनूठी ॥
खेलत सिय बसंत सँग प्यारे । बहु विधि मची रंग की रारें॥

शिशिर ऋतू के कुंज में, बहु विधि खेलि वसंत ।
ऋतु वसंत के कुंज में, आये सखि सिय कंत ॥

॥ इति श्रीशिशिर कुञ्ज विहार वर्णन ॥

अर्थात् श्री अशोक वनिका के अभ्यन्तर नृत्यगान पूर्वक विहार करते हुये श्री मैथिली रघुनन्दन जू चिरकाल तक विराजे रहे। शिशिर ऋतु सदा भोग प्रदान करने वाली है, वह शुभ समय बीत गया।

विविध भाँति के भोग विलास करते हुये शिशिर को भी वहीं व्यतीत किया।

अथ बसन्त कुञ्ज विहार

❀ चौपाई

ऋतु वसंत के कुञ्ज अनूपम् । रचना वनी चित्र मनिभूपम् ॥
दीवालन में रचना सोहै । विविध भाँति चित्राम बनो है ॥
द्वार झरोखन अनुपम रचना । परदे बने विविध रंग वसना ॥
ताके मध्य वाग अति सुन्दर । जाति २ की भिन्न अवलिवर
लता ललित बहु जाति सुहाई । भिन्न २ की वरनि न जाई ॥
लता कुञ्ज बहु आकृति सोहै । रचना विविध देखि मन मोहै
रंग रंग के पुष्प खिले हैं । तिन पर भौंरन गूंज रहे हैं ॥
सीतल मन्द सुगन्ध सुहाये । त्रिविध वयार मनोज जगाये ॥
नानापुष्प सुगंधनउरिकै । दिसि अरु बिदिसगगन दइभरिकै
कोकिल मोर चकोर सुहाई सारस हंस कीर समुदाई ॥
पारावत अरु राज मराला । विचरहि जहँ तहँ तिनकी माला
बोलहिं मधुर मनोहर बानी । मानहुँ पंचवान रस सानी ॥

श्रीवसन्तकुञ्ज का फूल डोल उतसव भी चिन्तवन करने योग्य है ।
श्रीअशोक वन विहार क्रम वर्णन करते हुये श्रीयुगल विनोद विलास रच-यिता कहते हैं— (पाँचवा अध्याय)

रसिक शिरोमनि स्याम सीय संजुत सुषमाकर ।
सहज बिनोद विलास ललित अङ्ग२ कुसुमाकर ॥
बहुरि मनोहर डोल कुंज पद कंज पधारी ।
जुगल लड़ैती लाल परम प्रतिकास सँवारी ॥६७॥
हरषित अधिक उमग संग रस रंग रंगीली ।
वसत विनोद समेत 'बसंत रंगिनी' रसीली ॥

वेदी जहँ तहँ बनी मनोहर। रचना विविध भाँति अतिसोहर
मणिमय घाट बँधे सर नाना। सरसिज संकुल भँवरलुभाना
बंगले जालदार अति सुन्दर। मानोमदन वसत तिहि अंदर
पिय प्यारी दीन्हें गलवाहीं। निरखहिं रचना कुञ्जन माहीं
बंगले में आये दोउ प्यारे। जूआ खेलन साज पसारे
अपनो अपनो दाव लगावैं। जीतन को रसचाव बढ़ावैं ॥
ऐसो दाव धरी सिय प्यारी। प्यारे की करनी सब हारी॥

बहु विधि केलि कलोल करि, ऋतु वसंत गृह माह।
आये तीसर कक्ष में, सखिन सहित सियनाह ॥

॥ इति श्रीवसंतकुञ्ज विहार वर्णन ॥

विमल वसंत प्रसून सरस सम्पन्न कुंज कल।
अति विचित्र चित चैन दैन बोलहि विहंगथल। ६८॥
कोकिल कलित कदंब मधुर मधुकर मोहन मन।
चहुँ दिसि अति रमनीय सोक समनीय मोदघन॥
मदन महान उमंग रंग सुमनन संदीपन।
रचना अमल अनेक लसत दिग दसहुँ उदीपन ॥६९॥
तेहि सुचि सदन नरेस सुवन सहचरिन सहित अति।
झमकि झूलि झुलवाय प्रान प्यारी प्रसन्न मति ॥७०॥

—❀::❀—

इस प्रसंग में मूल ग्रन्थ श्री हनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी अध्याय ५। ४६, ४७। भी द्रष्टव्य है।

—: अथ तृतीय कक्ष :—

(द्रुम कुंजावरण)

॥ द्रुम कुञ्ज स्वरूप वर्णन ॥

(वार्ता)

तृतीय कोट के प्रथम खंड (तल्ले) में श्याम मणि की दीवाल है। उस पर अनेक मणियों की रचनाएं हैं। द्वितीय खंड में स्फटिक मणि, तृतीय में पीतमणि, चतुर्थ में पद्मराग मणि, पंचम में हरितमणि, षष्टम में नील मणि, सप्तम में पाटलमणि अष्टम में वैदुर्यमणि, तथा नवम में धुम्र मणि की दीवाल बनी है। इस तरह से चारो तरफ नव खंड का कोट महल बना है। कोट महलों के मध्य में यूथ की यूथ मनोरमाएँ जहाँ तहाँ कल्लोल कर रही हैं।

कोट के चारो तरफ चार गोपुर हैं। कोटके मध्य अवकाश❀ में अनेकों द्रुम कुञ्ज बने हैं।

❀ श्री विदेहजा शरणजी के मत से इस आवरण की अन्तराल वाली भूमि पीतमणि जटित है। उस पर विविध रंग मणियों की रचनाएं होगी ही। यथा—

❀ दोहा ❀

"अब तीतर आवरण लखु, रचना ललित सुहाय।
पीत मनिन की भूमि पर, वृक्ष कुंज दरसाय॥
(श्री अशोक वाटिका विलास)

जाति-जाति के वृक्षों* के कुंज बने हैं। कोई बृक्ष श्याम रंग के, कोई पीत रंग के, कोई लाल रंग के हैं। इस प्रकार बहुत रंगों के हैं। उनकी शाखा, स्तम्भ, पत्रों में भी कई भेद हैं। यद्यपि ये सभी स्वयं बृक्ष हैं, कृत्रिम नहीं हैं, परन्तु रंग रंग मणियों के तद्वत् प्रकाश करने वाले हैं।

---

*कानन तहाँ अशोक शोक तेहि देखत भाजै।
विविध भाँति के बृक्ष सबै बृन्दारक राजै॥
शाखा पत्र अनूप कहा कहौं शोभा उनकी।
फल कुसुमन के झुंड निरखि सुधि रहत न तन की॥
(श्रीमत् अग्रस्वामी कृत श्रीध्यान मंजरी छं० २६, २७)

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण, उत्तरकांड के व्यालिसवें अध्याय के प्रथम छब्बीस श्लोकों में श्री अशोक वनिका तथा यहाँ के विहार का बड़ा ही मनोरम वर्णन आया है। वहाँ श्रीअशोक वन के प्रस्तुत आवरण में स्थिति सत्ताइस जातियों के बृक्षों के नाम गिनाये गये हैं। यथा।—

चन्दन, अगुरु, देवदारु, कोविदार, कालीयक, नागकेसर, चम्पक, पारिजात, मन्दार, वकुल, नीप, कदम्ब, अशोक, पुंनाग, अर्जुन, सप्तपर्ण (छितवन), अतिमुक्तक, प्रियंगु, असन, लोध, आम, नारियल (तुङ्ग), मधूक, पनस (कटहल), कदली, जामुन, और अनार।

ग्रन्थ विस्तार भयसे मूल श्लोक यहाँ उद्धृत नहीं किये जा सके। श्री रसमालाजी रचित निम्नोद्धृत पद में इन द्रुमों के नामों का आनन्द लीजिये।

पादपों के महल बने हैं। जितने ढङ्ग महलों के हैं, वे सब पादपमय बने हैं। चारो तरफ पादपों के ही महल बने हैं। पादपों के ही बंगले पादपों ही की वेदियाँ बनी हैं। महलों के अवकाशों में मधुर-मधुर फूलों की गुल्मावली लगी है। उनके भीतर फूलों की क्यारियां हैं। उनके भीतर फूलों के मणिमय गमले सजे हैं।

विहरत वन अशोक सिय राम।
सुखद बिहार भूमि सरजू तट अनुपम नित सुखधाम ॥
बकुल रसाल कदंब तिलक हरिचन्दन बन बहु सोहै।
पारिजात संतान कल्प तरु विपिन देव लखि मोहै ॥
चलदल वट अशोक किंसुक तरु कोविदार धव फूले।
कर्णिकार कुरबक दाड़िम फल नारिकेल अनुकूले ॥
ताल तमाल पनस चंपक वन पाटल श्रीफल केला।
कल कपित्थ निम्बू जम्बू फल पूग केतकी एला ॥
दाख छुहार प्रियंग लवंग लता द्रुम सों छरभानीं।
मालति कुंद गुलाब चमेली वेलि वितान × बितानी ॥
(× पादप महल के चंदोवे)
मल्लि वसन्त लता तुलसी सु जुही नव केसरि फूली।
और अनेक लता अवली जिन पै भ्रमरावलि भूली ॥
[इन लताओं का ध्यान चतुर्थ कक्षमें भी कर्तव्य है]
वापिक कूप सरोवर शैल निकुंज अनेक विराजै।
प्रति द्रुम वेदि अनेकन कंचन भीति चहूं दिसि भ्राजै ॥

इस तरह से अनेक रचनाओं से युक्त द्रुम कुंज हैं। यदि कहो कि जितने अङ्ग महलों के हैं, वे सभी वृक्षमय कैसे होंगे ? तो ऐसी शंका नहीं करनी चाहिये। क्योंकि इस दिव्य देश की जितनी वस्तुएँ हैं, सभी श्री प्रिया प्रियतम जू की मनोमयी हैं। जैसा आप का मनोरथ होता है, वही सत्य हो जाता है। यह निश्चय जानना चाहिये ❀

कोकिल हंस मयूर पिकालि मनोहर बोलनि बोलै।
पंकज फुल्ल चतुर्विध सौरभ सीतल वारि कलोलै॥
सीतल मंद सुगंध सुहावन पवन घनी द्रुम छाही।
'रसमाला' विहरत जहँ दम्पति सखिन सहित गलबाँहीं॥
(श्रीअवध सागर ११। २६)

❀ छप्पय ❀

❀मनिन वेदिका आस पास द्रुम द्रुम प्रति सोहै।
पटरी रौस विशाल हरित दुर्वा मन मोहै॥
मनिन जटित वर रत्न खचित चौकी बहु राजै।
सिंहासन पर्यंक अमित कुरसी कहुँ भ्राजै॥
क्रीड़ा मृगादि गज अश्व नर नारि लता द्रुम खेल हित।
रचि रास नटै कहुँ पूतरी रुचिर बनी कल की ललित॥ १॥
विपिन अशोक विहार भूमिथल विविध बनाई।
त्रिविध लता द्रुमकुंज विविध सोहत अमराई॥
विविध कुंज संकेत विविध रास स्थल सोहै।
विविध वितान जु तने निरखि सुरमुनि मनमोहै॥
जहँ त्रिविध सरोवर वापिका विविध कंज फूल विसद।
अरु विविध सैल जहँ क्रीड़ही राम सिया परिजन सुखद॥
[श्रीअवध सागर अध्याय ११]

❀ द्रुम कुञ्ज विहार ❀

श्रीनृपनन्दिनी तथा श्रीनृपनन्दन जू सखी समाज सहित गजरथ पर विराजमान होकर, तृतीय कक्ष के दरवाजे पर आये।

नगारे का शब्द सुनकर श्रीकक्षेश्वरी जू निज अनुचरी समाज सहित आकर, बड़े धूम धाम से आप का स्वागत करके आपका निज कुंज में लिवा ले गईं। सिंहासन पर बैठा कर, श्री प्रिया प्रियतम जू को षोडशोपचारो से पूजन किया। अनेक प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। शेष प्रसादी सखियों ने सेवन किया।

तत्पश्चात् द्रुम कुंजों की रचना दिखाने लगीं। चारों तरफ सखी समाज निज निज सेवा साज लिये हैं। मध्य में श्री-प्रिया प्रियतम जू गलबाँही दिये रौसों पर चल रहे हैं।❀

❀बाग विहार काल में चिदानन्दमयी श्रीअशोक बनिकाजी अपने विविध अङ्गों से जैसी सेवा श्री युगल मनरंजन जू की कर रही है, उसका आनन्द निम्नोद्धृत पद से लीजिये।

सीतल मंद सुगंध पवन की लगत झकोरैं।
हालत द्रुम की डार भरत जनु पियहि अँकोरैं॥
झरत फूल बहु रंग गलीचा मनहुँ बिछाये।
कुसुमित छाया छत्र कदलि जनु चमर दुराये॥
फल पनस मृदंग बजाव जनु बिल्व देत करताल तल।
नितंत मयूर कपोत छबि निरखति लाड़िलि लालमल॥

(श्रीअवध सागर ११।३२)

परस्पर में नाना तरह के हास्य रस की वार्त्ता करते हैं। कहीं वृक्षों की रचना देखते हैं। कहीं कहीं मृग यूथ विचर रहे हैं। कहीं झुण्ड के झुण्ड पक्षी कल्लोल कर रहे हैं। फूलों के ऊपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। कहीं यूथ की यूथ मदमाती मनोरमाएँ नृत्य गान कर रहीं हैं।

इस तरह से विचरते हुये कुंजों की शोभा देखते हैं।❀ कहीं बंगले में विश्राम करते हैं। वहाँ विलासिनियाँ नृत्य गान करती हैं। कहीं पासा खेलते हैं। कहीं दम्पति ऐकान्तिक विहार करते हैं।

इस प्रकार से तृतीय कक्ष के द्रुम कुंजों में अनेक प्रकार से विहार करके, सखी समाज सहित चतुर्थ कक्ष के लिये प्रस्थित हुये।

॥ इति श्री द्रुम कुंज वाले तृतीय कक्ष का विहार वर्णन ॥

❀आह्लादिनो तु दम्पत्योरशोक वनिकैव सा।
तस्यां च दम्पती एवं नेत्रोत्सवतया स्थितौ ॥८॥
एक नेत्रं तयो रासीन्मिथो रूप वशीकृतम्।
वनश्रिया हृतं चान्यद्विरोधोपि तयोरभूत ॥९॥
(श्रीशिव संहिता अध्याय ६)

अर्थात् श्रीप्रिया प्रियतम जू के लिये श्रीअशोक वनिका आह्लाद स्वरूपा है। अतः दोनों वहाँ नयनानन्द सुखार्थ बिराजमान हैं। दोनों के एक-एक नयन तो पारस्परिक रूप दर्शनों के वशीभूत हो रहे हैं तथा दूसरे नयन को वन की शोभा ने मोह लिया है। अतः दोनों नयनों में कुछ पारस्परिक बिरोधाभास सा हो रहा है।

-: अथ चतुर्थ कक्ष :-

❋ लता कुञ्ज आवरण ❋

।। चतुर्थ कक्ष का स्वरूप वर्णन ।।

(वार्ता)

❋चतुर्थ कक्ष के नव तल्लों वाले कोट महल में प्रथम खण्ड वाली दीवाल चारो तरफ से पद्मरागमणिमयी है। उसके ऊपर अन्यान्य रंगों की मणियों से रचनाएँ बनी हैं। द्वितीय खंड की दीवाल नील मणि की, तृतीय खंड की पीतमणि की, चतुर्थ खंड की स्फटिक मणि की, पंचम खण्ड की हरित मणि की, षष्टम खण्ड की पाटल मणि की, सप्तम खंड की वैदुर्य मणि की, अष्टम खंड की धुम्र मणि की तथा नवम खंड की पांडुर मणि की दीवाल है। इन खंडों के भीतर बाहर अनेकों रचनाएँ हैं। उन खंडों के अवकाशों की गच्ची स्फटिक मणि की है। उन पर अनेकों रचनाएँ हैं।

❋ दोहा ❋

❋अब चतुर्थ आवरण लखु, नील रंग की भूमि।

लता कुंज बहु रंग के, चहुँ दिशि लखिये घूमि।।

❋ चौपाई ❋

कोट नवल चहुँ दिसि दरवाजे। चित्र मनोहर सोभा साजे ।।

सिय पिय अलिन सहित तहँ आये। लताकुंज जहँ लगत सुहाये

हरित पीत अरुनादिक रंगा। सदा एक रस नवल अभंगा ।।

ऋतु वसंत सोभित सब मासा। बहु रंग पक्षी करत निवासा ।।

सुक पिक मोर चकोर सुसारिक। सारस हंस लालमुनि आदिक

इस कक्ष के अन्तराल में विविध जातियों के रंग रंग के लता कुंज हैं। कहीं सेबती कुंज है, कहीं मालती कुंज है, कहीं चमेली कुंज है, कहीं जूही कुंज है। इसी तरह से अनेकों लता कुंज हैं।

उनमें जाली झरोखा, वेलि बूटा। खिड़की आदि सभी रचनाएँ बनी हैं।

कुंजों के मध्य में अनेकों प्रकार की बेदिकादि बनी हैं। तरह तरह के पक्षी कलरव कर रहे हैं।

चहुँदिसि सड़कन सुमनबिछाये अतर गुलाबन डारि सिंचाये॥
तेहि मग ह्वै विहरै दोउ प्यारे। अलिगन सेवा मौज सँबारे॥
प्रथमहि हरित कुंज पगु धारे। बैठे अरस परस भुज धारे॥
मेवा फल बहु अलि गन लाई। सिय पिय पावत करत बड़ाई॥

❀ दोहा ❀

फल भोजन जल पान करि, बैठे दोउ सुख पाय।
अतर-पान दै माल वर, अलिगन लाड़ लड़ाय॥

❀ चौपाई ❀

पुनि उठि हरषि चले दोउ प्यारे। दुसरे कुंज आय पगु धारे॥
पीत लता चहुँ दिसि रहि छाई। खंभे द्वार वितान सुहाई॥
लली लाल वहँ आय विराजे। चौपर खेलि अलिन सुखसाजे॥
पुनि उठि चलत भये पिय प्यारी। आगे आय खड़ी मृगधारी॥
गौर श्याम मृग रूर निहारै। चित्र समान पलक नहि पारै॥
सिय पिय निकट जाँयकर फेरैं। कछुक पवाय नवल छबि हेरैं॥

❋ लता कुंज विहार ❋

इस तरह से रचना युक्त लता कुंज में श्री कक्षेश्वरी जू सत्कार पूर्वक श्री महाराज दुलारे जू को समागत परिकर सखी समाज सहित लिवा लाईं, और कुंजों की रचना दिखाने लगीं।

सब कुंजों में युगल मनभ वन जू पधारते हैं, जहाँ जाते हैं, वहाँ की कुंजेश्वरी अपनी अनुचरियों के साथ सखियों के सहित दंपति का लाड़ पूर्वक सत्कार करती हैं।

इस तरह से लता कुंजों में खेलते खेलाते, सब सखियों को सुख देते, उन सबों से आप दोनों सुख प्राप्त करते, बहुत काल तक विहार करके, श्रीराजनन्दिनी राजनन्दन जू पंचम कक्ष को चले।

॥ इति श्रीचतुर्थ कक्षे लताकुंज विहार वर्णन ॥

वह्वासन गृहोपेतां लतागृह समावृताम्।
अशोक वनिकां स्फीतां प्रविश्य रघुनन्दनः॥
आसने च शुभाकारे पुष्पप्रकर भूषिते।
कुथास्तरण संस्तीर्णे रामः संनिषसादह॥
[श्रीमद् वाल्मीय रामायण ७/४२/१६-१७]

अर्थात् लता गृहों से युक्त, अनेक आसनों से सुसज्जित सुबिस्तृत अशोक बनिका में श्रीरघुनन्दन जू ने प्रवेश किया।

गिलम गलीचों से सजी गच्ची पर, पुष्प राशि से विभूषित मनोहर सिंहासन पर, श्रीजानकी रमण जू बैठ गये।

इस प्रकार लता कुंजों का वर्णन आर्ष ग्रन्थ में भी आया है।

❀ अथ पंचम कक्ष ❀

❀ फूल कुंज आवरण ❀

❀ पंचम कक्ष का स्वरूप वर्णन ❀

❀ वार्ता ❀

पंचम कोट महल के प्रथम खंड में हरित मणि की दीवाल है, द्वितीय खंड में पद्मराग मणि की, तृतीय खंड में पिरोजमणि की, चतुर्थ खंडमें श्याम मणि की, पंचम खंड में वैदूर्यमणिकी, षष्टम खंड में स्फटिक मणि की, सप्तम खंड में धुम्र मणि की, अष्टम खंड में पांडुर मणि की तथा नवम खंड में पाटलमणि की दीवाल है। प्रत्येक खंड की दीवालमें नाना रंगों की मणियों की रचनाएँ हैं।

❀ दोहा ❀

अब पंचम आवरण में, चहुँ दिसि लखि मन मोह।
पद्मराग मनि भूमि पर, फूल कुंज बहु सोह ।।
चहुँ दिसि मनिमय कोट पर, कलस कंगूरे सोह।
नव खंडे नव रंग के, ध्वज पताक छवि जोह ।।
सिंह पौरि चहुँ दिसि सुभग, नौबत धुनि सरसाय।
द्वारपालिका अलिन के, कर मनि बेंत सुहाय ।।
वापी कूप तड़ाग वर, सोभित मनि सोपान।
वेदी बंगले चौक मग, छबि नहिं जाय बखान ।।

पंचम कोट के मध्य अवकाशमें फूल कुंज हैं। जहाँ देखो तहाँ फूल ही कुंज दीखते हैं। कहीं गुलाब फूल कुंज है, कहीं एक फूल की प्रधानता है, और-और फूलों से तरह-तरह की रचनाएँ बनी हैं। कहीं चमेली फूल कुंज है। कहीं जूही फूल कुंज है। इस तरह से जाति-जाति के फूल कुंज, उनमें अनेकों तरह के बंगले, बेदियाँ, इत्यादि सब फूल ही फूल की रचनाओं से बनी हैं।

॥ चौपाई ॥

सियपिय अलिन सहित तहँ आये। रचना लखि उर आनंद छाये॥
प्रथम गुलाब चौक पगु धारे। अलिन सहित बैठे दोउ प्यारे॥
सुमन सिंगार अलिन युत कीन्हें। हरषि चले गलबाहीं दीन्हें॥

❋ पद ❋

अन्तःपुर सु अशोक विपिन मधि, चहुंदिसि धवल धाम रतिकारी।
मधि मधि पंक्ति पुष्प महलन की, चौहट राज सुभग सोभा री॥
वीथी सरल कुटिल बहु राजत, कंचन भूमि कलित गच ढारी।
सात सु भूमि सौध रतनन के, विहरत तिन मधि राम सिया री॥
वृक्ष सुखण्ड निकुंज सुशोभित, विहँग वृन्द कूजत मनहारी।
अशोक वाटिका मधि अन्तःपुर, राजत्त ललित सात कक्षारी॥
चहुंधा षट ऋतु कुंज मनोहर, जहं विहरत श्रीराम विहारी।
कुंजेश्वरी अनेकन सखिगन, सेवत रघुबर जनक दुलारी॥
करि सिंगार सुमनमय नख सिख, निरखत दंपति वेष छटारी।
धरि मेवा पकवान विविध विधि, करवावत भोजन विधि चारी॥

❀ फूल कुंज विहार ❀

जब श्री प्रिया प्रियतम जू पंचम कोट के दरवाजे पर आये, तब आपका शुभागमन सुनकर, श्रीकदंबेश्वरी जी ने बड़े धूम धाम से स्वागत पूर्वक निज कुंज में ले जाकर, विधि विधान से आप का पूजन किया। पुनः फूलों के कुंज कुंज में जाकर वहाँ की रचना दिखाने लगीं।

जल अँचवाय बीटिका दै मुख, अधर माधुरी रहत निहारी।
'युगल अली' सियराम चन्द्रमा, महल-महल सेवत सब नारी॥

(श्रीभावनामृत कादम्बिनी पद संख्या ३९४,
पद ३९५ भी फूल कुंज विहार परक है।)

॥ चौपाई ॥

नवल मालती कुंजहि आये। अलिन सहित बैठे चित चाये॥
अलिन सहित दोउ भोजन करहीं। हास विलासन आनंद भरहीं॥
विविध भाँति मेवा पकवाना। फेर पवावहिं अलिकरि गाना॥

❀ दोहा ❀

जल पिलाय अचवाय पुनि, अतर पान दै माल।
गलबाहीं दै अलिन युत, चलत भये ललि लाल॥

॥ चौपाई ॥

नवल सरोवर तट पर आये। मछलिन को बहु अन्न खवाये॥
विविध रंग जल जंतु सुहाये। दंपति छवि लखि आनँद पाये॥

कहीं वेदी पर दोनों सरकार बैठते हैं। रमणियाँ नृत्य-गान करती हैं। कहीं गेन्द खेलते हैं। कहीं परस्पर शास्त्रार्थ करते हैं। कहीं श्रीप्रिया प्रियतम जू अरस परस शृङ्गार करते हैं। कहीं पाशा खेलते हैं। कहीं फूल की शय्या पर विहार करते हैं।

तहँ ते गेन्द चौक पुनि आये। फूल गेन्द बहु तुरत मँगाये ॥
खेलन लगे हरषि दोउ प्यारे। हार जीत के दाव सँभारे ॥
मालाकार अली चहुँ ओरी। छवि निरखहि जनु चंद चकोरी ॥
अरस परस दोउ गेंद चलावहिं। खेलहिं में बहु कला दिखावहिं
अति आनन्द उमगि पियप्यारी। जोश भरे खेलहि श्रम भारी॥
प्रीतम हारि सिया जय पाई। सुमन वरषि अलि डङ्क बजाई ॥
अति अनुराग उमगि दोउ प्यारे। हरषि फुहारा कुंज पधारे ॥
अति विसाल इक नवल फुहारा। छत्राकार गिरे जल धारा॥
सुमन सिंहासन तेहि तर सोहै। लली लाल बैठे अलि जोहै ॥
लाल लली को अंग सँवारै। श्रमित निहारि व्यजन कर धारैं॥
अरस परस दोउ पान खवावैं। आधा लै निज २ मुख पावैं॥
कबहुँ परस्पर माल बनावहिं। विविध भाव तामें दरसावहि॥
तहँ ते हरषि उठे दोउ प्यारे। अलिन सहित आगे पगु धारे ॥
मोर चकोर चलत मग घेरै। भ्रमित होहिं घन चन्द्र उजेरै ॥
अलिन सहित चलि प्रीतम प्यारी। बेला फूल कुंज पगु धारी॥
सुमन सेज अलि तुरत बनाई। अति कोमल मसलंद लगाई ॥

❀ राग बिलावल ❀

*देखो सखि आज रात, क्षीर सिन्धु में विभात,
सम्पा घन मध्य युगल, लहरि राज सोहरी।
ताकत निज डाँट घाव, जुटत हटत लेत दाव,
बापी मधि मीन मगन, उछरै मन मोहरी। १॥
हंसन की अवलि घेरि, करत शब्द बेरि बेरि,
मानहुँ जय हेतु विविध, मधुर जंत्र बाजरी।

तिहि ऊपर ललि लाल विराजे। चहुँ दिशि ललित चारिदरवाजे
सुमन चाँदनी जाल झरोखे। खंभ किवाड़ फूल के मोखे॥
पान खात मुसकयात परस्पर। सेवा साजि खड़ी अलि सुन्दर॥
लगि मसनंद रसिकमनि उँगठे। सिय सोई पिय उरु सिर धरिके
व्यजन लिये पिय भँवर उड़ावैं। चारुशिला सिर छत्र फिरावैं॥
चन्द्रकला अलि चँवर लियेकर। प्रेमलता सिय चरन सेव वर॥
अपर अली चहुँदिशि ते सोहैं। सेवा साज सजे रुख जोहैं॥

❀ दोहा ❀

यहि विधि विविध विहार करि, अलिन सहित ललि लाल।
छठम खंड के द्वार पर, आये चाढ़ सुखपाल॥

* यह पद श्री रसमोद माधुरी पृ० ५६ में भी छपा है। वहाँ पाद टिप्पणी में कुछ शब्दार्थ भी देकर भाव स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है।

कबहूँ जुग भोग धाय, पूजत शिव को मनाय,
कबहुँ कंज ऊपर रस, लेत कंज राजरी ॥२॥

उलटि लता पलटि घटा, किलकत जुग परिघजुटा,
मानत नहिं तानत झक झोरत इतरात री ।
देखत यह अपन नैन, कहत नहीं बनत बैन,
गुंगे गुड़ खात 'मोद', कहत न सकात ही ॥३॥

इस तरह से पंचम कक्ष में नाना भाँति से विहार करके षष्टम कक्ष को चले ।

इति श्रीपंचम कक्षे फूल कुंज विहार वर्णन

❋ अथ षष्टम कक्ष ❋

❋ कृत्रिम बृक्ष कुञ्ज आवरण ❋

॥ कक्ष का स्वरूप वर्णन ॥

॥ वार्ता ॥

षष्टम कक्ष के कोट महल के नवो खण्डों में नील मणि की दीवाल है। उस पर अनेक रंगों की मणियों से बेलि बूटे, चित्रामादि बने हैं।

इस कोट के अवकाश में चारो तरफ कृत्रिम बृक्षों के कुंज बने हैं। यावत् अंग बृक्षों के हैं, सब मणि से रचित हैं। दीवाल, महराव, स्तंभादि सब बृक्षों के ही बने हैं। कहीं नील-मणि, कहीं पीत मणि, कहीं स्फटिक मणि, इस प्रकार रंग-रंग मणियों से कृत्रिम द्रुमों के कुंज बने हैं।

इन कृत्रिम पादपों का प्रमाण श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण उत्तर कांड अ० ४२ के ७, ८, और ९ वे श्लोकों में है।

तथैव तरुभिर्दिव्यैः शिल्पिभिः परिकल्पितैः।
चारु पल्लव पुष्पाढ्यैर्मत्त भ्रमर संकुलैः॥
कोकिलै भृङ्गराजैश्च नाना वर्णैश्च पक्षिभिः।
शोभितां शतशश्चित्रां चूतबृक्षावतंसकैः॥

अर्थात् जैसे स्वयं बृक्षों के नाम पूर्व श्लोकों में गिना आये हैं, उसी भाँति और भी सुन्दर पल्लव, पुष्पों से भरे दिव्य बृक्ष हैं। उनके

तिनके मध्य में चारो तरफ कृत्रिम वृक्षावली बनी है। उन वृक्षों के फल, पत्र इत्यादि सब कृत्रिम ही हैं। उनके ऊपर कृत्रिम पक्षी बैठे हैं।

वृक्ष पंक्तियों के भीतर चारो तरफ जाति जाति की कृत्रिम लताएँ बनी हैं। तिनके मध्य में कहीं बँगले, कहीं वेदिकाएँ, कहीं तड़ागादि अनेक रचनाएँ बनी हैं। भूमि पर झुंड के झुंड कृत्रिम पक्षी बिचर रहे हैं, यूथ के यूथ कृत्रिम मृग छलांगे भर रहे हैं। ये सब सूत्रों के सहारे विचरते और कूजते हैं।

मध्य-मध्य में कहीं मोती के वृक्ष, कहीं मूंगा के बृक्ष बने हैं। जहाँ-तहाँ यूथ की यूथ मनोरमा नायिकाएँ कल्लोल कर रही हैं।

इस प्रकार षष्टम कक्ष की रचना है। इस प्रसंग में नीचे वाली चौपाई स्मरणीय है।

"विधिहि भयेउ आश्चर्य विशेषी।
निज करनी कछु कतहुँ न देखी।।"

पुष्पों पर मत्त भ्रमर बैठे हैं। विचित्र आम्र शिखाएँ कोकिल, भृङ्गराज तथा रंग विरंगे पक्षिओं से सुशोभित हैं। इन सारे समाज की रचना शिल्पियों ने की हैं। अर्थात् सब के सब कृत्रिम हैं।

पूर्वोक्त बृक्ष कृत्रिम ही है, इस विषय को स्पष्ट करने के लिए महर्षि आगे बताते हैं कि—

❋ कुञ्ज विहार ❋

श्री प्रिया प्रियतम जू जब षष्टम कोट के फाटक पर आये, तब श्रीकक्षेश्वरी जू आपके शुभागमन का शब्द सुनकर, निज अनुचरियों के सहित आईं। पटपाँवड़े देती, स्वागत उत्सव पूर्वक अपने कुञ्ज में ससमाज आपको लिवा गईं। विधिविधान से पूजन कर, कुंजों की रचना दिखाने लगीं।

श्री प्रिया प्रियतम जू कुंज-कुंज प्रति जाकर अनेकों क्रीड़ाएँ करते हैं, और सभी बनिताओं को आनन्द देते हैं।

इस तरह से षष्टम कक्ष में नाना प्रकार की केलि क्रीड़ा कर, श्रीलड़ैती लाल जू ससमाज सप्तम कक्ष को चले।

इति षष्टम कक्षे कृत्रिम बृक्ष कुंज
विहार वर्णन।

शातकुम्भानिभाः केचित् केचिदग्नि शिखोपमाः।
नीलाञ्जन निभाश्चान्ये भान्ति तत्रस्म पादपाः ॥६॥

अर्थात् कोई बृक्ष तो स्वर्ण के समान हैं, कोई (मणि रचित होने के कारण) अग्नि शिखा के समान चमकीले हैं, कोई (श्याम मणिरचित होने के कारण) नीले अंजन के समान हैं। मणि रचित होने से सभी 'भान्ति' अर्थात् चमक रहे हैं।

-: अथ सप्तम कक्ष :-

* चतुश्चौक आवरण *

॥ कक्ष स्वरूप वर्णन ॥

(वार्ता)

सप्तम कोट की दीवालों की रचना नवों खण्डों की विचित्र मणि कृत जानना। ये मणि गण घंटे-घंटे पर रंग बदलते रहते हैं। जैसे घण्टे भर तक नील रंग दर्शित हुये, पुनः वही मणि गण दूसरे घण्टे में पीत हो गये, पुनः तीसरे घण्टे में सब लाल हो गये। इस तरह प्रत्येक मणि दिन भर में अनेकों रंग बदलती रहती है। ऐसी ही मणियों के कोट वाले कुंज सब बने हैं।

इस कोट के मध्य अवकाश में चारों तरफ चार चौक हैं। पूर्व चौक में केलि कुंज, दक्षिण चौक में रासकुंज, पश्चिम चौक में हिंडोलकुंज, और उत्तर चौक में फाग कुंज हैं।

प्रत्येक चौक के मध्य अवकाश में चारो तरफ वृक्षावली लगी है। उनके मध्य में तरह-तरह के फूलों की क्यारियां हैं।

चारों चौकों के मध्य में एक बड़ा विशाल* तड़ाग है।

---

* श्री रुद्रयामल अन्तर्गत श्रीअयोध्या माहात्म्य के बारहवें अ० में श्रीअशोक वन का वर्णन श्लोक २२ से ५६ तक बहुत सुन्दर ढङ्ग से हुआ है। वहाँ श्री अशोक वाटिका के मध्य में श्री सीताकुण्ड की स्थिति बताई गई हैं, यथा—

उस तड़ाग में चारो तरफ मणियों के सोपान बन्धे हैं। अनेकों तरह के बुर्जे बने हैं। उस तड़ाग के मध्य में षष्ट* आवरण है। प्रथम आवरण में चौसठ, द्वितीय में बत्तीस, तृतीय में षोड़श, चतुर्थमें अष्ट यूथेश्वरियों के ससमाज निवास महल बने हैं। पंचम आवरण में अष्ट सेवा कुंज हैं। षष्टम आवरण में श्री प्रिया प्रियतम जू के रहने के लिए निज महल है। इन सबों में अनेकों रचनायें हैं। कहाँ तक वर्णन करें ?

तात्पर्य यह कि जब श्री युगल सरकार श्रीअशोक वाटिका में पधारते हैं, तब बहुत दिनों तक यहीं रहते हैं, क्योंकि श्री अशोक वाटिका आपको अधिक प्रिय है। इससे षष्टम आवरण वाले निज महल में खास निवास रखते हुये, अन्यान्य कुंजों में जाया करते हैं।

"तस्यां तु वाटिकायां च सीताकुण्डं विराजते।
सीतया किल तत्कुण्डं स्वयमेव विनिर्मितम्॥' ४६॥

अर्थात् श्रीअशोक वाटिका के मध्य में श्रीसीताकुण्ड स्थित है। इसे स्वयं श्रीमैथिली जू ने अपनी कृपा से प्रकट किया है।

श्री अवध सागर के ग्यारहवें रत्न के ३३ वें छन्द में भी—
"वन अशोक के मध्य सुहावन कुण्ड सिया को॥" कहा गया है।

सम्भवतः यही विशाल तड़ाग श्रीसीता कुण्ड है।

* विशाल तड़ाग के मध्य में छैः आवरणों की जो चर्चा श्रीचरण कर रहे हैं, उनके नाम तो यहाँ आये, पर उनके विस्तृत वर्णन आगे नहीं किये गये।

उस तड़ाग में चारो तरफ चार सड़क हैं। चारो कल पर बने हैं। जब चाहें अलग कर दें, जब चाहे लगा दें। इस प्रकार से सप्तम कक्ष की रचना जानना।

❀ अथ कक्ष विहार वर्णन ❀

श्रीप्रिया प्रियतम जू सखी समाज संयुक्त जब सप्तमकोट के दरवाजे पर आये, तब संग की सखियों ने द्वार के नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर कक्षाधीश्वरीजी अपनी सखियों के समाज सँयुक्त बाजे गाजे के साथ दरवाजे पर आईं। दोनों सरकारों का पूजन कर प्रणाम किया। सब समागत सखियों से मिलीं।

तत्पश्चात् पट पाँवड़े देती, नृत्यगान करती, निज कुंज में ले जाकर दोनों सरकारों को सिंहासन पर विराजमान कराया। अनेकों प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। आचमन कर,कर दोनों सरकार को बीटिका पवाई अतर घ्रान कराकर आरती उतारी। तत्पश्चात् शेष प्रसाद आपस में बरता कर सखियों ने पाया। तत्पश्चात् श्रीकेलि कुंज को श्री युगल मन-हरण जू चले।

रसिकराज श्रीविदेहजा शरणजी महाराज ने पूज्यपाद श्रीग्रन्थकर्त्ता जू की कृपा प्रेरणा से स्वरचित श्रीअशोक वाटिका विलास के आठवें से बारहवें आवरणों तक का बिशद बर्णन किया है। अतः उतने अंश को प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग में जोड़ दिया गया है।

* चौपाई *

*केलि कुञ्ज पहुँचे दोउ प्यारे। श्री नृपनन्दिनि राजदुलारे ।।
कुंजेश्वरि पूजन विधिकीन्हीं। नृत्यगान करि बहुसुखदीन्हीं
कुंजेश्वरि बोली मृदुबानी। सुनहु प्रान जीवन धन दानी ।।
कुञ्ज अनेकन हैं इहि माहीं। भिन्न भिन्न रचना है ताही ।।
कोई कुंज तो ऐसो आहीं। छन लाली छन पीत दिखाहीं
छन स्यामल छन गौरसुसरसे। छन पाटल छन हरित सुदरसे
कोइ छन दिन रजनी पुनि छनहीं।
छन प्रभात छन सन्ध्या बनहीं ।।
कोई छन हिमऋतु दरसावै। छन ही में गरमी पुनि लावै ।।
छन पावस छनशिशिर दिखावै। छन बसंत छन सरदसोहावै
ऐसो कौतुक बहुत दिखाते। कुंज २ प्रति बरनि न जाते ।।
जहँ मरजी हो तहँ लै जाऊँ। पिय प्यारीको सुखदरसाऊँ ।।

---

* श्रीअशोक वाटिका विहार करते हुये श्री केलि कुंज में पधार कर वहां वहुविधि विहार करने का वर्णन श्री युगल विनोद विलास के अ० ५, में पढ़िये ।

अपर केलि कल कुंज गये सुख सिन्धु सुभग तन।
जेहि थल बृन्दा सखी भरी रसरंग नेह धन ।।
नित्या नित्यानन्द महानिधि निज मज्जति मन।
दंपति चरित सप्रेम गाय वारति तन मन धन ।।६३।।

दंपति बोले सुनहु सयानी । तुम सबही विधिहौ सुखदानी
जहाँ २ कौतुक के सचना । तहँ लै चलहु दिखावहु रचना

* केलि कुञ्जान्तर्गत कौतुकागार विनोद *

* सोरठा *

सुनि दंपति के वैन, कुंजेश्वरि हरषित भई ।
चंचल करि निजनैन, कौतुक गृह को लै चली ॥

* चौपाई *

कौतुक गृह आये दोउ प्यारे । कुंजेश्वरि सब कहँ सतकारे ॥
कौतुक गृह की रचनाभारी । लगीं दिखावन न्यारी न्यारी ॥
कुञ्ज मध्य इक संदुक भारी । तामें लगे सूत्र सब न्यारी ॥
पृथ्वी तल होइ पुनि चहुँफेरे सूत्र लगे सब कौतुक केरे ॥
जिस कौतुक को चहै दिखावै । ताहि सूत्र पर हाथ चलावै
दीवालन के अन्दर माहीं । बाजे बहु दरसे सब ठाहीं ॥

रास रसिक सिरमौर तत्र बहु विधि विहार करि ।
विपुल भाँति सनमानि नवल निज नाह नेह धरि ॥
कामकेलि कल सहित तष आली रसज्ञ रचि ।
बहुरि सुखद प्रिय कुंज आय राजे सुनेह सचि ॥६४॥

इस प्रसंग में मूल ग्रन्थ श्रीहनुमत्संहिता, रास पञ्चाध्यायी, अ० ५ श्लोक ४२, ४३ । भी देखने योग्य है ।

बिना बजाये ही सब बाजत । ताल तान गतिभेद उचारत॥
सबके सुर मिलि इक ह्वै जाहीं। एक न भिन्न ताल से जाहीं
बड़े बड़े जे गुनी कहावैं। अचरज करैं ताहि सिर नावैं ॥
पुनि जब दूसर कल को फेरी। सजि सिंगार नारि बहुतेरी॥
दीवालन अन्दर में दरसैं। करैं कटाच्छ रंग बहु बरसैं ॥
देखि लाल विह्वल ह्वै जावैं। दीवालन में हाथ चलावैं ॥
वे तो इनके हाथ न आवैं। ताली दै दै इन्हें लजावैं ॥
बाहर की जितनी सखियाँ सब। हँसन लगी दै दै ताली तब
इतनी नारी संग रहतु हैं। तद्यपि कामहि को तरसतु हैं ॥
पुनि वे नृत्यकरन तबलागी। हाव भाव करि रतिसुखपागी
जो जो रसके भाव दिखावैं। सांगोपाँग तिनहि दरसावैं ॥
पुनि कुंजेश्वरि कल को फेरी। होरी होन लगी बरजोरी ॥
रंग भरे चहबच्चे सोहैं। दीवालन में जहँ तहँ जोहैं ॥
करपूरन के चूर सजाये। रंगन के बहु थाक बनाये ॥
नारि पुरुष निकसे बहुतेरे। पिचकन साजि साजि बहु दौरे
मारहिं पिचका भरि भरि रंगन।
भीजि जाहिं नख सिख सब अँगन ॥
बस्त्र महीन अंग सब काहीं। भीजे ते सर्बाङ्ग दिखाहीं ॥
नारी झुंड २ मिलि करिके। पुरुषहि घेरि नचावहिं धरिके

माने हार तो छूटन पावै । नहिं तौ नारि सिंगार सजावै ॥
वह लीला अदृश्य भई जब । सर में नृत्य लगे होने तब ॥
बहु नारी मिलि बाहांजोरी । जल के ऊपर नृत्य करो री ॥
पुनि सब जलके भीतर जाई । नृत्य करन लागी रसदाई ॥
नाना भाँतिन यंत्र बजतु हैं । गान ताल लै स्वर उचरतुहैं ॥
कोइ अपरोक्ष दीखती नाहीं । बहुविधि कौतुककुंजे माहीं ॥
रचना विविध न बरनि सिराहीं । पियप्यारी देखत हरषाहीं

* दोहा *

यहिविधि कौतुक देखिके, संग सखिनके व्रात ।
चंग चौक आये बहुरि, पिय प्यारी हुलसात ॥

* इति श्रीकौतुकागार विनोद *

केलि कुञ्ज अन्तर्गत चंग चौक

॥ चौपाई ॥

कनक अटा चढ़ि सोहत न्यारे। सखिन संग सिय राजदुलारे
कुंजेश्वरि बहु गुड्डी लाई। रंग रंग की वर्रानि न जाई ॥
पीत रंग कोइ गुड्डी राजे। ता मधि मोर स्याम रँग आजे॥
स्याम वरन की गुड्डी आहीं। तामें हंस गौर झलकाहीं ॥
कोउ महँ सारस जोड़ी सोहै। शुग्गी पंक्ति कतहुँ मनमोहै॥
दोउआगे गुड्डी धरिदीन्हीं। निज२ चीन्हि राखि दोउलीन्हीं
स्याम रंग प्यारी को भाई। पीत वरन प्रीतम सुखदाई ॥
भाँति अनेक पतंग नचवत। पृथ्वी छ्वाय अकास चढ़ावत
लरत पतंग अनेक प्रकारा। यथा रंग चीन्हन अनुसारा ॥
निज पतंग पिय सिय पर नांधत।
सिय पतंग को बहु बिधि बांधत ॥
सिय निजचातुरता दरसावत। निज पतंगहँसि आसुछुड़ावत
कोमल करनि फिरावतप्यारी। कौतुककरि पिय चंगपै डारी
हँसिप्यारी फंदे बहुडारी। सियमुख लखिभे थकित खेलारी
पियपतंग सिय दीन्हगिराई। सिय जीती अलि वाद्य बजाई

* दोहा *

दंपति यहि बिधि परस्पर, खेलत विविध प्रकार।
मोद वढ़ावत सखिन हिय, विपिन अशोक विहार॥

॥ इति श्री चंग चौक विनोद ॥

केलि कुञ्ज अन्तर्गत गेन्द चौक विनोदः—

* चौपाई *

गेन्दचौक आयेपुनि दंपति। सबही बिधिसखियनसुखसंपति
कुंजेश्वरी गेन्द लै आई । जामें किंकिन लगी सुहाई ।।
जुगल गोल सखियन करि लयऊ।
इक सिय दिसि पिय दिसि इक भयऊ।।
खेलत गेन्द दोउ रस फँसिके। छाती तानि चलावत हँसि के
झमकि झमकि दोऊ दल दौरे । नूपुर धुनि सरसी चहुँ ओरे।।
अतिलाघवता करि सियप्यारी । कन्दुक केलि कला चितधारी
प्रीतम की सीमा से बाहर । पुनि पुनि करत गेंद ताड़न कर ।
सिय की ओर चलावत प्रीतम । बीचहि रोकि लेति हैं हरदम
प्रीतम करि बहु विधि चतुराई । बहुत वार सिय ओर चलाई
पिय के कन्दुक एकहु वारा । जात नहीं सिय सीमा पारा ।।
अति चंचल ह्वै ताड़त जाई । सिय चंचलता कहि नहि जाई
अलकैं छुटि२ मुख पै आवै । सिय निज हाथनि दूरि हटावै।।
मुख मंडलपै श्रमकन झलकै। वारिज कोस ओस जनुचमकै
गेन्द खेल की लाघवताई । जनु दामिनि बहु छिति पै धाई
निरखि पिया सिय चंचलताई । पवन मनो गति वारत जाई
स्वेदन तरवर जदपि भयो है । तदपि न खेलन चाव गयोहै।।

दौड़ि पिया सिय कंठ लगाई। अलं प्रिय यह मोहि न भाई॥
अति सुकुमार अंग तव प्यारी। श्रम नहिं अस तेरे अनुहारी॥

॥ दोहा ॥

अस कहि प्रीतम अंक में, सियहि लीन्ह बैठाइ।
मुख पोंछत पंखा करत, बहु विधि लेत बलाइ॥
सखिनसिमिटि चहुँओरते, सियपिय ढिगमेंआय
सेवा समयोचित सरस, करन लगी हरषाय॥
सिंहासन राजत रुचिर, तापर दुहुँ बैठाय।
भोजन सविधि कराइकै, नृत्य कियो गुनगाय॥
शेष प्रसादी पाइ कै, आपुस में बरताइ।
पिय प्यारी को लै चली, और कुञ्ज हरषाइ॥

॥ इति श्रीगेन्द चौक विनोद ॥

श्री अशोक वनिका के अभ्यन्तर कन्दुक क्रीड़ा का बड़ा ही सरस वर्णन श्रीशिव संहिता अध्याय १४, श्लोक ४८ से ६६ तक किया गयाहै। ग्रन्थ विस्तार भय से वह उद्धरण यहाँ नहीं दिया जा सका। उस वर्णन की कुछ छाया प्रस्तुत रचना में भी पड़ी है।

केलि कुञ्ज अन्तर्गत अभिनयशाला में योगिनी लीला

*** चौपाई ***

मनिमय महल बने चहुँ ओरे। ता मधि लता कुञ्ज चहुँफेरे॥
ताके मध्य वेदिका सोहै। रचना रुचिर जासु मन मोहै॥
ताके ऊपर सिय पिय राजे। चहुँ दिसि सखियन मंडलगाजै
कोउ मिसु करि सिय को बहलाये। लाल कुञ्ज ते बाहर आये
रूप योगिनी सजे पियारे। बड़े चतुर नहि परहिं चिन्हारे॥
पुष्ट उरोज बनाय सजाये। मनहुँ मदन निज वच्छ बसाये॥
आये ताहि कुञ्ज दरवाजे। जहँ सिय के दरबार बिराजे॥
छद्म योगिनी हँसि कह बानी। सुनो द्वारपालिनी सयानी॥
हौं परदेसन रहने वाली। कोककला से सब विधि पाली॥
खबर देहु रानी सो मेरी। जोगिन दरसन चाहै तेरी॥
सिय जू सों सो जाइ सुनाई। जोगिन एक दरस को आई॥

बोली प्रिया जाय लै आवो। कैसी है वह आनि दिखावो॥
द्वार पालिनी तिहि लै आई। करि प्रनाम सिय ढिग बैठाई॥
सियबोली सुनु सखी पियारी। केहि कारन आगमनतिहारी
जोगिन बोली हे महरानी। काम शास्त्र में बहुविधि जानी

मिली न अबतक कोऊ नारी। जाहि दिखावौं निज गुनभारी
मेरे गुन को परखन वारी। जग में विधि सिरजी नहिं नारी॥
गुनग्राही हौं आप सयानी। दरसावौं गुन जौ मनमानी॥
जो गुन काम शास्त्र नहि पैहौ। कला चातुरी ताहि बतैहौं॥
सिय बोली सोकहौं बखानी। जो जो कला कोक की जानी॥
प्रथमहि छोटे गुन दरसाऊँ। फिर पाछे गुन गूढ़ बताऊँ॥
प्रथम परीक्षा लीजै मेरी। फिर पाछे मन सुफल भरे री॥
संप्रयोग चिर ते तिय अंगा। शिथिल होय चाहै नव रंगा॥
तिहि को जौ हमार कर परसै। तीनों गुन तिहि तियमें दरसै
मुग्धा सी चाहै बनि जावै। मध्यावत वा पियहि छकावै॥
अगर नवोढ़ा सुखको चाहै। पिय सँग तैसहि रस निरबाहै॥
चाहै मध्या सुख को गोरी। अंग विकास होय तैसो री॥
वारक परसे ते गुन तीनों। तिय में रहै लहै रस भीनो॥
छद्म जोगिनी की सुनि बानी। उक्ति युक्ति सियके मनमानी
चन्द्रकला जू बड़ी सयानी। जोगिनि चतुराई सब जानी।
जोगिनि तुम जो कहीबखानी। सो सब सत्य न झूठसयानी
पहले अपने अंग परीक्षा। देहु करहु फिर जो तव इच्छा॥
जोगिनि तब बोली मुसकौहैं। का तो मन में भर्म भयो हैं॥

मैं अपने ही अंग सुमाहीं । देत परीक्षा शंका नाहीं ॥
मोर परस कर अस मरजादा । एकै परस कार्य सो साधा ॥
दूजीवार फेर अस परसौं । काय हानि ह्वै है पुनि तरसौं ॥
मैं अपनो अँगपरसि चुक्योहैं । अब परसो तो हानि रख्यो है
इतनी शंका है यह भारी । और नहीं आपत्ति हमारी ॥
जो अँग तेरे सोई मोरे । या में का संदेह बसो रे ॥
चन्द्रकला तब नैन सैन भरि ।
सखियन दिसि चितई मुरि हँसि करि ॥
चहुँ दिसि ते सखियन सब दौरी । छोरि लई नीवी बरजोरी
हाँ हाँ करत रही वह नारी । छीनि लई कटि सो तिहि सारी ॥
पुनितिहि की चोली बँदतोरी । करनलगी बहुविधि बरजोरी
ताली दै दै हँसै ठठावै । व्यंग वचन बौछार करावै ॥

यहि विधिसे यह खेलि करि, पिय प्यारी दोउ संग ।
सिंहासन आसीन ह्वै, मगन भये रस रंग ॥

॥ इति केलि चौक अन्तर्गत योगिनी लीला ॥

प्रहेलिका बुझौअल

❀ दोहा ❀

रचि रचि रुचिर प्रहेलिका, अंगन को दरसाय ।
हँसि२ करत विनोद दोउ, सखियन सुख झलकाय॥

❀ छंद ❀

सुनिये राजनन्दिनी प्यारी, देखति हौ नहिं प्यारी ।
*धन पै रवि२ में कवि, सुकयुत ससि तहँ करत विहार॥
तामें हैं जुग कुण्ड मनोहर, सुधा मुधा कर स्वाद ।
खेचर बनचर जलचर सुखजुत, नित बस रहित विवाद॥

❀ दोहा ❀

तेहि उत्तर दै लाल को, पुनि पूछौ सियवाल ।
+सूर सुवन ऊपर लखौ, मित्र उदै यहि काल॥
कहि कहि बहुत प्रहेलिका, सखियन सह सियलाल ।
कामसाल को चलत भय, जहँ रचना रसख्याल ॥

---

* यहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार में केवल उपमानों के द्वारा उपमेय के लक्ष्य कराये गये हैं। धन से श्रीप्रिया कंचुकी समझना चाहिये। शशि से श्रीप्रियतम मुख लक्षित किया जो सुक (नासिका, तथा कवि नाश।मणि) से सम्पन्न रवि (प्रियापदिक) में प्रतिविम्बित है। दोनों कुण्ड नेत्र गह्वर हैं, जिनमें खेचर (खंजन, बनचर (मृग) तथा जलचर (मीन) नयन के उपमान बनकर, पारस्परिक कलह (गैर भाव) त्याग कर एकत्र रहते हैं।

+सूरसुवन (=सूर्यपुत्र शनिश्चर) से श्रीप्रिया जू की नीलकं उ।त्रक्षित है तया कंचुकी पर रदिक ही मित्र [सूर्य] रूपमें उदित है। चुकी ही

[] अथ कामशाल सुरति विहार []

*** चौपाई ***

आये कामशाल पियप्यारी। जहँ रचना अद्भुत् विस्तारी॥
चहुँ दिसि कुञ्ज बने अति सुन्दर।
कोक कला चित्रित तिहि अन्दर॥
दालानों में सयन सजाये। मयन अयन जेहि जोहि लजाये
ताके मध्य लगी फुलवारी। रंग रंग फूलन युत न्यारी॥
मध्य मनोहर बंगला नीको। कै दरबार मार प्रिय जीको॥
ऊपर तने वितान बिराजे। तामें मोती झालर छाजे॥
हंडी झार बहुत विधि सोहैं। लाल सेत पित हरित सजोहैं॥

पट पिधान जरतारी के हैं। बेली बूटे बहुत बने हैं॥
मध्य रेशमी जाजिम सोहै। तामें रचना बहु मन मोहै॥
ता ऊपर पर्यंक बिछो हैं। पाटी पावा हीरा को हैं॥
तेहि के ऊपर गद्दे राजे। देखत छीर फेन दुति लाजे॥
तकया अरु गलतकया सोहै। पियप्यारी के सुखद रसो हैं॥

चहुँदिसि खंभावलि झलकाहीं। दम्पतिकी पुतली तिनमाहीं
पुतली से पलका लौं लाये। भुइं भीतर होइ सूत्र लगाये॥
पिय प्यारी बैठे पलका पर। मानो रतिपति राजैं छविधर॥

सखिसब द्वार झरोखेलागी। निरखहिं यहसुख अतिअनुरागी
आपसमें कहि कहि बतराई। लखु सखि कस पियरस बरषाई

* चौपाई *

प्यारी को अस मनमें आही। यहसुख सब सखियनको चाही
सब को छोड़ि अकेले खावे। सो तो जगमें सुजस न पावे ॥
अस बिचारि सियबोलीं बैना। सुनहु प्रानपति मम सुखऐना
यह सुख सब सखियनको दीजै। मोर मनोरथ सुफल करीजै
पियबोले सुनु प्रान पियारी। कस न होहु यह छितिपकुमारी
राउरि आज्ञा सिर पर मेरी। बिनु आज्ञा न करौं भटभेरी ॥
असकहि प्रीतम सब गृहमाहीं। जाइ २ रति सुख बरताहीं ॥

मोद सिया परदे के बाहर । निरखत दंपति केलि कलाकर ॥
बहुत पिया फुसलायो उनको । मोद न भे पिय रसबस तनको
मैं तो अनन्या हौं सिय जू को । और न जानौं मैं काहू को ॥
सिय बोली सुनु प्यारी बहिनी । करुपिय संग रंगरस बहिनी
दीदी हम आहाँ कै रसमें । छकल रहै छी निसा दिवस में ॥
आहाँ के सुखरस के आगे । निज सुख रस अति फीको लागे

* दोहा *

यहि बिधि दंपति सेजपर, करि नाना रसकेलि ।
परदा दयो उठाय तब, आई अलियन हेलि ॥
सिंहासन बैठाय कै, भोजन विविध कराइ ।
स्रगसुगन्ध दै वीटिका, करि आरति बलिजाइ॥
रास चौक गवनत भये, पिय प्यारी अलि संग ।
कौतुक मोद विनोदमय, करत विविध रस रंग॥

* इति कामशाल सुरति विहार वर्णन *

-: अथ रास चौक :-

❀ रूपक वर्णन ❀

❀ वार्ता ❀

चारो तरफ चन्द्रमणि के अनेकों कुंज बने हैं। दीवालों में नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। दालानों में तरह-तरह के चंदोवे तने हैं। फरश पर रंग-रंग की जाजिमें बिछी हैं। उसके ऊपर कहीं पर्यङ्क, कहीं बेंच, कहीं सिंहासन आदि सजे हैं। दरवाजों में रंग-रंग के परदे पड़े हैं।

तिन कुंजों के मध्य में चारो तरफ स्फटिक मणि की खंभावली बनी है। उनमें अनेकों रंगों के चित्राम बने हैं। खंभावली के बीच-बीच में रंग-रंग के जड़ाऊ परदे पड़े हैं। परदे के चारो तरफ किंकिणी लगी है। ऊपर मेहराव बने हैं, तोरन वन्दनवार बन्धे हैं। मोतियों की झालरें लगी हैं।

उसके मध्य में चारो तरफ पारिजात, मन्दार, चन्दन, कंकोल, कदम्ब, रसालादि की वृक्षावली सजावट के साथ लगी है। उन पर जाति-जाति की लताएँ फैली हैं। मोर, चकोर, सारस, हंस, शुकादि पक्षी जहाँ-तहाँ यूथ के यूथ विचर रहे हैं। कोकिला, पपीहादि सुरीले शब्द उच्चारण कर रहे हैं।

पक्षियों के जोड़े मिलकर आपस में कल्लोल कर रहे हैं। चारों तरफ फूलों की क्यारियाँ बनी हैं।

उसके मध्य में एक बड़ा विशाल चौक है। उसकी गच्ची पर स्फटिक मणि की रचना है। उस चौक के मध्य में एक विशाल सोमवट है। इसके पत्र-पत्र में चन्द्रमा के समान प्रकाश है। इसके नीचे चन्द्रमणि का सिंहासन है। गच्ची के ऊपर चौक भर में श्वेत जाजिम बिछी है। ऊपर में चौक भर की चान्दनी तनी है। प्रान्त में बेलि बूटे आदि नाना रचनाएँ बनी हैं। चारो तरफ मोतियों की झालरें लगी हैं। रेशम के गुच्छे लगे हैं। चान्दनी के चारो ओर चन्द्रमणि की खंभावली लगी है। उनमें अनेकों चित्राम बने हैं। स्वच्छ आकाश में षोडश कलाओं से सम्पन्न चन्द्रमा अपनी किरणों को छिटकाते हुये दशो दिशाओं में अपनी ज्योत्स्ना बिखेर रहा है। चन्द्र-किरणों से स्नात द्रुम लताओं की शिखाएँ चमचमा रही हैं।

❁ रास चौक की प्रारम्भिक परिचर्या ❁

रास चौक के दरवाजे पर सखी समाज संयुक्त श्री प्रिया प्रियतम जू की सवारी आई। अवाई सुनकर श्रीकुंजेश्वरी जी पट पाँवड़े देकर अपने कुंज को लिवा लाईं।

दोनों सरकारों को सिंहासन पर विराजमान कराकर, षोडशोपचार से पूजन किया। तत्पश्चात् सुवर्ण के थालों में सजकर नाना प्रकार के व्यंजन ले आईं। सामने चौकी पर थाल रखकर, एक-एक व्यंजन का स्वाद बखान-बखान कर आह्लाद में निर्भर होकर, बहुत देर तक दोनों को भोजन कराने

का लाड़ लड़ाती रहीं। जलपान कराकर, आचमन कराया। बीड़ा देकर, अतर लगाया। पुनः सखियों को प्रसाद बरता कर स्वयं भी प्रसाद सेवन किया।

पुनः श्री युगल विहारी जू की गद्दों से सुसज्जित दूसरी चौकी पर बिठलाया। चौकी के चारो ओर, रास शृङ्गार के भूषण पोशाकों से भरी पेटियाँ खोल कर सजाईं। तत्पश्चात् श्रीरासबिहारिणीविहारी जू के नखसे शिखा पर्यन्त रासशृङ्गार किया। सखियों ने भी रास शृङ्गार धारण किया।

इस प्रकार रास शृङ्गार से बनठन कर, श्री युगल ललन जू रास चौक के मध्य वाले सिंहासन पर विराजमान हुये। सखियाँ वाद्य यन्त्रों को मिलाने लगीं।

* चौपाई *

कोइ वीना सितार कर कोई। कोइ मुचंग कठतालहुँ कोई।।
सारंगी सुरंग धर कोई। कोइ मुरली मृदंग लिय कोई।।
कोइ झरझर उपंग लिय कोई। कोइ मंजीर तमूर लिय कोई
यहिविधि विविध सुयंत्रसुहाई। सबके सुर सम ताल मिलाई
सकल सुयंत्र एक सुर कीनी। यूथ यूथ सखियन रँगभीनी।।
गावन लगीं सखी समुदाई। स्वर में स्वर सब एक मिलाई
चन्द्रकला जब बीन बजाई। सबके मनसि मनोज जगाई।।
सिंहासन से उठि दोउ प्यारे। रास मंडल के मध्य पधारे।।

मंडलरचि सखियन करजोरी। मध्यलाल दोउकरि रसबोरी
युगललाल मिलि गावन लागे। हाव भाव करि रसमें पागे
जब प्यारी अलाप सुठि लेई। सुर अरु असुर विमोहितहोई
दोऊ कटि पै हाथन धरिके। लेत नृत्य गति थिरकि २ के॥
लटकनि मचकनि मुख मटकावनि।
भृकुटि चलावनि नैन नचावनि॥
चार हाथ पृथ्वी को छोड़ी। ऊपर ही नाचत यह जोड़ी॥
लखा हंस गति लेत मोर की। पारावत गति गिरह मार की
पुनि प्यारे सब के सुख हेतू। दुइ दुइ मध्य भये रस केतू॥
दुइ दुइ मिलि के हाथन जोरी। लागे रास करन रसबोरी॥
मुख चूमे अरु अंग लगावै। रस अंगन पर हाथ फिरावै॥

बेसर काहु अलक उरझाये। पिय निज कर कंजनि सुरझाये
यहि विधि सकल तियन सुख दैके।
प्यारी संग भये पुनि एकै॥

श्रीअशोक वनिका वाले रास, महारास की अनेक महा-वाणियाँ रसिकाचार्यों की उपलब्धहैं। खाशकर श्रीअवध सागर में तो केवल इसी वन के रास का सुविस्तृत वर्णन किया गया है। ग्रन्थ विस्तार भय से उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं किया गया।

* दोहा *

वन अशोक के मध्य में, रास कीन्ह सियलाल ।
जड़ चेतन मोहित भये, काहू के न सम्हाल ॥
शिव ब्रह्मादिक देव सब, आनँद मुरछा खाय ।
जहँ के तहाँ अचेत हैं, कोउ ढिग कोउ न जाय॥
यहि विधि रास सुचौकमें, रासकियो सियकंत ।
पुनि सिंहासन आय कै, बैठे दोउ हुलसन्त ॥
बहु विधि सौरभ से सनी, दूध मलाई ल्याय ।
सखिन पवाई लाड़सों, निरखत छवि न अघाय॥
अंग सुगंध लगाइ कै, बीरी ललित पवाइ ।
करि आरति निवछावरहु, पुनि २ लेत बलाइ॥
तामदान चढ़ि के दोऊ, चलत भये तत्काल ।
सखिन संग आये ललन, जहँ हिंडोलके साल॥

* इति रास चौक बिहार वर्णन *

अथ हिंडोल चौक

॥ हिडोल चौक का स्वरूप वर्णन ॥

चौपाई

नाना रंग मनिनको सचिके । सजे हिंडोल साल अति रचिके
चहुँ दिस महल बने रँगदाई । तामें रचना बिविध सुहाई ॥
तेहि के मध्य चहूँ दिशि काँई । पाँती पाँती बृच्छ लगाई ॥
मलय कदंब अशोक रसाला । तिनकी शाखायें छबिजाला॥
तिन वृत्तनमें लगे हिंडोला । रचित खचित रतनन अनमोला
तिहि हिंडोलकी शोभा जो है । कहत न बनै देखि मनमोहै॥
पच्छी जाति जाति के बोले । कलरव करै लेय मन मोलै ॥
ताल जाति बहु भाँति सुहाई । तामें कंज खिले बहुताई ॥
मनियन यंत्रन बने फुहारे । तिन तें छुटे अनेकन धारे ॥
मध्यचौक इक बंगला भारी । मनहुँ मदन तेहि स्वकर सँवारी
चन्दोवा रंग हरे तनो हैं । तेहि में मोतिन झालर सोहै ॥
झार फनूस हरित रंग सोहै । हंडी चषकैं हरित बनो हैं ॥
खंभावलि सब हरित ढंग की । तिन में पुतली रंग रंग की ॥
सौज साज तिहि बंगले माहीं । हरित रंग के सब झलकाहीं
ताके मध्य बिशाल हिंडोला । निरखत ही चितहोत अडोला
तामें बहु चित्राम रचो हैं । कामशास्त्र अनुरूप सचो हैं ।

* अथ हिंडोर बिहार *

* चौपाई *

हरी हरी पौशाकें अंगे । धारि विराजे लालन संगे ॥
अरस परस रस व्यंग सुनावत। मौज मनोज सुजिय उपजावत
दोउ दिसि सखीं झुलावनलागीं निरखि२ दंपति रसपागीं
बहुतन यंत्र बजावन लागीं बहुतन नृत्य करैं अतिरागीं ॥
प्रीतम प्यारी मन की जानी । सकल तियन सुख देवै ठानी॥
वृक्ष-वृक्ष प्रति लगे हिंडोले । तेहिपर प्रतितिय सँग पियझूलें

कोउ कह मेरी कमर पिराहीं । प्रीतम ताहि दबाइ सिहाहीं ॥
कोउ भरि मोद गोद पिय बैठी । निज सौभाग्य गरबसे ऐंठी
कोउ समुझै अपने मनमाहीं । पिय तो मेरेई बस आहीं ॥
यहि विधि सब निज२मनमाहीं। भाग सुहाग सराहि अघाहीं
सब जानै पिय मम आधीने। और तियन नहि चहत प्रवीने

* दोहा *

यहि विधि झूला चौक में, दंपति झूला झूल ।
आये फाग सु चौकमें, सकल सखिन सुखमूल॥

* इति हिंडोल चौक बिहार वर्णन *

❋ अथ फाग चौक ❋

❋ दोहा ❋

कुंजेश्वरि बहु भाँति से, दम्पति पूजन कीन ।
भोजन विविध कराइ के, फाग सौंज धरिदीन ॥

❋ चौपाई ❋

फागुन चौक बने रस रूपा, रचना इक से एक अनूपा ॥
रतन रचित हौदन के माहीं । केसर नीर भरे गमकाहीं ॥
धूर कपूरन ढेर लगे हैं । मृग मद के बहु चू धरेर हैं ॥
वहुत गुलालके थाक धरे हैं । कुंकम संख्या कौन गने हैं ॥
विविध भाँति के यन्त्र बने हैं। कल फेरत रंग बून्द झरे हैं ॥
एकहि वार हजारन केरे । रंगन भरि नख शिख लौं बोरे ॥
दो दल यूथ भये छन माँही । इक प्यारी इक प्रीतम काहीं ॥
दोउ दिसि यंत्रन बाजन लागे । रंगखेल चित चाव सुजागे
निज निज स्वामी जै जै करि के ।
दोउ दल भिरे परस्पर अरि के ॥
केसर नीर भरी पिचकारी । एक एक के ऊपर डारी ॥
एकहि एकन धरि धरि लेहीं । रंगन से तरवर करि देहीं ॥
मूठी भरि भरि डारि गुलालन । रोरीसे मसले दोउ गालन
काचित् पकरि गोद में लेहीं । रंग कुण्ड में डारि सुदेहीं ॥

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणीविजयेते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

१ ३२०

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀

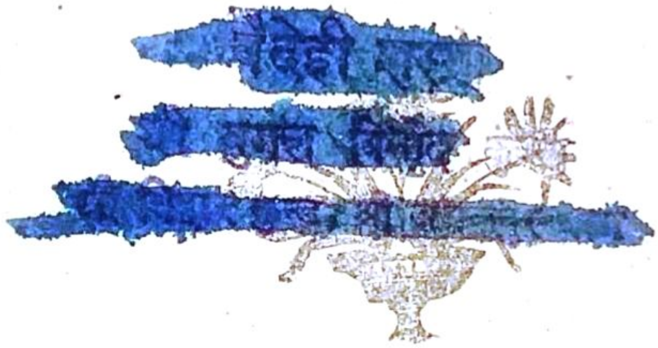

पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

कोऊ रंग यन्त्र सो छोरैं । एकहि वार हजारन बोरैं ॥
दोउ दिशि पिचका छूटनलागे । सावन घन बरसत रसपागे
झपटहिं लपटहिं जुटहिं परस्पर । होय रहे रंगनसे तरवर ॥
भीजि महीन वसन रंगमाहीं । चिपके रस अंगन दरसाहीं॥
प्यारी की दो सखी प्रवीनी । पिय के दल विह्वल करिदीनी
रंग गुलालन बरषा करिके । आँखन में बूका बहु भरिके ॥
यहि विधि दूनौ आगे झपकी । प्यारे दल पीछेतब खसकी॥
निज दल विकल विलोकिपियारे। बोले रसमय बचन प्रचारे
जो हौ असल बाप की बेटी । तौ मम चोट सँभारहुँ जूटी ॥
अच्छे सावधान ह्वै जावो । पाछे मोहि न दोष लगावो ॥
सुनि बोली दोउ चतुरसयानी । तुमको लाल भलीमैं जानी
जौ हौ असल बापके बेटा । तौ जनि कछु तुम लावहु खोटा
लागे लाल चलावन पिचका । एकहि वार हजारन मुखका
अति लाघवता करैं पियारे । मानहु हाथ हजारन धारे ॥
मूठी भरि२ रंग गुलालन । आँखिन तकि२ मारत वालन
छूटि अलक लट मुखपै आवै । चंद मिलन जनु नागिनधावै
कुमकुम लेत उठावत ताड़त । काहू न लखैं खड़ी सब ताकत
सीय सखी दोउ चतुर प्रवीना । परन देइ चख रंग कनी ना
रंग चोट प्यारे की सहती । हरे हरे चलि आगे बढ़ती ॥
प्यारे को लखिमें नहि आयो । ये दोउ जाय पास नियरायो
एक दौरि गर पटुका दीनी । एकदौरि कर पिचका छीनी ॥

बड़े कहाहु वीर के बेटा। आज कहाँ वह गई रजेटा ॥
वसन भीन अंगन दरसाई। पिय बोले तब मुरि मुसुकाई ॥
छाती पै द्वै सिंह जमाई । नारी से को जीते भाई ॥
नारि सों हारि रहत जो कोई। उत्तम रस चाखत पै सोई ॥
बोली सो सुनु राजदुलारे। हौ तुम चतुर खिलारी प्यारे॥
पहिले तौ वीरता बघारौ। तिय वस ह्वै पाछे तुम हारौ ॥
सिय के चरनन सीस नवावो। तब तो मोसे छूटन पावौ ॥
पिय गर बिच पटुका सो डारी। लै आई बैठी जहँ प्यारी ॥
सिय चरनन में माथा दीजै। निज कसूर की माफी लीजै ॥
चले नवावन सिर ढिगप्यारी। प्यारी दौरि मिली अँकवारी
पियप्यारी सिंहासनराजे। युगछवि लखि सखियनमनगाजे

*** दोहा ***

यहि विधि फागुन चौकमें, करि होरी उत्साह।
सखिन सहित दंपति चले, जलक्रीड़ा की चाह॥

*** इति फाग चौक विहार ***

—:—

अथ जल विहार

* चौपाई *

मध्य वाग तड़ाग जो भारी। तिहि तट पै आये पियप्यारी॥
नाना रंगन कमल खिलेहैं। तेहि पर भँवरन गुंज रहे हैं॥
सर शोभा बिलोकि अनुरागे। जहँ तहँ जल में कूदन लागे॥
जल क्रीड़न लागे पियप्यारी। मत्त मतंग यथा अनुहारी॥
सखिन सहित सोहहिनवनागर। वारिमध्य गुनरूप उजागर
पिय कों कर सोंकर धरि कोई। जल अगाध में कूदे सोई॥
लखि जलमें छल वचन उचारी। पियपर कूदिपरी कोई नारी
कोउतटसो कूदत जलमाहीं। कोउ मज्जन जल मध्यकराहीं
कोइ कामिनि भुज जंत्रमभारी। रोकिलई पियल ल विहारी
कोउकर जल छिरकै पियअंगा। सींचहि अपर परस्पर संगा
कोउ कर पद जल ताड़न करहीं।
सिन्धु मथन सम धुनि सुनि परहीं॥
यहिविधि जलक्रीड़ा करि प्यारे सखिनसंग सिय राजदुलारे
जलके मध्य महल जो आहीं। शोभा ताकी बरनि न जाहीं
तोहि महल आये दोउ जोरी संग सखिनके यूथ घनेरी॥
कुंजेश्वरी पोशाकें ल्याईं। नवल शृङ्गार सजी मन भाई॥
नख शिख लौं शृङ्गार सजोरी। सिहासन वैठे दोउ जोरी॥
सखिजन निज शृङ्गार सँवारी। सेवा सौंज लिये सब ठाढी॥

कुंजेश्वरि व्यंजन बहुल्याई। विविध भाँति भोजन करवाई॥
बीरी दै पुनि अतर लगाई। आरति करि पुनि वलि२ जाई॥
आपस में सब विधि बरताई। शेष प्रसाद सखिन सबपाई।
कछु दिन तहाँ रहे दोउ जोरी। छन २ नव आनन्द बढ़ोरी
सखियन कै बहु विधि सुख दैके।
चले महल तिन सौं सुख लै कै॥
शिबिकापर सखियन चहुँओरी। तामदान मधि मनहरजोरी
आये हेम महल के माहीं। जहँ छन २ नव सुख सरसाहीं॥

* इति जल बिहार *

❀ श्री महल में शयन सुख ❀

कनक भवन पर्यंक पर, राजत युगल किशोर।
विविध विनोद विलासमें, पगे रहत निशिभोर॥

छीर सिन्धु के मध्य में, संपा घन दोउ सोय।
तिन दोउन के मध्य में, मोती बरषा होय॥
हंस अवलि चहुँदिसि खड़ी, चूगि २ रस लेत।
सदा किनारे रहत है, और न जानत हेत॥

श्री गुरुदेव प्रसाद से, द्वादश बाग बिहार।
वरन्यो जो कछु हियफुरयो, सज्जन लेव सुधार॥
आश्विन मास सु द्वादशी, शुक्ल पक्ष रविवार।
रसिक गुरुन की कृपा ते, पूरन बाग बिहार॥

इति श्रीमती रसमोदलता जू रचित श्रीद्वादश वाटिका विहार
रसकल्लोल समाप्तम्।

यहाँ तक मूल ग्रन्थ पूरा हुआ। आगे परिशिष्ट भाग में तड़ाग के मध्य वाले उन पाँचों आवरणों का वर्णन होता है, जिसकी चर्चा पूज्यपाद ग्रन्थकर्ता जू ने सातवें कक्ष के प्रारम्भ में की हैं। अगले पाँचों आवरणों वाले ग्रन्थांश के रचयिता रसिराज श्रीविदेहजाशरणजी महाराज हैं।

परिशिष्ट भाग

अथ अष्टम कक्ष

यूथेश्वरी आवरण

दोहा

नव तड़ाग बिच भूमि जो, प्रथमहि कीन्ह बखान ।
ताकी रचना नवल अब, सुनिये रसिक सुजान ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम कोट चहुँ ओर सुहावा । सरके निकट देखि मनभावा
विविध केलि के चित्र बनाये । सिंह पौरि चहुँओर सुहाये ॥
सिय पिय अलिन सहित तहँ आये ।
भीतर जाय अमित सुख पाये ॥
भूमि गुलाबी रंग सुहाई । चित्र विचित्र सँवारि बनाई ॥
षोडश बत्तिस चौसठ कुञ्जा । चहुँदिसि बने भरे सुख पुञ्जा
यूथेश्वरि सब सुखद सुहाई । तहँ नित बसहि नाम सुखदाई
अथ अग्र नाम सुनहु मनलाई । अली भाव रसप्रेम बढ़ाई ॥

॥ अथ षोडश यूथेश्वरियों की नामावलि

१-श्रीरामानन्दाजी, २-श्रीमाधुरीजी, ३-श्रीमंगलाजी, ४-श्रीरतिवर्द्धिनीजी, ५-श्रीरसरूपिणीजी, ६-श्रीरम्याजी, ७-श्रीसुखदाजी, ८-श्रीस्वच्छताजी, ९-श्रीश्यामाजी, १०-श्री-साधुतीजी, ११-श्रीश्रृङ्गाराजी, १२-श्रीचतुराजी, १३-श्रीशोभाजी १४-श्रीहंसिकाजी, १५-श्रीशारदाजी और १६-श्रीशंकरीजी ।

॥ अथ वत्तिस यूथेश्वरी नामावलि ॥

१-श्रीअह्लादिनीजी, २-श्रीज्ञानाजी, ३-श्रीपर्वीजी, ४-श्रीउज्ज्वलाजी, ५-श्रीकांचनीजी, ६-श्रीचित्राजी, ७-श्रीसुधामुखीजी, ८-श्रीहंसीजी. ६-श्रीकमलाजी, १०-श्रीविशदाक्षीजी, ११-श्रीचित्ररेखाजी, १२-श्रीचन्द्राननीजी, १३-श्रीप्रहंसीजी, १४-श्रीसुदर्शिकाजी, १५-श्रीमाधुर्याजी, १६-श्रीशालिनीजी, १७-श्रीशशिभद्राजी, १८-श्रीकपूरांगीजी, १६-श्रीनित्याजी, २०-श्रीहरिप्रियाजी, २१-श्रीमाधवीजी, २२-श्रीसनजीवाजी, २३-श्रीविद्याजी, २४-श्रीवागीशाजी, २५-श्रीरूपवतीजी, २६-श्रीसुविद्याजी, २७-श्रीसत्यवतीजी, २८-श्रीसन्तोषाजी, २६-श्रीचारुस्मिताजी, ३०-श्रीचार्वांगीजी, ३१-श्रीधीराजी और ३२-श्रीधात्रीजी।

॥ अथ चौंसठ यूथेश्वरी नामावली ॥

१-श्रीसहजानन्दिनीजी, २-श्रीचारुरूपाजी, ३-श्रीचारुलोचनाजी, ४-श्रीउत्कर्षिणीजी, ५-श्रीक्रियाजी, ६-श्रीयोगाजी, ७-श्रीईशानाजी, ८-श्रीसत्याजी, ६-श्रीसुशीलाजी, १०-श्रीअतिशीलाजी, ११-श्रीहेमांगीजी, १२-श्रीसुखदाजी, १३-श्रीसुभद्राजी १४-श्रीक्षेमदाजी, १५-श्रीधराजी, १६-श्रीशोभनाजी, १७-श्री-शांताजी, १८-श्रीकान्तिमतीजी, १६-श्रीकेलिकोविदाजी, २०-श्रीकिशोरिकाजी, २१-श्रीकांचीजी, २२-श्रीकोशलाजी, २३-श्रीकालीजी, २४-श्रीकंजाक्षीजी, २५-श्रीकलावतीजी, २६-श्रीकंज-

लोचनाजी, २७-श्रीकुंजाजी, २८-श्रीकलिकाजी, २९-श्रीकोकिलाजी, ३०-श्रीकाशिकाजी, ३१-श्रीकृपालाजी, ३२-श्रीकृष्णाजी, ३३-श्रीसारिकाजी, ३४-श्रीकामदाजी, ३५-श्रीकृपावतीजी, ३६-श्रीसुखरूपाजी, ३७-श्रीचन्द्राजी, ३८-श्रीचंपकवरणीजी, ३९-श्रीचन्द्रिकाजी, ४०-श्रीचारुदर्शनाजी, ४१-श्रीचारुदंसीजी, ४२-श्रीचकोरिकाजी, ४३-श्रीचंपकमालाजी, ४४-श्रीदेववर्णिनीजी, ४५-श्रीदेविकाजी, ४६-श्रीदेवरूपिणीजी, ४७-श्रीदुर्गाजी, ४८-श्रीदामिनीजी, ४९-श्रीदैवज्ञाजी, ५०-श्रीगुणसागराजी, ५१-श्रीज्ञप्तिगुणज्ञाजी, ५२-श्रीनन्दाजी, ५३-श्रीनवलाजी, ५४-श्रीपरमाजी, ५५-श्रीपावनीजी, ५६-श्रीप्रेमप्रदाजी, ५७-श्रीप्रियंवदाजी, ५८-श्रीप्रज्ञाजी, ५९-श्रीमनोरमाजी, ६०-श्रीमोददायिकाजी, ६१-श्रीमानकोविदाजी, ६२-श्रीरहस्यज्ञाजी, ६३-श्रीसीमन्तिनीजी, और ६४-श्रीशान्तिरूपिणीजी।

*** दोहा ***

यहि अष्टम आवरण में, कीन्हेउ विविध विलास।
कुञ्ज कुञ्ज प्रति जायकै, सबकी पूरे आस॥

*** चौपाई ***

यहि विधि देखि चले पुनि आगे।
अलिन सहित दंपति रस पागे॥

॥ इति अष्टम कक्ष विहार वर्णन ॥

अथ नवम कक्ष

द्वादश उपवन आवरण

दोहा

अब नौवाँ अबारण लखु, भूमि बैंगनी रंग।
चहुँदिशिकोट विचित्रअति, निरखिहोत मन दंग॥
द्वादश उपवन तासु मधि, सुमन नाम तेहिनाम।
सुनिये चित्त लगाय कै, हृदय होय बिश्राम॥

अथ द्वादश उपबनों के नाम

चौपाई

कमल१ गुलाब२ मालती३ वेली४।
चम्पा५ केतकि६ जुही७ चमेली८॥
सेबति९ केवड़ा१० नवल नेवारी११।
तुलसी१२ नवल नाम शुचि धारी॥
और अनेक सुमन की जाती।
ताके मध्य सोह सब भाँती॥
द्वादश सर तेहि वन बिच सोहै।
तिनके नाम सुनहु अब जो है॥

*अमृत[१] जल[२] मधु[३] दूध[४] दहीके[५] ।
चन्दन[६] अतर[७] तेल[८] रस[९] हीके ॥
औषधि[१०] केसर[११] रंग गुलाबी[१२] ।
क्रम ही ते सर नाम जनावी ॥
नौका बहु सर मनि सोपाना ।
देखत बने न जात बखाना ॥
द्वादश गिरि तिहि सर बिच सोभित ।
मनि कहि तेहि के नाम निरूपित ॥

---

* उपर्युक्त वर्णन को इस प्रकार समझिये:—

१—कमल बन के मध्य में अमृत सरोवर हैं।

२—गुलाव बन में जल सरोवर है।

३—मालती वन के मध्य में मधु सरोवर हैं।

४—वेली वन में दूध सरोवर है।

५—चम्पा वन में दही सरोवर है।

६—केतकी वन में चन्दन सरोवर हैं।

७—जूही वन में अतर सर है।

८—चमेली बन में तैल तड़ाग है।

९—सेवती वन में रस सरोसर हैं।

१०—केबड़ा बन में सर्वौषधि सरोवर है।

११—नेवारी बन में केशर नीर परिपूर्ण कुण्ड है।

१२—तुलसी वन में गुलावो रंग जल पूर्ण सरोवर है।

+ मानिक[१] मरकत[२] कुलिश[३] पीत[४] मनि।
पदुम[५] राग फाटिक[६] विद्रुम[७] गनि॥
रविमनि[८] चन्द्र[९] हरित[१०] मनि चिंता[११]।
कौस्तुभ[१२] नवल नाम तेहि गिनता॥
तेहि पर्वत पर बंगले द्वादश। कहि नहि जात बनाव सजे जस
सिय पिय अलिन सहित तहँ जावैं।
विविध विलास करहिं सुख पावैं॥
यहिविधि देखि चले पुनि आगे। दशवें खंड जाय रसपागे॥

❀ दोहा ❀

यह परतर अलि ध्यान वर, सब ध्यानन करि ईश।
नारी बनि मुनि ध्यावहीं, लक्ष्मीपति गौरीश॥
श्रीसतगुरु अलि दीन्ह मोहि, यह नव ध्यान अनूप।
जेहि ध्यावत नित होत दृढ़, अली भाव रस रूप॥

॥ इति नवम कक्ष विहार वर्णन॥

+ अर्थात् कमल वन के अमृत सरोवर के मध्य में माणिक्य पर्वत है। उस पर्वत शिखर पर बंगला बना है। इसी क्रम से प्रत्येक सरोवर में पर्वत का ध्यान कीजिये।

रविमनि = सूर्यकान्तमणि। चन्द्रमणि = चन्द्रकान्तमणि पुनः चिन्तामणि। फाटिक = स्फटिक मणि।

❀ अथ दशवाँ कक्ष ❀

॥ द्वादश सेवा कुञ्ज आवरण ॥

❀ दोहा ❀

पुनि दशवें आवरण में, द्वादश सेवा कुंज ।
अष्टयाम नव कुंज में, रस बरषत सुख पुंज ॥

❀ चौपाई ❀

भूमि चहूँदिशि रँग नारंगी । सतचित आनँद नित्यअभंगी
चहुँदिशि कोट मनोहररचना । सिंहपौरि छवि आवन वचना
दुहरे कुंज नवल दरवाजे । कुञ्ज कुञ्ज प्रति अष्ट विराजे ॥
नव्वे अरु छैद्वार सुगनिये । चहुँदिशि देखि हिये विचअनिये
तिन के नाम सुनहुँ सुखदाई । रसिक सुजान कहहिं सब गाई
मंगल[१] कुंज मज्जना[२] गारा । नवल कलेऊ[३] कुंज सिंगारा[४] ॥
चौपर[५] कुंज सभा[६] सुख खानी । भोजन[७] कुंज शयन[८] रसदानी ॥
फाग[९] कुंज हिंडोला[१०] सुन्दर । केली[११] नाम सुरस[१२] कुंज बर ॥❀

❀ दोहा ❀

यहि दशवें आवरण में, करि निवास ललि लाल ।
पुनि ग्यारहें आवरण को, चले संग लै बाल ॥

॥ इति दशवाँ कक्ष विहार वर्णन ॥

❀आपके द्वादश सेवा कुंजों में से, यहाँ एक ब्यारू कुंज कम है और उस के बदले चौपर कुंज बढ़ा हुआ है ।

अथ ग्यारहवाँ कक्ष

॥ षोडश महायूथेश्वरी आवरण ॥

* दोहा *

ग्यारहवां आवरण लखु, हरित रंग अँतराल ।
चहुँदिशि कोट विराजहीं, रचना ललित विशाल

* चौपाई *

षोडश कुंज बने चहुँ ओरी । चारि २ दिग दिग प्रतिजोरी
षोडश सखी महायुथेसरी । तिहिमधि वसहिं नाम सुनुसोरी

॥ वार्ता ॥

इस ग्यारहवें आवरण में चहुँ दिशि षोडश कुंज हैं । प्रत्येक दिशा में प्रति चार चार कुंज हैं । उनमें षोडश महा-यूथेश्वारियाँ निवास करती हैं । उनके नाम सुनिये ।

प्रथम पूर्व दिशा में श्री स्वामिनी श्रीचम्पकलता जू का कुंज है । यह हमारी (श्री विदेहजाशरण जी महाराज की) रक्षाचार्या जू हैं । उनसे दक्षिण:—१-श्रीस्वामिनी श्रीचन्द्रकला जू, २-श्रीविमला जू, ३-श्रीमदनकला जू, ४-श्रीविश्व-मोहिनी जू, ५-श्रीउर्मिला जू, ६-श्रीरूपलना जू, ७-श्री-चन्द्रावती जू और ८-श्री श्रीप्रसादा जू के निवास कुंज हैं ।

ये श्रीराजकिशोरी जू की* अष्ट यूथेश्वरी हैं। चार पूरब और चार दक्षिण दिशा में निवास करती हैं।

श्रीराजेन्द्रकुमार जू की अष्ट महायूथेश्वरी:—

१-श्रीचारुशीलाजी, २-श्रीहेमाजी, ३-श्रीक्षेमाजी, ४-श्री-बरारोहाजी, ५-श्रीपद्मगंधाजी, ६-श्रीसुलोचनाजी, ७-श्रीलक्ष्मणाजी, और ८-श्रीसुभगाजी। ये क्रमशः चार पच्छिम, चार उत्तर की ओर निवास करती हैं।

॥ इति षोडश महायूथेश्वरी नामावलि ॥

❀ चौपाई ❀

अलिन सहित विहरत पियप्यारी। कुञ्ज२ प्रति आनँद भारी
चंपकलता कुञ्ज इक नामा। सकल कामदायक सुखधामा॥
अलिनसहित सियपिय तहँआये। चंपकलता देखि सुखपाये
षोड़श भाँति पूजि सनमानी। कुंज मध्य बैठाई आनी॥
विविध भाँति भोजन करवाई। जल पियाइ मुखहाथ धोवाई

❀ दोहा ❀

कोमलपट मुख पोंछिकर, फेरति सहित विलास।
अतर पान दै मालवर, निरखति सहित हुलास॥
चन्द्रकला के कुंज पुनि, शयन कीन्ह लाललाल।
प्रेमलता गुरु कुंज होउ, सेवा सकल सँभाल॥
यहि प्रकार सब कुंज में, करि विहार ललिलाल।
पुनि द्वादश आवरण को, चले संग लै बाल॥

॥ इति ग्यारहवाँ कक्ष विहार वर्णन॥

---

*याद रहे कि यह श्रीअशोक वन की अष्ट महायूथेश्वरियाँ हैं। श्री कनक भवन की अष्ट महायूथेश्वरियाँ भिन्न हैं। सर्वेश्वरी श्रीमती चन्द्रकलाजी दोनों स्थल पर सर्व प्रधान हैं।

❋ अथ बारहवाँ कक्ष ❋

❋ शयन कुञ्ज और रासचत्वर ❋

पुनि द्वादश आवरण में, भूमि लसत नव रंग ।
चहुँदिसि कोट विराजहीं, चित्र विचित्र अभंग ॥
द्वार चारि चहुँ ओरसुहावन । अजिर विशाल मध्यमनभावन
द्वादश कोट यहाँ लगि गाये । नव खंडे चहुँ ओर सुहाये ॥
चालिस आठ मुख्यदरवाजा । चहुँदिसि बने सुभग सबसाजा
और अनन्त द्वार चहुँ ओरा । रचना ललित बरनि कह कोरी
कोटिन सखी खड़ा प्रति द्वारी । कनक छड़ीकर बेंत सुधारी ॥
यहि प्रकार चहुँओर निहारी मध्य अजिर लखिये छविभारी
सुमन वाटिका ललितसुहाई । अजिर मध्य चहुँदिसि मनभाई
वापी कुण्ड सरोवर कूपा । वेदी वंगले रौस अनूपा ॥
निर्मल नीर सुधा छवि हारी । मनि सोपान घाट वर चारी ॥
कोइ कमल खिले बहु रंगा । जल खग कूजत गुंजत भृङ्गा ॥
सड़क बनी चहुँदिसि छविभारी । दुहुँदिसि बृक्षलगे युगधारी
त्रय संपति युत परसत धरनी । मनिमय आलवाल कलकरनी
ऋतु बसंत नित रहत लुभाई । त्रिविध समीर सदा सुखदाई ॥
भूमि चहूँदिसि सुमन बिछाये । बहु रँग अतर गुलाब सिचाये
विविध रंग की चिड़िया बोलहिं । हंस कुरंग संग बहुडोलहिं
बिविध भाँति के छुटत फुहारे । इकसत दुइसत धार हजारे ॥
अजिर विसाल महाछबिछाई । कहँ लगि कहौं बरनि नहि जाई

कृपा अली गुरुदेव की, होय तो हिय दरसाय।
आन भाँति नहिं सूझई, कीजै कोटि उपाय ॥
कृपा होत अलि भाव सों, भाव रसिक गुरुहाथ।
ताते कुतरक छोड़ि सब, खोजि करिय नितमाथ॥
यहि विधि देखि अजिरअँगनाई। रचना अपर सुनहुँ मनलाई
अजिर मध्य इक बेदी भारी। कछुक ऊँच सब भाँति सँवारी
ता पर कुंज विशाल सुहावा। चतुरावृति चहुँ ओर बनावा॥
षोड़श सहस नवल दरवाजे। अष्ट दलान चहूँदिसि राजे ॥
चौंसठ सहस खंभ चहुँ ओरी। अष्ट पहल युग २ की जोरी॥
यह संख्या प्रति खंडहि जानो। द्वादस खंड उच्च नभ मानो
चित्र विचित्र चांदनी तानो। मुक्ता वन्दनवार सोहानो॥
केलि चित्र तसबीर सुहाई। कुंज मध्य चहुँदिसि छविछाई॥
गोख झरोख ताख अलमारी। भीति चित्र बहुभाँति सवारी
मनि खूंटो भीतर चहुँओरी। फूलमाल मनिमाल करोरी॥
परदापरे ललित चहुँओरहिं। किंकिनि बाजहिं जबअलिछोरहिं
कोमल फरस बिछाई नीचे। अतर गुलावन से सब सींचे ॥
क्रीड़ा के बहु सौज सजाई। छत्र चँवर व्यजनादि धरई ॥
अमित सिंहासन चौकी कुरसी। कुञ्ज निकुञ्ज धरे छवि दरसी
खंड २ प्रति कुंज सुहाये। कुञ्ज कुञ्ज प्रति पलँग बिछाये ॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति तार लगाई। छन छन में सब खबर जनाई॥
कोठे पर को चढ़न हित, बहु निसेनि छवि छाय।
पग धरते छन मात्र में, बिनु श्रम देत चढ़ाय ॥

कनक कपाट बज्रमनि कीलैं। चौखट बाजू लाल हरीलैं ॥
कुंडी झाड़ बहुत रंग झूलहिं। सीसा डाल लट्टू बहु हीलहिं॥
मेहरावैं चहुँ ओर सुहाहीं। कहँ लगि कहौं बरनि नहिं जाहीं

यहि विधि निचले खंडको, वरनेउँ मति अनुसार।
पुनि ऊपर बहु खंड की, रचना ललित अपार ॥

ध्वज पताक ऊपर फहराई। कलस कंगूरे अति छवि छाई ॥
द्वादस खंड भिन्न रंग केरे। अति आनन्द होत जेहि हेरे ॥
छत ऊपर की रचना भारी। अति सुन्दर चहुँ ओर सँवारी ॥
सुमन वाटिका ललित लगाई। वरनि न जाय महाछवि छाई
मनि सर कुण्ड बने अतिसुन्दर। कल से जाय भरै जल ऊपर
तेहि जलके बहु छुटै फुहारे। गिरहिं उपरते बहु जल धारे ॥
अमित नली लागी चहुँओरी। तेहिमग होइ जलधार बहोरी
महल सैल जनु झरना झरई। नीचे गिरि बहु कुंडन भरई॥
विटप अशोक एक तेहि ऊपर। छत्राकार विशाल मनोहर ॥
कनकमयी स्कन्ध सुहाये। किसलय हरित मनिन छवि छाये
पद्मराग मनि फूल मनोहर। मरकत मनिके फल अति सुन्दर
तेहितर एकसिंहासन मनिको। सहस कमल दल चतुर खंडको
भानुअग्नि ससि मुद्रातीनी। ज्योतिजगामग चहुँदिसिझीनी
मध्य कर्निका सुन्दर सोहै। वरनि न जाय देखि मन मोहै ॥
फरस सुकोमल जगमगज्योति। चहुँदिसिबिछे लगेमनिमोती
स्याम पीतरंग तकिया सुन्दर। चहुँदिसि धरी नवल तेहिऊपर
नीचे फरस विचित्र बिछाई। चहुँदिसि कुरसी सजी सुहाई ॥

ऊपर ललित चांदनी तानी। मुक्ता वन्दतवार सोहानी ॥
खंभ हजारन चहुँदिसि मनिके। मेहरावैं भावैं अति जीके ॥
कुंडी झाड़ डोल बहु सीमा। अमित प्रकार सजे चहुंदीसा॥
मनिमय दीप कलस बहु राजे रंभा ध्वज पताक बहुसाजे॥
चहुँदिसि सुमन वाटिका सोहै वरनि न जाय देखि मनमोहै

यहिविधि चहुँदिसि देखछबि, चढ़ि विमान ललिलाल।
छत के ऊपर आय दोउ, उतरे सँग लै बाल ॥

द्वादस नवल खंड के ऊपर। अलिन सहित राजैं दोउ सुन्दर
उच्च सिंहासन बैठे सोहैं। चहुँदिसि वन असोक छवि जोहैं
द्वादस कोट बने चहुँओरे ध्वज पताक बहु कलस कंगूरे ॥
खंड २ प्रति पुल चहुँकोने। वरनि न जाइ नवल छबि लोने
यहिविधि चहुँदिसिकी छबिगाई। युगलसिंगार सुनहुमनलाई
दंपति कनक सिंहासन राजैं कोटिन रति मन्मथ लखिलाजैं
*स्याम गौर छवि बरनि न जाई। मति अनुसार कहौं कछुगाई
... ...
... ...

लली लाल तन स्यामल गोरे। मनहुँ प्रीति सिंगार इक ठौरे॥
किधौंजलद सँगदामिनि दरसै। अकि अहलाद सक्तिपियपरसै
द्विभुजकिसोर नवल नितप्रीतम। वय त्रयोदस सोय अनूपम॥

---

*इस पंक्ति के बाद पूज्य कवि ने बड़ा विस्तार के साथ श्रीयुगलकिशोर जू की नख शिख झाँकी बड़े ही मनोहर ढंग से लिखी है। खेद है ग्रन्थ विस्तार भय से हम यहाँ वह संदर्भ समाविष्ट नहीं कर पाये।

जेहिविधि सियसिंगारसँवारी। तेहिविधिअलिगननिजतनुधारी
चन्द्रकला विमला सुखसाली। चारुसिला सुभगादिक आली
सेवा साजि खड़ी चहुँओरी। मुग्धा मध्या प्रौढ़ किशोरी॥
कोइ स्यामल कोइ गौर सहेली। दम्पति रूप रंगी अलबेली
भूषन बसन सजे नव अंगा। नील पीत अरुनादिक रंगा॥
अंग सुगंध चलहि बहुभाँती। दम्पति रुख जोहै रसमाती॥
जुगल सखी सिर छत्र फिरावै। जुग२ दुहुँदिसि चँवर चलावै
व्यजन लिये जुग२ रंग भीनी। बहुसखि पानदान करलीनी
अतरदान बहु सखि कर धारी। पीकदान बहु लीन्हें झारी॥
फल मेवा पकवान मिठाई। बहु सखि लीन्हें थार सजाई॥
बहुसखि दरपन निजकर धारी। छड़ी बेंत बहुलिये सँवारी॥
बहु सखि फूल मालकर धारी। पंछी बहुत लिये मनहारी॥
कमल गेंद बहु लिये सिया के। धनुष बान बहुलिये पियाके
भूषन बसन लिये बहु सोहैं। सावधान दम्पति रुख जोहैं॥
बहु सखि बाजन विविध बजावैं। गान तान बहुभाँति सुनावैं
बहुसखि नाचति भावदिखाई। कहँलगि कहौं बरनिनहिंजाई
मध्यसिंहासन सियपिय राजैं। यहिविधि साज सजे सुखसाजैं
अपर अली सोहैं चहुँओरी। मंडलकार अनन्त करोरी॥
द्वादसखंड महलके ऊपर। यहिविधि राजत सियपिय सुन्दर
बनअसोक छवि चहुँदिसिजोहैं। दंपतिअलिन सहिततहँसोहैं
यहिविधि जुगलध्यान जे धरहीं। भवसागर गोपद इव तरहीं
यहि सुख लागि संत जे रहहीं। संतत परानन्द ते लहहीं॥

मुक्तिआदि फल चितवहिनाहीं। यहिसुख मगनरहैंजगमाहीं
जोग जग्य जप दान रतेजे। यहि पथ नहिं हरि विमुख भयेते
निगम अगम जे धर्म सहायक। यहि रस करते पुष्ट सुभायक

❀ सोरठा ❀

सब तत्वन कर सार, सीताराम सु नाम वर।
रूप सुचरित उदार, सतचित आनँद नवल नित॥

धाम सुरस आगार, श्रुति पुरान विख्यात जग।
माया मन गुन पार, कृपासिन्धु जन भाव बस॥

वन असोक सु विलास, ध्यान नवल वर नाम यह।
द्वादस सुभग विलास, बरनि कहेउँ यहि ग्रन्थ मँह॥

कहहिं सुनहिं मन लाय, वन विलास नव चरित यह।
बसहिं हृदय तेहि आय, परिकर युत ललिलाल नित॥

राखव सदा छिपाय, बन विलास ललि लाल कर।
गोप गोपतम भाय, बिनु अधिकार न भाषिये॥

संवत खंड सुद्वीप, अङ्क ब्रह्म लिखि लेहु गुनि।
चैत सुदी ऋतु धीप, नौमी तिथि गुरुवार सुभ॥

भये ग्रन्थ यह पूर, प्राननाथ के जन्म दिन।
सद्गुरु सदन के ऊर, अवधपुरी श्रीसरजु तट॥

नाम रूप गुन ध्याय, 'प्रेमलता' सुखधाम बसि।
सद्गुरु कृपा सुपाय, शरनविदेहजा मगन नित॥

॥ इति श्रीअशोक वाटिका विलास सम्पूर्णम्॥

श्रीरसमोद साहित्य के प्रकाशित ग्रन्थ :-

१--श्रीरसमोद लताष्टक मूल ।
२--श्रीरसमोद लताष्टक सटीक ।
३--श्रीरसमोद लीलामृत ।
४--श्रीमालिनी लीला ।
५--श्रीमहारास लीला ।
६--श्रीमान लीला ।
७--तत्सुख सुखित्व प्रकाशिनी लीला ।
८--श्रीरसमोद माधुरी ।
९--श्रीरसमोद चरितामृत ।
१०--द्वादश वाटिका बिहार ।

वैदेही शरण
श्री युगल वि... कुञ्ज
श्री विहार कुञ्ज श्री जनकपुर धाम

वैदेही शरण
श्री युगल वि... कुञ्ज
श्री विहार कुञ्ज श्री जनकपुर धाम

प्राप्ति स्थान—

श्री नृपनन्दन शरणजी

श्रीहनुमत निवास, श्री कोठे पर, श्रीअयोध्याजी ।

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।